वर्ष 30, अंक : 3 15.6.2007 शुक्रवार (मई - जून) प्रति अंक : 10.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निदिध्यासन अंक

गुणातीतसमाज के आद्यसर्जक

'यज्ञ' प्रारंभ से पूर्व गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति की पूजनविधि...

२४ मार्च '०७, प्रात:

गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा उत्सव के संग परम पूज्य गुरुजी के ७०वें प्राकट्योत्सव का रंग !

आइए, सर्वप्रथम तो इस दिव्य **ऐतिहासिक उत्सव की पूर्वभूमिका** * का एक-एक शब्द आत्मसात् करें...

पिछले वर्ष **२८ मई को प.पू. पप्पाजी स्वधाम पधारे** और... उनकी अंतिमविधि करके दिल्ली लौटते हुए प्लेन में प.पू. गुरुजी ने दिल्ली मंदिर में प.पू. काकाजी की मूर्ति के बराबर में ही वैसी और उतने ही कद की प.पू. पप्पाजी की लाईफ साइज़ मूर्ति पधराने वर्षों से संजो कर रखी अपने मन की बात पू. मल्कानी अंकल को करी – जिसका उन्होंने समर्थन किया और दूसरे दिन तो दिल्ली और उत्तर भारत के मुक्तों के पास जब प.पू. गुरुजी ने यह बात रखी तो सभी ने इस कदर स्वीकार ली कि प.पू. गुरुजी की आँखें हर्षाश्रु से छलक उठीं! और... दूसरे ही सप्ताह से तो मूर्ति के लिए प.पू. गुरुजी का जयपुर जाने-आने का सिलसिला शुरु हो गया। साथ ही इस वर्ष के मार्च में आने वाले **प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन पर** उस मूर्ति की **प्राणप्रतिष्ठा** करने की आहट आने लगी और सत्संग समाज में भी यह बात फैलने लगी। और...

१९९४ में दिल्ली के हमारे मंदिर में हुई मूर्तिप्रतिष्ठा के समय उत्तर भारत के मुक्तों के चेहरे पर जो अनूठा आनंद था, ठीक वैसा ही उत्साह-उमंग-दिव्य आनंद अभी २५ मार्च २००७ को हुई प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा के समय हर एक मुक्त के मुख पर सहज ही झलक उठा। प.पू. पप्पाजी को स्थूल देह त्यागे हुए अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ और प.पू. गुरुजी ने गुरुभक्ति अदा करने उनकी मूर्ति स्थापित करके सभी गुणातीत स्वरूपों व मुक्तों के अंतर की मूर्ति लूट ली... हम सब दिल्ली वालों के सम्मुख तो मानो साक्षात् प.पू. पप्पाजी ही स्वयं पधार कर विराजमान हो गए! सभी को यही एहसास हुआ कि **यह प.पू. गुरुजी का ७०वाँ प्राकट्योत्सव नहीं, बल्कि गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का उत्सव था।**

फरवरी १९९७ में जब प.पू. गुरुजी की **'हीरक जयंती'** का उत्सव किया, तब भी देश-विदेश से जितने भी मुक्त आए थे, उन सभी ने महसूस किया था कि प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती से अधिक, **प.पू. काकाजी का कोई उत्सव हो, ऐसा माहौल है** और... **प.भ. घनश्यामभाई अमीन** तो तब बोल भी उठे थे – ***ये गुरुजी की हीरक जयंती का उत्सव है या काकाजी का!***

करीब दो महीने पहले से प.पू. गुरुजी हर एक मुक्त को फोन पर कहते सुनाई पड़ते कि– ***मेरा जन्मदिन तो हर साल फिर भी आएगा, लेकिन प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का मौका अब की गंवाना नहीं। अपने बाप की मूर्तिप्रतिष्ठा में आप नहीं आएंगे तो और किन्हें बुलाऊँ?*** यूं प.पू. गुरुजी के अंतर की मानो एक ख़्वाईश थी कि सभी गुणातीत स्वरूप और पूरे गुणातीत समाज के संत, बहनें, गृहस्थ समाज इस मूर्तिप्रतिष्ठा पर जरुर पधारे...

ये बातें सुन कर एक मुक्त ने तो पूछा भी कि- *दिल्ली-मंदिर में प.पू. पप्पाजी की मूर्ति स्थापित करने वाले हैं क्या? वह मंदिर तो प.पू. काकाजी का नहीं? क्या अपने यहाँ ऐसा नहीं कि जहाँ जो अधिष्ठाता है, उसी की मूर्ति वहाँ होती है?*

प.पू. पप्पाजी और सभी प्रगट स्वरूपों के प्रति की

---

* *इस **पूर्वभूमिका** के **'गुजराती' अनुवाद** के लिए **पृष्ठ २१ से २४ तक** पढ़िए।*

प.पू. गुरुजी की भावना-लगाव-संबंध और महिमा को जानने के बावजूद ऐसे प्रश्न से निजी सेवकों और मुक्तों ने प.पू. गुरुजी को पूछा कि पप्पाजी की मूर्ति पधराने के लिए समाज में से ऐसा प्रश्न आए, तब हमें क्या उत्तर देना?

इसके प्रत्युत्तर में **प.पू. गुरुजी** ने कहा –

एक महानुभाव जो कि सत्संग में खूब आत्मीयता से जुड़े हुए हैं और उनसे कई कितने प्रभावित भी हैं; उन्होंने ही मुझे तीन-चार वर्ष पहले कहा था कि–

'हम सब एक हैं'–ऐसा सभाओं में प्रतिपादन करने में आप सभी अब व्यर्थ समय गवाँ रहे हो। ऐसा है ही नहीं, यह बात अब सब समझ चुके हैं।

यह है हमारी इमेज – सभी की नज़रों में!

पर, पप्पाजी के बारे तो ऐसा है कि - पप्पाजी जो मानते थे, वही बोलते व लिखते थे। वे मुक्तों को संबोधित करते – **'सदा दिव्य साकार...'** और... ही एक्च्युअली मेन्ट इट। हम भी वह देख कर भले लिखते होंगे, लेकिन सोचें कि क्या हम उस मुक्त को सच में 'सदा-दिव्य-साकार' मानते हैं? प्रसंग पर माथापच्ची में ना पड़ने के लिए – 'उसका सब कुछ दिव्य गिना करना ही है' – यूं अपने मन को समझा-बुझा लेते होंगे – पल्ला झाड़ लेते होंगे। लेकिन 'स्व' को छोड़ते हुए **'मैं निराकार और वो साकार'** – ऐसा सहज गिन कर उसे 'सत्य' तो नहीं मानते होंगे। जबकि **पप्पाजी**?... उन्होंने मेरे लिए एक बार कहा था – **'मेरा भतीजा'**! मुझे यकीन है कि उन्होंने दिल से मुझे अपना 'भतीजा' माना ही होगा, तो ही वे बोले होंगे! मैंने जब यह सुना था, तब मुझे जो आनंद हुआ था, उसकी तो कोई कल्पना भी कैसे कर पाओगे कि अहो! **पप्पाजी के दिल में मैं ऐसा बसा हुआ हूँ?**

यह तो सीधी सादी बात है कि जगत में भी किसी के संयुक्त परिवार में अपने पिता की प्रतिमा हो और यदि उस लड़के को फिर उसके ताऊजी से पिता जैसी ही उष्मा मिली हो या ताऊजी ने लड़के को पिता की कमी महसूस ना होने दी हो, तो लड़का सहज ही ताऊजी की अनुपस्थिति में अपने पिता के साथ ताऊजी की प्रतिमा रखेगा-रखेगा और रखेगा ही।

पप्पाजी के साथ मेरा कुछ ऐसा ही व्यक्तिगत संबंध रहा है और इसी लिए मैंने मन से ठान ली थी कि मंदिर में काकाजी के साथ पप्पाजी की भी ऐसी ही मूर्ति स्थापित करनी है।

दूसरा, ब्रह्मस्वरुप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरनिवासी श्री नंदाजी को १९४८ में जब मुंबई से दिल्ली आने विदा दी तब कहा था –

'दिल्ली जाओ... दिल्ली की गद्दी पर बैठोगे। स्वामिनारायण का संदेशा फैलाना। महाराज जैसा मेरा सुनते हैं, वैसा तुम्हारा सुनेंगे।'

प.पू. काकाजी ने इस बात को पकड़ा – याद रखा और मुझे दिल्ली भेज कर यहाँ केन्द्र किया... मंदिर भी बनाया और स्वामिनारायण का संदेशा फैलाया...

हम भूलें नहीं कि ***प्रचार-प्रसार 'स्वामिनारायण के तत्त्वज्ञान' का करने*** इस केन्द्र का निर्माण हुआ है, ***ना कि कोई एक विशेष व्यक्तिस्वरुप का।*** साथ ही काकाजी कहते –

'शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की शुद्ध गुरुपरंपरा को तनिक भी आँच लाए बिना एक विकास हुआ है...'

इतना तो हम सभी समझे हुए हैं कि प.पू. काकाजी ने जिस 'विकास' की बात करी होगी, वह हमारे केन्द्रों के लौकिक – पारलौकिक वैभव या रौनक-शौनक के बारे तो बिल्कुल नहीं होगी, बल्कि हमारे आध्यात्मिक विकास के अनुलक्ष में ही होगी और ***१९६६ से ७४-७५ के बीच कसनी में भी हम सभी 'एक जुट' होकर जो रहे हैं, उसका 'समय' साक्षी है।***

तो, यह रहस्य-मर्म भूल कर एकदेशस्थ प्रणाली कि– **'यह तो काकाजी का केन्द्र'** – सो यहाँ तो उनका

प्राधान्य बनाए रखने अन्य समकक्ष गुणातीत स्वरूपों को छोड़ कर – बाजु पर रख कर उनकी अकेले की ही मूर्ति रखेंगे तो रहस्य मारा जाएगा – ***हमारे चैतन्य का विकास रुक जाएगा - जकड़ जाएगा*** और यह मंदिर भी भगवान स्वामिनारायण के सनातन तत्त्वज्ञान को फैलाते केन्द्र की बजाय ***'काकाजी का मंदिर'*** की पहचान बन कर **एक डेरा** मात्र बन कर रह जाएगा एवं काल के बहाव में कहाँ और कब लुप्त हो जाएगा उसका भी भरोसा नहीं।

और... बॅप्स के ***'आद्य संस्थापक'*** शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की भांति 'काकाजी और पप्पाजी' तो हमारे गुणातीत समाज के ***'आद्य सर्जक'*** हैं – जिनकी बदौलत ही तो आज हम उजले हैं!

श्री अक्षरपुरुषोत्तम के ही प्रगट के तत्त्वज्ञान को व्यापक करते हमारे केन्द्रों में दाखिल होते ही हर एक को सहज ही यह परिचय तो मिल ही जाना चाहिए ना? और **ये मूर्तियाँ इस परिचय को शाश्वत् रखेंगी।**

पर, हम ही यदि उन्हें एक ओर खिसका देने की - साईड लाईन कर देने की या इनका नाम मिटा देने की चेष्टा करेंगे तो इतिहास हमें 'कृतघ्नी' कह कर नहीं जताएगा क्या?

और, हम यदि उनकी पहचान नहीं कराएंगे तो क्या अन्य मंदिर यह कराएंगे?

यहाँ मुझे सांकरदा मंदिर की शिलान्यासविधि पर निकाली पत्रिका का एक प्रसंग याद आता है। वह पत्रिका का मॅटर लिखवा कर, उसे सॅट करके प्रेस में दे देने की सूचना देकर प.पू. काकाजी मुंबई चले गए और एक सप्ताह में ही - पत्रिका की मॅटर प्रेस में भेज ही रहा था कि प.पू. काकाजी दोबारा सांकरदा आ पहुँचे थे। सो, मुझे हुआ कि फाईनल मॅटर प.पू. काकाजी को दिखा दूं। मॅटर और उसमें डाले फोटोग्राफ्स इत्यादि देख कर प.पू. काकाजी बोले – ***'इसमें कहीं पप्पाजी दिखाई नहीं दे रहे; वे भी हों ऐसा एक फोटोग्राफ रखो'।*** उस समय तो ब्लॉक बनाना - करना पड़ता था और... प्रेस में काम रोकना पड़ता। सो, मैं टालमटोल करने लगा। तब मुझे समझाते हुए प.पू. काकाजी बोले – *राजा!* ***भविष्य में इन पत्रिकाओं और हमारे ऐसे प्रकाशनों के आधार पर ही 'इतिहास' लिखा जाएगा। तब ख्याल पड़ना चाहिए ना कि पप्पाजी जैसी 'विभूति' भी थी।***

ऐसी उदात्त विचारधारा और ख़ानदानीभरी रीति - नीति थी प.पू. काकाजी की!

क्या हमारे केन्द्रों के अब के निमंत्रण कार्ड्स - प्रकाशन भविष्य के इतिहास के लिए प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी की प्रतिभा को यूं उभार सकेंगे कि उनकी नींव में ये विभूतियाँ थीं?

इस बारे –

'देखो, राधा का नाम सारे भागवत में कहीं नहीं मिलेगा - गुणातीत का नाम सारे वचनामृत में कहीं नहीं मिलेगा... ये भूल हम ना करें' – यह बात करके प.पू. काकाजी ने हमें चेतावनी भी दी है।

आज हम सभी समझते हैं कि – **'गुणातीत समाज' के सर्जन के मूल में तो प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी दोनों विभूतियाँ हैं।** इसीलिए तो प्रसंगवश हम यह कहते भी हैं – उनकी पहचान देते हैं...

और... मुझे इस बात का तो खूब विश्वास है कि **'गुणातीत समाज के सर्जक'** के रूप में यूं प.पू. काकाजी - प.पू. पप्पाजी का नाम कोई मिटा नहीं पाएगा। इतनी अत्यधिक सावधानी बरतने के बावजूद **'राधाकृष्ण'** के और **'अक्षरपुरुषोत्तम'** के मंदिर भी तो हुए ही ना? लेकिन, हम ऐसों की गिनती में नहीं आएं और ***यह सेवा अन्य के हिस्से चली ना जाए*** – यही मेरी भावना है। और... इस बात को यदि हम नहीं समझेंगे तो घाटा हमें ही होने वाला है।

क्योंकि – ***मूल नींव की विभूति को - उनके***

आदर्शों को - ध्येय को भूल कर - उनकी अवहेलना करके हम कितनी ही भक्ति रूप प्रवृत्तियाँ भी करेंगे - विस्तार करेंगे, पर वे प्रवृत्तियों में कोई सत्त्व - ताक़त नहीं रहेगी। वे प्रवृत्तियाँ हमारे मूल ध्येय को (हमारा ध्येय है – वासना की निर्मूलता और प्रकृति के परिवर्तन को पाकर एकांतिकभाव - ब्राह्मीस्थिति को पाना) हासिल नहीं करा पाएंगी।

वर्षों पहले हमारे '**गुणातीत समाज**' के संदर्भ में पूछते हुए एक सेवक को किसी एक बड़े संत ने कहा – '**दादुभाई** हैं तब तक इसका अस्तित्व रहेगा। जैसे छिलका संतरे की फाँकों को बांध कर रखता है, वैसे दादुभाई ने आज समाज को एक करके रखा है। वे नहीं होंगे तब संतरे की फाँकों की तरह सभी अलग - अलग हो जाएंगे – बिखर जाएंगे।'

मैं मानता हूँ – संत बहुत बड़े; लेकिन महाराज को कर्ता-हर्ता नहीं माना ना? और... प.पू. योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी को इन्होंने 'अन्डर एस्टीमेट' किया। उन्हें कहाँ 'मृत्यु' है? हाँ, वो संत के द्वारा महाराज हम सभी को 'एक' रहने की चेतावनी जरुर दे गए। तो, हम खूब आत्ममंथन करें।

आत्मीयता की गंगोत्री 'ताड़देव' से काकाजी - पप्पाजी और कांतिकाका के संयुक्त कुटुंब में से 'योगी परिवार' के रूप में पनप कर विकसित हुए इस 'गुणातीत समाज' की अखंडता और एकता के लिए आज यदि सावधान नहीं होंगे और एकदेशस्थ उठाव से हम अलग - अलग प्रवाहों में बँटते ही जाएंगे, तो - हमारे केन्द्रों का स्वतंत्र निजी अस्तित्व भले ही रहेगा, लेकिन प्रकृतिपुरुष से परे का चार पंखुड़ियों वाला 'गुणातीत समाज' – आध्यात्मिक समाज - दिव्य समाज जो इन दोनों भाईयों ने स्थापित किया, वह एक 'इतिहास' मात्र बन कर रह जाएगा।

'गुणातीत समाज' तो काकाजी और पप्पाजी का सर्जन... **प.पू. पप्पाजी के शब्दों में –** *'प.पू.* ***योगीबापा*** *ने १९५२ में समाधि द्वारा जिसका प.पू. काकाजी को दर्शन कराया था।'* सो आज हम सभी के लिए कहें तो **उनकी** वो एक **जीवंत स्मृति** है। इससे भी अधिक **प.पू. पप्पाजी** स्वमुख से **कह कर गए** और लिख कर भी गए कि –

'सारा गुणातीत समाज किसी भी कीमत पर संप, सुहृद्‌भाव, एकता से जिए – वही मेरी मूर्ति है।'

और हमारा भी यही ध्येय है कि सब कुछ गवाँ कर भी प्रभु की उस मूर्ति को सिद्ध करके शाश्वत् रखनी है।

प.पू. काकाजी कहते –

'सर्वदेशियता में जाए बिना एकांतिकभाव - यानि कि एक प्रभु की ही मूर्ति रहे - वह सिद्ध नहीं हो पाएगा।'

इस रहस्य को पकड़ कर - घोट कर हम सभी भूतकाल के आपसी गिले - शिकवे बिल्कुल भूल कर ***अब भले 'यु टर्न' लेना पड़े*** या 'पीछे हठ' करनी पड़े – प.पू. काकाजी की लाक्षणिक शैली में – चर्चिल की भांति ***'ऑनरेबल रीट्रीट'*** करके भी '**गुणातीत समाज**' को चिरंजीव बना कर इन दोनों विभूतियों के परिचय को 'अमर' रखने अग्रसर हों...

)()()(

इस प्रकार हम सभी मुक्तों पर खूब - खूब कृपा करके प.पू. गुरुजी ने सहज गोष्ठि में खूब गहराई से - विस्तृत रूप से समय के तक़ाजे का ख्याल दिया।

१९६१ में तो गुरुहरि योगीजी महाराज के वरद् हस्त प.पू. गुरुजी ने ५१ युवकों के साथ साधु की दीक्षा ली और १९६८ में तो प.पू. काकाजी ने उन्हें 'पात्र' चुन कर 'दिल्ली' भेजा। इतने संतों में से प.पू. गुरुजी को मानो उत्तरभारत के मुक्तों का उद्धार करने प.पू. काकाजी ने चुना... वो ही अपने आप में प.पू. गुरुजी के लिए एक '**प्रमाण**' है... प.पू. काकाजी को अपने इस लाड़ले की काबलियत - पात्रता पर कल्पना से परे का कैसा भरोसा होगा, तभी तो यह बागडोर सौंपी होगी ना! **स्वामी की**

बात प्र.५ की ३११ में स्वयं स्वामी को भी यह कह कर बताना पड़ा कि –

'कई कहते हैं कुछ जानता नहीं है – समझता नहीं है, परंतु गद्दी पर किसने बिठाया है? उस बारे वे जानते हैं क्या? सब कुछ समझते हैं, तभी गद्दी पर बिठाया है। यह भी सत्संग में कुसंग है...'

सिर्फ उपदेश से नहीं, बल्कि प.पू. गुरुजी ने स्वयं जीकर अध्यात्म का ज्ञान बांटा है। कभी डांट से, कभी कड़ी प्रकृति ग्रहण करके, कभी प्यार से, कभी नाराज़गी ग्रहण करके, तो कभी प्रसन्नता बता कर उन्होंने चैतन्यों को साधना के पथ पर निरंतर अग्रसर रखा है। उनके विषयों का खंडन किया है। व्यावहारिक-आध्यात्मिक प्रगति करा रहे हैं। **प.पू. काकाजी द्वारा उठाए नूतन युगकार्य को गति देते रहने की एकमात्र चाहना के सिवा प.पू. गुरुजी के जीवन में और कोई उद्यम ही दिखाई नहीं पड़ता।** जगत की परवाह करते भी वे कभी नहीं दिखाई पड़े। भगवान और भगवान के भक्त राजी होने चाहिए बस!

गुणातीत स्वरूपों की अत्यधिक महिमा के साथ प.पू. गुरुजी को संबंध वाले मुक्तों की भी इतनी ही महिमा है। छोटे से छोटे मतलब दो-तीन महीने के बच्चे को भी अलग-अलग तरीके से लाड़ करते देख कर खूब आश्चर्य भी होता है। जबकि उस बच्चे को तो बड़े होने पर भला कहाँ याद रहने वाला है कि मेरे लिए प.पू. गुरुजी ने इतना समय निकाला था। **अत्यंत संवेदनशील होते हुए भी प.पू. गुरुजी तीव्र बुद्धिशाली और कृतनिश्चयी हैं...** प.पू. काकाजी की प्रेरणा पाकर वे जो ठान लेते हैं, वो आख़िर करके ही चैन लेते हैं। तभी प.पू. गुरुजी की यह विशेषता को मद्देनज़र रखते हुए **पू. हेमंतभाई मर्चंट** ने उनके भजन में एक पंक्ति रखी है – ***'चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात है...'***

जैसे कि –

- राजधानी दिल्ली में **२४ फरवरी १९९०** को अशोक विहार की मेईन रोड का नाम **'स्वामिनारायण मार्ग'** तथा वहाँ से अशोकविहार - ३ की ओर जाती छोटी रोड का नाम **'काकाजी लेन'** रखवाया।
- **३ फरवरी १९९४** को यमुना किनारे खड़े – दिल्ली के अशोकविहार में **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर** सर्वप्रथम स्थापित करके ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज व ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का संकल्प पूर्ण किया

  और

  श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की मूर्ति के साथ सर्वप्रथम प.पू. काकाजी महाराज की भी संगमरमर की लाईफ साइज़ मूर्ति स्थापित करी।
- **२९ मार्च २००२** को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार स्वर्णजंयती की स्मृति में ताड़देव मंदिर के परिसर में **'स्वर्णजयंती द्वार'** का उद्घाटन करवाया।
- **३० मार्च २००३** को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार स्वर्णजंयती के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा **प.पू. काकाजी को सम्मानित कराने 'स्मारक डाक टिकट'** जारी करवाया और साथ ही प.पू. काकाजी महाराज की 'पुष्प समाधि' पर दिल्ली मंदिर का संक्षिप्त परिचय देता शिलालेख भी स्थापित करवाया; ताकि भावि पीढ़ियों को भी सदैव ज्ञात हो कि गुणातीत समाज के सर्जन तथा दिल्ली मंदिर की स्थापना की नींव में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज हैं।

  और

  अब की बार तो...**२५ मार्च** को **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की भी** लाईफ साइज़ संगमरमर की **मूर्ति** स्थापित करके प.पू. गुरुजी ने हर एक को यह एहसास करा दिया कि – जैसे बॅप्स के आद्य

संस्थापक ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज व ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज हैं, उसी प्रकार **'गुणातीत समाज के आद्य सर्जक'** ब्रह्मस्वरूप **काकाजी महाराज** व ब्रह्मस्वरूप **पप्पाजी महाराज** हैं, यह तथ्य हम कभी भूलें नहीं।

इन सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं को याद करते हुए वर्षों पहले **प.पू. काकाजी द्वारा** दिए निम्न **आशीर्वाद** फलीभूत होते स्पष्ट नज़र आते हैं –

❖ *...तुम्हारे द्वारा कई सत्कर्म कराने हैं*
और
मेरी जिम्मेदारी है, तो हिचकना नहीं।
१५ जुलाई '७७

❖ *तीनों स्वरूपों में तुम्हें भेदभाव नहीं है,*
सो मुझे खूब ही शांति है।
भविष्य में भारी काम का विजय शंख बजेगा
और
सारा सत्संग देखता रह जाएगा कि
*वाह, **पू. मुकुंदजी ने कमाल कर दिया!***
तो बल में रहना।
३१ जुलाई '७८

❖ *अब सच्चे साधु बन कर भगवान साध ही लो*
और
उसमें मैं खूब सहाय करूँगा।
मानसिक भूमिका ही नहीं...
तुम्हारे द्वारा बड़े काम कराने ही हैं।
२० सितंबर '७८

❖ *तुम्हारी समझ को धन्यवाद है।*
प्रभु अद्भुत कार्य-सत्कर्म कराएंगे ही।
ज़रा सी-तनिक भी चिंता नहीं करना...
...तुम्हारे द्वारा बड़े-बड़े काम कराने हैं।
२३ अप्रैल '८०

और... **यह मूर्तिप्रतिष्ठा तो मानो सारे गुणातीत समाज को एक साथ-एक स्थान पर पुनः इकट्ठे कर देने की पूर्वयोजना ही कही जाए।** तभी तो **पू. ज्योति बहन** दिल्ली ताड़देव मंदिर की सारी गतिविधियाँ-भक्तों की उमंग-उल्लास देख कर बोल उठीं **१९५४-१९५६ का समय याद आ गया** और पूरे समाज को एक साथ देख कर प.पू. गुरुजी भी भरी सभा में एक पुराने गाने की पंक्ति गाए बिना रह ना सके – ***'लौट आया है, गुज़रा ज़माना...'***

१८ फरवरी से ३-४ मार्च तक तो हरिद्वार में होने वाले प.पू. पप्पाजी के अस्थि विसर्जन निमित्त 'शाश्वत् स्मृति यात्रा' में दिल्ली आ रहे मुक्तों की सेवा में ही मंदिर के सभी मुक्त व्यस्त थे। सो, मात्र १५-२० दिन में ही **'गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा उत्सव'** का सारा आयोजन हुआ। प.पू. गुरुजी के बल से **एक-एक संत कहो, युवक कहो, बहन कहो या गृहस्थ भाई-भाभियों ने २०-२० व्यक्तियों के बराबर कार्य किया!**

इन पंद्रह-बीस दिन तो ताड़देव में चारों ओर सेवा लूट लेने का नज़ारा देखने जैसा था। फूलों की लड़ियाँ बनाने की सेवा, ठाकुरजी के हार, निमंत्रण कार्ड-पत्रिका की छपाई व पोस्टिंग, पृष्ठभूमि की सुसज्जा की तैयारियाँ, मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त की पताका बनाने की सेवा और मंदिर के परिसर में सफाई अभियान के लिए मानो संतों, सेवकों, बहनों एवं गृहस्थ भाई-भाभियों की **दिन-रात की शिफ्ट्स जैसी लगी थी।** पर, इन सभी सेवाओं के पीछे ताड़देव के परिसर में सभी के बीच सौहार्द का माहौल बना रहे और प.पू. गुरुजी राजी हो जाएं, यही एक सभी के दिल की भावना थी।

८ मार्च '०७ की तड़के प.पू. पप्पाजी की मूर्ति जयपुर से दिल्ली आई... यह भी एक सांकेतिक घटना घटी; क्योंकि ८ मार्च १९८६ के दिन प.पू. काकाजी का अग्निसंस्कार हुआ था। सच, अक्षरधाम से आए इन

दोनों भाईयों की कैसी अद्‌भुत एकता होगी? मंदिर में जब से प.पू. पप्पाजी की मूर्ति बन कर आई, तभी से करीब २५-३० भक्तों के मुँह से ऐसे उद्‌गार निकले कि स्वयं साक्षात् प.पू. पप्पाजी मानो इस परिसर में आए हैं ऐसा लगता है…

मूर्ति हुबहु बने इस हेतु शिल्पकार्य दौरान प.पू. गुरुजी ने पू. विज्ञानस्वामिजी, पू. घनश्यामप्रसादस्वामिजी, पू. मल्कानी अंकल, पू. हंसाबेन संधवी, गुणातीत ज्योत की बहनों में से पू. मायाबहन और मुंबई से अरूणभाई को भी जयपुर बुला लिए थे, ताकि कोई कसर ना रहे और सभी के योगदान से प.पू. पप्पाजी की मूर्ति ९५ प्रतिशत हुबहु बनी। प.पू. गुरुजी के अंतर की इच्छा को यूं साकार करने **'सूरजमूर्ति वाले श्री रमेशजी'** ने जिस लगन से परिश्रम किया है, वह भी तारीफ़ेकाबिल है। उनकी सेवा-भावना को खूब-खूब धन्यवाद! प.पू. पप्पाजी की मूर्ति पेईन्ट हो रही थी, तब भी प.पू. गुरुजी दिन में करीब बारह-पन्द्रह बार तो देखने गए होंगे। खूब बारीकी से वे निरीक्षण करते… **पेईन्टर श्री योगेश शर्माजी** तो बोल उठे कि –

प.पू. गुरुजी जिस बारीकी से मूर्ति को निहारते हैं, जिस ढंग का उनका पर्फेक्शन है, ऐसा तो मैंने आज तक कहीं भी नहीं देखा।

१९ मार्च से ही **प.पू. दिनकरभाई** का दिल्ली में आगमन तो मानो एक अचरज ही था। **प.पू. दिनकरभाई की गुरुभक्ति को अनंत वंदन…** अमेरिका से २१ जनवरी '०७ को तो प.पू. स्वामिजी के उत्सव में नड़ियाद आए, हरिद्वार में हुए प.पू. पप्पाजी के अस्थिविसर्जन में दोबारा आकर २-३ मार्च को तो लौटे थे और १९ मार्च को अभी फिर तीसरी बार आए!

सो, १९ मार्च से २२ मार्च तक तकरीबन रोज़ सायं प.पू. दिनकरभाई की परावाणी से सभी लाभान्वित हुए और आध्यात्मिक सूझ प्राप्त करी।

और… हर बार इन्द्रदेव हमारे उत्सव के दिन ही या एक दिन पूर्व आते हैं; पर अब की तो वे मानो भक्तों की परीक्षा लेने पाँच-छः दिन पहले आ पहुँचे… जैसे ही खुल्ली जगह में कुछ बड़ी सेवा करने निकालते, जोर-जोर से तेज़ हवाएं और बरसात शुरु हो जाती और तुरंत सारा समेट लेना पड़ता था। सेवकों ने जब **प.पू. गुरुजी** को इस बारे प्रार्थना करी, तो प.पू. गुरुजी तुरंत एक वाक्य सहज ही बोल गए कि – ***अच्छा है, अभी आ जाएगी तो उत्सव के दिनों में फिर नहीं आएगी…*** इसी तरह बहनों-भाभियों ने **प.पू. दिनकरभाई** को भी प्रार्थना करी, तो उन्होंने कहा कि– ***'हम प्रार्थना करेंगे…'*** यह सुन कर अक्षरज्योति की चुलबुली साधिका पू. गार्गी ने कहा – भजन-प्रार्थना हम करेंगे, पर आप तो इन्द्रदेव को ऑर्डर करो; क्योंकि आपका वे मानेंगे… यह बात होने के बाद वाकई बरसात नहीं हुई। इस सबसे अधिक, उत्सव के तीन दिन तक मौसम इतना खुशनुमा रहा, मानो हल्का-हल्का ठंडा मौसम भी प.पू. पप्पाजी के प्रति अपनी भक्ति अदा करने का अमूल्य मौका चूका नहीं…

प.पू. गुरुजी ने **पू. इलेशभाई** को फोन पर कहा था कि वे उत्सव से दो-तीन दिन पहले आ जाएं। सो, वे भी गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा में अपनी भक्ति अदा करने पू. अमितभाई के साथ २० मार्च को आ गए और सेवा में जुट गए। २२ मार्च की सुबह **प.पू. हंसादीदी, प.पू. ज्योति बहन, पू. डॉ. नीलम बहन** तथा अन्य मुक्त दिल्ली आ गए। २३ मार्च की सायं तक तो कुछ मुक्तों के साथ **सांकरदा से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, समढ़ियाळा से प.पू. निर्मलस्वामिजी** व पू. माधवस्वामिजी एवं **कंथारिया से पू. विज्ञानस्वामिजी** और… **गुणातीत ज्योत से करीब पौने दो सौ बहनें** व **मुंबई से प.पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, पू. महेन्द्र बापु, पू. योगिनी बहन** एवं अन्य मुक्त भी दिल्ली ताड़देव मंदिर में आ चुके थे।

२३ मार्च की दोपहर को मानो उत्सव की शुरुआत में प.पू. गुरुजी ने अपने लाक्षणिक ढंग में एक जेस्चर के ज़रिए बहुत मार्मिक-अनुपम सूझ दी। प.पू. गुरुजी के प्रार्थना करने पर प.पू. दिनकरभाई ने सेवकों को च्युइंगगम दी... तभी प.पू. गुरुजी ने सेवकों को कहलवाया कि सायं तक इसे थूक नहीं देना, मुँह में चबाते-चबाते जुगाली करना कि –

'मैं यहाँ क्या करने आया हूँ और क्या हो रहा है।'

ध्येय की ओर ही पैनी निगाह रखवाने की प.पू. गुरुजी की भी कैसी लगन? और सेवक भी कैसे आज्ञापालक कि शाम को सूचना भेजना प.पू. गुरुजी के ध्यान से उतर गया और... देर शाम को करीब आठ बजे प.पू. गुरुजी को याद आने पर च्युइंगगम थूक देने कहलवाया तब तक...!

सायं सभा का तो कोई प्रोग्राम नहीं था, पर हम सभी जानते हैं कि प.पू. काकाजी को 'शिविर' करना खूब पंसद था और अब की बार मानो पूरे गुणातीत समाज का क्रीम भी तो इकट्ठा हुआ था। सो, मानो उन्होंने ही प्रेरणा करके सायं को सभा करवा दी और प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. निर्मलस्वामिजी ने बहुत ही मार्मिक रहस्य लिए ऐसे अद्भुत आशीर्वाद बरसाए कि एक 'शिविर' का ही माहौल बन गया!

इसी दौरान 'ज्योत' की बहनें विद्यानगर से गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा की मानो अनूठी स्मृति देने प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन के लिए एक उपहार लेकर आईं और... वह था – **प.पू. पप्पाजी की प्रसादी का सोफा**! इसे रखते हुए वे बोलीं भी –

'हमारी जान आपके लिए ले आए हैं'।

यह देखते-सुनते ही प.पू. गुरुजी व दिल्ली के सभी मुक्तों का दिल एकदम भर आया... प.पू. गुरुजी ने बाद में बताया भी कि 'सोफा' देख कर मैं तो इसी सोच में डूब गया था कि –

प.पू. काकाजी का प्रसादी का सोफा यूं मैं किसी को भी दे सकता क्या? वाकई, 'स्त्री' में सिर्फ 'दिल' ही होता है!!!

'ज्योत' की बहनों की इस उच्च भक्ति-भावना व अनमोल समर्पण एवं बेमिसाल आत्मीयता-अपनेपन को कोटि-कोटि वंदन।

सभी के गद्‌गद् हो जाने के पीछे रहस्य यह था कि २००४ में जब प.पू. पप्पाजी के दर्शन करने प.पू. गुरुजी विद्यानगर 'प्रभुकृपा' में गए थे, तब डाईनिंग हॉल में प.पू. गुरुजी को प.पू. पप्पाजी ने जबरदस्ती अपने नए सोफे पर दोनों कंधे पकड़ कर आग्रहपूर्वक बिठा दिया था... इस सारे दृश्य के साक्षी तो प.पू. ज्योति बहन, पू. डॉ. नीलम बहन व अन्य बहनें भी थीं और... साथ में गए दिल्ली के मुक्तों की चित्तपट्टी पर तो सोफे पर बिठाते – मानो बेटे को लाड़ कराते एक पिता की - प.पू. पप्पाजी की अमिट स्मृति छा जैसी गई है।

२४ मार्च '०७ को सुबह से ही ताड़देव के परिसर में मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त मानो 'यज्ञशाला' का शांत-प्रशांत माहौल महसूस हो रहा था... तकरीबन सुबह साढ़े नौ बजे प.पू. पप्पाजी की मूर्ति यज्ञ स्थल के पास स्थापित होने के बाद 'यज्ञ' की शुरुआत हुई। इस यज्ञ के लिए **प.पू. साहेबजी**, **पू. शांतिभाई** व मुक्त सुबह तड़के की फ्लाईट से दिल्ली आ पहुँचे थे। प.पू. काकाजी के समय से प्रगट गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में गुणातीत समाज के कई यज्ञों-हवनों को संपन्न करवाते आए **पू. विनोदभाई पुरोहितजी** ने अब की बार **पू. वशीभाई** के साथ मिल कर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई व प.पू. भरतभाई की हाज़िरी में यज्ञ प्रारंभ करवाया।

प.पू. गुरुजी की इच्छा पूर्ण करते हुए प.पू. साहेबजी व प.पू. दिनकरभाई ने भगवे रंग की शर्ट पहन कर सभी को **साधु वेश** में दर्शन दिए। सर्वप्रथम प.पू.

अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई ने गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति व प.पू. दिनकरभाई की चित्रप्रतिमा का पूजन किया और पू. मल्कानी अंकल एवं पू. यशभाई दवे ने प.पू. पप्पाजी की मूर्ति को तथा प.पू. भरतभाई व पू. वशीभाई ने प.पू. दिनकरभाई की चित्रप्रतिमा को हार अर्पण किया और वहाँ से संतों के चले जाने के बाद प.पू. हंसादीदी, प.पू. ज्योतिबहन व प.पू. दीदी ने भी मूर्ति का पूजन किया और प.पू. हंसादीदी व प.पू. दीदी ने मूर्ति को हार अर्पण किया।

आज के दिन के लिए यज्ञ के **तीन कुंड** बनना भी विशेष रूप से अपने आप ही सांकेतिक था; मानो **'मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय'** के प्रणेता प.पू. पप्पाजी ने स्वयं प्रेरक बन कर **'मुक्त-अक्षर-पुरुषोत्तम'** के प्रतीक रूप से बनवा लिए हों! और... जैसे कि हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी की हमेशा यही कोशिश होती है कि कुछ ऐसा युनिक किया जाए, जो सभी के लिए यादगार बने और साथ ही कोई थीम लिए हो। सो, अब की बार प.पू. गुरुजी की ऐसी चाहना को बरकरार रखते हुए **'इन्टीग्रीटी ऑफ इन्डिया'** का एहसास कराने पंजाबी, मारवाड़ी, महाराष्ट्रियन, गुजराती, हरियाणवी, यू.पी. की वेशभूषा में विभिन्न प्रांत से गुणातीत समाज के १४ दंपतियों ने इन यज्ञ कुंडों के समक्ष बैठ कर प.पू. काकाजी की **'विविधता में एकता'** की उच्चतम भावना को मूर्त किया! **प.भ. दिलीपभाई भोजाणी और सौ. अरूणाबहन** तो प.पू. पप्पाजी का अस्थि-विसर्जन करके मार्च के पहले सप्ताह में ही लंदन गए थे, पर प.पू. गुरुजी के आग्रहवश करीब १५-२० दिन के अंतराल में **मुख्य यजमान** के रूप में उपस्थित रहने वापिस दोबारा दिल्ली आए थे। मंत्रोच्चारण व यज्ञकुंड की सामग्री से प्रज्ज्वलित अग्नि ने मानो सभी को दिव्य अनुभूति से भर दिया। यज्ञ संपन्न होने पर एक यज्ञकुंड में प.पू. हंसादीदी, प.पू. ज्योति बहन व प.पू. दीदी ने तथा दूसरे दो यज्ञकुंडों में यज्ञ के समक्ष विराजमान दंपतियों ने मिल कर श्रीफल की आहुति दी और... सभा हुई, जिसमें प.पू. दिनकरभाई, प.पू. साहेबजी, प.पू. हंसादीदी, प.पू. ज्योति बहन व प.पू. दीदी ने आशिष प्रदान किए और सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया।

२४ मार्च की सायं – प.पू. साहेबजी का प्रागट्योत्सव! प.पू. साहेबजी का प्राकट्य दिन वैसे दिनाँक २३ मार्च को होता है। सो, २४ मार्च को प.पू. साहेबजी की यहाँ उपस्थिति होने के कारण हमें उनका प्राकट्य दिन मनाने का भी अवसर मिल गया। तब तक में तो **पू. सुमन बहन** व **पू. सर्वेश्वर बहन** के साथ **हरिधाम की १४० बहनें** भी उत्सव में शामिल होने आ गईं थीं।

आज स्टेज की पृष्ठभूमि पर कुरुक्षेत्र की रणभूमि का एक दृश्य चित्रित किया था; जिसमें श्रीकृष्ण परमात्मा पार्थ अर्जुन की रक्षा हेतु हाथ में रथ का पहिया उठाए भीष्मपितामह को मारने दौड़ते हुए दिखाई दे रहे थे। और... भजन की पंक्तियाँ लिखी थीं –

'प्रबल प्रेम के पाले पड़ कर, प्रभुजी को नियम बदलते देखा,
अपना मान भले टल जाए, पर भक्त का मान ना टलते देखा।'

जिसका **पू. राकेशभाई शाह** ने निम्न प्रकार विस्तृत विवरण दिया –

उत्तरभारत के सभी मुक्त जानते हैं कि भजन की यह पंक्तियाँ प.पू. गुरुजी को खूब प्रिय हैं और इन्हें सुनने ही प.पू. गुरुजी इस भजन को बार-बार गवाते हैं।

इससे अतिरिक्त एक गाना भी है जिसकी पंक्ति –

'जब तुम मुझे अपना कहते हो, अपने पे गरूर आ जाता है' – प.पू. गुरुजी को खूब पसंद है।

उन्हें बस एक ही आनंद रहता है कि इन स्वरूपों ने मुझे 'अपना' माना?

क्योंकि, वे एक बात खूब समझे हुए हैं कि –

भगवान और उनके ऐसे स्वरूप हमें अपना मानें उससे अधिक विशेष कोई बात है ही नहीं।

गीता में **भगवान श्रीकृष्ण** ने
'न मे भक्तः प्रणश्यति' कह कर
हमें आश्वस्त कर दिया है कि –
'प्रभु का जो है उसका नाश नहीं होगा'।
गुरु गुणातीत ने एक साधु को कहा –
'तू मेरा है ना? जा, 'प्रकृतिपुरुष' से परे हो गया!'
कैसी अद्‌भुत और भव्य यह बात है? लेकिन हमें उनका होना नहीं है या फिर उनकी इस बात का हमें भरोसा नहीं है, सो उनके होते नहीं हैं।
हमें भीतर ही भीतर रहता है कि ऐसे क्या 'प्रकृतिपुरुष' से परे हो सकते हैं?
'हमारे प्रयत्न से हो ही नहीं सकते' – यह बात तो बिल्कुल सच है।
लेकिन, क्या ऐसे भव्य स्वरूप उनका **'वीटो पावर'** इस्तेमाल नहीं कर सकते?
इसी संदर्भ में **प.पू. काकाजी** कई बार अपनी घड़ी बताते हुए बोलते भी कि–
यह मेरी है, मुझे किसी को दे देनी हो–तो किसी को पूछना पड़ेगा क्या? यूं अक्षरधाम बख़्शिश में दिया जाता है। लेकिन 'तुम मेरे हो क्या?'
उन्हें यह विश्वास आ जाए कि हम उनके हैं – यही हमें करना है। उन्हें तो हमारी अपेक्षा और कुछ प्यारा नहीं है।
इतिहास साक्षी है कि – भगवान श्री कृष्ण ने प्रतिज्ञा करी थी कि युद्ध में वे शस्त्र नहीं उठाएंगे। पर जब अर्जुन पर भीष्म पितामह का वार होने लगा, तो भगवान श्री कृष्ण ने 'लोक' की परवाह किए बिना कि भविष्य में मेरे बारे क्या लिखा जाएगा वगैरह-कुछ भी गिने बिना इन्होंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी और रथ का पहिया उठा कर भीष्म को मारने दौड़े और पार्थ-अर्जुन की रक्षा करी।
किसी भी कीमत पर भक्त का पक्ष रख कर उसकी रक्षा करना प्रभु का स्वभाव है। और... **ऐसा 'पक्ष' रखना – भगवत्स्वरूप प.पू. साहेबजी के जीवन में तादृश है।** सो, पृष्ठभूमि पर यह दृश्य उनके प्राकट्य उत्सव निमित्त आज चित्रित करा है।

इतने बड़े ऐतिहासिक व अद्‌भुत कार्य के होने पर भला **अनादि की माया** चिढ़े बिना कैसे रहती? सो, सभा की शुरुआत में ही म्यूज़िशियन्स जब भजन का म्युज़िक बजाने लगे, तो गिटार बजाने वाले २०-२२ वर्ष के लड़के को जोर से करंट लगा। सभी ने **'स्वामिनारायण महामंत्र'** की धुन शुरु कर दी... और उसे **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** से आशीर्वाद दिलवा कर मुंबई से आए पू. डॉ. महेन्द्र मर्चंट वहीं हाज़िर थे, सो वे और प.भ. बुधरामजी तुरंत ही उसके उपचार में लग गए। वह बिल्कुल ठीक भी हो गया और खुद बोला भी कि – *'मुझे तो इन्हीं बाबा ने बचाया है, नया जन्म दिया है। सो मैं इस मंदिर में अब आता ही रहूँगा।'*

सभा की शुरुआत में सभी स्वरूपों, बड़ी बहनों तथा माननीय अतिथियों को उत्सव का बॅज अर्पण किया गया। सभा दौरान **पू. पुरी साहेब, पू. पियुषभाई (सुरत), पू. वच्छराजजी, पू. प्रभाकरजी, पू. मांगेरामजी गर्ग** तथा **पू. मल्कानी अंकल** ने गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा, प.पू. साहेबजी के प्रागट्य दिन तथा प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन निमित्त प्रासंगिक उद्‌बोधन किया।

प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त प.पू. गुरुजी ने सोचा था कि गिलास की **'लहाणी'** करें। सो, इसी दिन **प.पू. काकाजी के साईन वाले गिलास** स्टेज पर विराजमान स्वरूपों व महानुभावों को सेन्टरवाईज़ व फॅमिलीवाईज़ **पू. यज्ञप्रियस्वामिजी, पू. प्रभाकरजी व पू. अभिषेक** ने स्मृति भेंट के रूप अर्पण किए। साथ-साथ सेल काऊंटर पर रुपये १५/- की टोकन प्राईस में भी दिए गए। सभा के अंत में **प.पू. भरतभाई, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. साहेबजी** व **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशिषवर्षा करी। और... देर रात्रि की फ्लाईट से **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** भी

मूर्तिप्रतिष्ठा के लिए दिल्ली पधारे...

पू. विज्ञानस्वामिजी व **पू. माधवस्वामिजी** को आए देखते ही प.पू. गुरुजी सहज बोले थे कि - ***ये दोनों आ गए हैं, सो मूर्ति की सॅटिंग के बारे अब कोई चिंता नहीं रहेगी।*** और... वाकई, २४ की सायं गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति ऊपर ठाकुरजी के हॉल में पू. विज्ञानस्वामिजी व पू. माधवस्वामिजी के नेतृत्व में सभी मुक्तों ने मिल कर बखूबी पहुँचा दी थी। इतना ही नहीं – इन दोनों के मार्गदर्शन से सभी मुक्तों व संतों ने मध्यरात्रि से करीब ढाई बजे तक लगे रह कर मूर्ति की सारी फिटिंग भी कर दी।

संवत् २०६३ चैत्र शुक्ल ७, २५ मार्च की सुबह तो तिरंगे गुब्बारों से सजा हुआ 'ताड़देव' मंदिर का नज़ारा मानो सब को इस भव्य ऐतिहासिक घटना में शामिल होकर, स्वयं को धन्य बना लेने के लिए निराली उमंग-उल्लास लिए झूम-झूम कर आमंत्रित कर रहा था और मंदिर की रौनक देखते ही बनती थी, क्योंकि **गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा** का स्वर्ण अवसर जो था। और... आज सभी को अनोखी मूर्ति दिलवाने प.पू. गुरुजी ने 'स्वामिनारायण' मंत्र व प.पू. काकाजी की साईन का लोगो प्रिंट करे कपड़े का प.पू. साहेबजी को कुर्ता व प.पू. दिनकरभाई को शर्ट पहना कर अपने भक्तिभरे दिल का परिचय दिया।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. निर्मलस्वामिजी व प.पू. भरतभाई से श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों का पूजन करवा कर पू. विनोदभाई पुरोहितजी ने विधिवत् मंत्रोचार के साथ **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के करकमलों से** गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति एवं प.पू. दिनकरभाई की चित्रप्रतिमा की **प्राणप्रतिष्ठा** करवाई।

इसी दौरान नीचे – मंदिर के परिसर में स्क्रीन पर प.पू. हंसादीदी, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. जसु बहन, प.पू. पदु बहन, प.पू. दीदी, प.पू. सुमन बहन, प.पू. सर्वेश्वर बहन, प.पू. योगिनी बहन व गुणातीत ज्योत, हरिधाम, मुंबई तथा दिल्ली की बहनों और भाभियों ने मूर्तिप्रतिष्ठा विधि का दर्शन क्लोज़ सर्किट टी.वी. के ज़रिए किया। ज्योत के **पू. मनी बहन** ने तो **पर्दा खुलते ही प.पू. काकाजी की मूर्ति को दो सैकण्ड के लिए खूब जोर से हँसते हुए देखा; जबकि प.पू. काकाजी की मूर्ति तो स्माईलिंग फेईस वाली है।** शायद प.पू. काकाजी प्रतीति करा रहे थे कि प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा से मैं खूब राजी हुआ हूँ और 'मेरे भाई' का साथ मिलने से मंदिर संपूर्ण हुआ... **प.पू. काकाजी** 'योग' के राजा कहे जाएं और **प.पू. पप्पाजी** 'सांख्य' के राजा...**'व्यक्ति दो और आत्मा एक – अविभाज्य...'** आज **प.पू. गुरुजी ने मानो 'योग' और 'सांख्य' का समन्वय करके गुणातीत भावना से मंदिर पूर्ण कर दिया!**

दरअसल, २००३ में प.पू. पप्पाजी नासाज़ तबियत के कारण प.पू. काकाजी की '**स्मारक डाक टिकट**' के उत्सव में नहीं आ पाए थे। तब अतंर्यामी व सर्वज्ञ स्वरूप प.पू. पप्पाजी ने ३० मार्च को पंचगीनी से प.पू. गुरुजी को लिखित अपने संदेश में मानो संकेत दे ही दिया था कि –

'मैं आना चाहूँ, तो भी आ नहीं सकता। तो मुझे माफ करना... मुझे खूब आनंद है। मैं हमेशा के लिए वहाँ आ जाऊँगा, तब सोने पे सुहागा होगा (सुगंध होगी)...'

आज यही वह शुभ-मंगलमय घड़ी थी कि साक्षात् प.पू. पप्पाजी मूर्ति द्वारा हमेशा के लिए यहाँ बिराज गए। और... **सन् १९९७ में प.पू. पप्पाजी ने इसका अंदेशा स्वयं प.पू. काकाजी की मूर्ति के साथ खड़े रह कर दे भी दिया था!**

प.पू. पप्पाजी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा के समय जिस-जिस ने प.पू. गुरुजी को दर्शन करते देखा होगा,

वो जिंदगीभर कभी यह **'दिव्य दर्शन'** भूला ही नहीं पाएगा... प.पू. गुरुजी पलक झपकाए बिना एकचित्त से लयलीन होकर जैसे प.पू. पप्पाजी में खो गए थे... आस-पास हो रही मूर्तिप्रतिष्ठा से संबंधित विधि को उनके कान सुन ही नहीं रहे थे... फिर साथ ही खड़े पू. विज्ञानस्वामिजी ने सखाभाव से उन्हें विधि करने मानो जाग्रत किया... मूर्तिप्रतिष्ठा, अन्नकूट-आरती के दौरान मंदिर के बाहर आतिशबाजी से समापन के बाद प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेबजी व प.पू. गुरुजी ने कृपावर्षा से सभी को भिगो दिया।

सभी स्वरूप, संत एवं हरिभक्तों के ठाकुरजी के हॉल से चले जाने के पश्चात् प.पू. हंसादीदी, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. जसु बहन, प.पू. पदु बहन, प.पू. दीदी, प.पू. सुमन बहन, प.पू. सर्वेश्वर बहन, प.पू. योगिनी बहन सभी व्रतधारी बहनों को साथ लेकर ठाकुरजी के हॉल में पधारे... गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति का दर्शन करते हुए हर एक बहन की आँखें नम थीं। पूरे उत्सव के दौरान भी सभी बहनों की-हरिभक्तों की आँखें जब-जब प.पू. पप्पाजी की मूर्ति को देखती... उसी समय सहज ही प.पू. पप्पाजी द्वारा समय-समय पर लड़ाए लाड़ व दिए गए प्यार की दिव्य स्मृतियाँ करके नम हो जातीं। मुख पर स्थाई स्मित लिए प.पू. पप्पाजी की मूर्ति इतनी जीवंत लगती थी, मानो अभी कह उठेगी– ***'आओ जय स्वामिनारायण'–'बेसो'।***

अपने प्राण प्रियतम को कर्तव्य की भावांजली और अश्रु का अभिषेक देकर सभी मानो भीतर ही भीतर इस दिव्य विभूति को प्रत्यक्ष मान कर निरंतर प्रार्थना कर रहे थे कि हम हमारे वाणी, विचार, वर्तन से आपको इस धरा पर अमर रखें-जीवंत रखें... हमारे हृदयाकाश में अखंड विराजमान रह कर आप हमें सॅकण्ड-सॅकण्ड जाग्रत रखना। आपके द्वारा किए गए अनथक् परिश्रम को याद करते-करते **'संबंध वालों को ब्रह्म की मूर्ति मानते हुए'** ही हमारी आख़िरी सांस निकले...

सभी बहनों ने पुनः आरती करी और मंत्र पुष्पांजली करते हुए प.पू. पप्पाजी की मूर्ति का व्यक्तिगत पूजन-चरणस्पर्श करके 'अपने प्यारे प्रभु' पप्पाजी को अत्यंत नज़दीक से निहारा... गुरुहरि पप्पाजी के चरणाविंद के प्रसादी के पुष्प भी लिए! और... ठाकुरजी के समक्ष लगे अन्नकूट का प्रसाद सभी बहनों ने लिया।

३० मार्च २००३ में सरकार ने जब ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की स्मारक डाक टिकट जारी करी थी, तब **श्री गुणवंतभाई मांजरेकर** ने मुंबई से दिल्ली आकर प.पू. काकाजी महाराज की अभयदान देती मूर्ति की बहुत सुंदर रंगोली बनाई थी। अब की बार भी प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन निमित्त उन्होंने प.पू. गुरुजी की मनभावन मूर्ति की रंगोली बना कर सभी मुक्तों के दिल की प्रसन्नता लूट ली। इसे देख कर हर एक को पहले तो यूं ही लगता रहा कि यह पेईंटींग है। सो, मूर्ति के नीचे आख़िरकार लिखना पड़ा कि– *'यह पेईंटींग नहीं है, रंगोली है।'* अद्भुत 'रंगोली' का दर्शन करके कलाकार श्री गुणवंतभाई मांजरेकर की निपुण कला की तारीफ किए बिना कोई रह नहीं पाया... सच, श्री गुणवंतभाई मांजरेकर को धन्यवाद-धन्यवाद! यह सारा दर्शन करने के बाद सभी प्रसाद लेने अक्षरज्योति की साईट पर गए...

२५ मार्च की सायं – प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन का उत्सव! आज की पृष्ठभूमि पर श्रीकृष्ण पार्थ अर्जुन के सारथी बन कर रथ पर विराजमान थे। और... वहाँ लिखा था –

कृष्ण को राजी किया 'अभिप्राय' की भक्ति से,
बना पार्थ नारायण स्वरूप नर से।।

पू. राकेशभाई ने इसका रहस्य बताते हुए निम्न रूप से उसकी व्याख्या करी –

स्वामी की बातों में लिखा है कि – **'आज्ञा** और **उपासना'** – सत्संग के ये दो पंख हैं। अर्थात् सत्संग में सत्वर प्रगति करने के लिए ये दो मुख्य साधन हैं और ये

दोनों अनिवार्य हैं। क्योंकि – **दो पंखों** के बिना तो उड़ा ही नहीं जा सकता।

अक्षरपुरुषोत्तम की **दो चरण की** हमारी प्रगट की **'उपासना'** है ही।

स्वामी ने एक जगह कहा है – **'आज्ञा'** से बढ़कर **'अनुवृत्ति'** है और 'अनुवृत्ति' से बढ़ कर **'अभिप्राय'** है।

'आज्ञा' और 'अनुवृत्ति' के बीच का फर्क तो समझ आता है कि संत द्वारा बोल कर-लिख कर दिए आदेश को 'आज्ञा' कहा जाता है; और संत के भीतर की अव्यक्त मर्जी को 'अनुवृत्ति' कहा जाता है।

लेकिन – 'अनुवृत्ति' और 'अभिप्राय' में क्या फर्क? इस बारे प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी को पूछा, तब प.पू. काकाजी ने समझाया था कि –

''संत के अंतर की ऐसी कोई श्रेयकारी मर्जी – जो संजोगवश वे कह ना सके हों, लेकिन साथ में रहते हुए कहो या संत के ऐसे इशारे से सेवक समझ जाए – वह ***'अनुवृत्ति समझी'*** *कहा जाए और उसके मुताबिक सेवक करने लग पड़े वह* ***'अनुवृत्ति की भक्ति'*** *करी कही जाए।''*

जैसे कि एक गाँव के मंदिर में दाखिल होते ही स्वामी (यानि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी) बोले कि – *'ये आम के पौधे सूख रहे हैं।'* उन्होंने भगतजी महाराज को पौधों को पानी देने की आज्ञा तो नहीं करी थी, लेकिन **भगतजी ने** स्वामी की मर्जी को समझ कर, सभा में ना बैठते हुए वहाँ जाकर दौड़-दौड़ कर चार सौ घड़े पानी आम के पौधों में डाला। यह **'अनुवृत्ति की भक्ति'** करी कही जाए।

गोंडल में एक बार सभा चल रही थी और राजकोट के कोई सेठ आए। तब 'सभा डिस्टर्ब भी ना हो और सेठ के ठहरने करने की व्यवस्था हो जाए' – यह बापा की मर्जी जानकर **प.पू. काकाजी** सभा में से उठ कर उस सेठ के ठहरने-करने की व्यवस्था करने चले गए – वह **'अनुवृत्ति की भक्ति'** करी कही जाए।

जबकि, **'अभिप्राय की भक्ति'** यानि –

सत्पुरुष या युगपुरुष जब धरती पर आते हैं, तब ऐसा कोई लौकिक कार्य – योजना लेकर आते हैं जो कि तत्कालीन लोगों के दिमाग – प्राकृत सोच में फिट नहीं बैठता। पर, अपने पसंद किए पात्र को उसमें निमित्त बना कर संत युगों-युगों के लिए आदर्श स्थापित कर देते हैं।

यहाँ **मोस्ट रिमार्केबल** बात यह है कि –

प्रभु व संत **आऊट ऑफ धी वे जाकर** ऐसे सेवक की शॉर्टकमिंग्स, योग्यता, गुण-स्वभाव-प्रकृति- सब कुछ बाई-पास करते हुए-ना गिनते हुए- मानो **गाईड लाईन्स को वेव ऑफ करके सारी ऍलिजीबीलिटिझ से एग्झम्प्ट करते हुए** उस पर फिदा होकर उसे वे **अपने कल्याणकारी दैवी गुण बख़्शिश में दे देते हैं।**

जैसे कि कुरुक्षेत्र के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को निमित्त बना कर **'नर से नारायण रूप बनाया'!**

उस समय **अर्जुन** के मुकाबले धर्मवान **युधिष्ठिर**, ब्रह्मचर्य जैसे असिधारा व्रत के प्रतिज्ञ **भीष्म पितामह**, ज्ञानी **द्रोणाचार्य**, भक्ति का मानो मूर्तस्वरूप **सुधन्वा**, दानवीर **कर्ण**, साधन से ब्रह्मरूप हुआ **अश्वत्थामा** जैसे कई अद्वितीय महारथी थे; दूसरी ओर... इनकी अपेक्षा, अर्जुन को देखें तो वो जहाँ भी गया वहाँ से लड़कियाँ उठा लाया... ऐसा था वो; फिर भी, उसकी **'अभिप्राय की भक्ति' की बदौलत**-भगवान श्री कृष्ण ने उसे ही अपने सरीखा- यानि **'नारायणस्वरूप'** बना कर अपने साथ बिठाया और **'नर-नारायण'** के रूप में पुजवाया-भजवाया!

पर, ऐसी लड़ाई-युद्ध के बारे तत्कालीन समाज ने तो ज्यादातर यही मूल्यांकन करा कि क्या जरुरत थी ऐसे नरसंहार की?

इसी तरह **गुणातीत परंपरा के इतिहास में–** ब्रह्मस्वरूप **शास्त्रीजी महाराज** द्वारा उठाए **'युगल उपासना' के मंदिर निर्माण** करने बारे भी अधिकतर समाज अपनी प्राकृत बुद्धि से ही उन्हें नापता रहा।

फिर, गुरुहरि **योगीजी महाराज** ने **पढ़े-लिखे नवशिक्षित युवकों को साधु बनाने** की झुंबेश उठाई तब भी-'आज देश के विकास में पढ़े-लिखे युवानों की देश को जब जरुरत है, तब उन्हें यूं साधु की दीक्षा देनी योग्य नहीं' – यूं अपनी सात्विक वृत्ति से संत की क्रिया में मुनष्यभाव-मायिकभाव लाकर अनेकों ने संत से अपना ही संबंध खोया।

प.पू. बापा की मर्जी जान कर-उनकी ही आज्ञा से **प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी ने बहनों को भगवान भजने** के लिए उन्हें सुविधा कर देने का भगीरथ कार्य उठाया था, तब तेजोद्वेषियों ने रुढ़िवादी समाज को भड़का कर जो विरोध किया था-**'हाय दादुडिया -हाय हाय'** के जो नारे लगवाए थे, उस इतिहास के साक्षी और हमारे पुराने जोगी तो आज यहाँ सभा में बैठे भी हैं।

इसी प्रकार-ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का **दिल्ली में मंदिर करने** के संकल्प को झेल कर **प.पू. काकाजी ने अपने 'अभिप्राय' की इस भक्ति** में निमित्त बनाने **प.पू. गुरुजी को पसंद** किया और... साथ ही पहली बार १९६८ में दिल्ली भेजते हुए **पू. भीखाकाका के घर** की ऊपरी मंजिल पर प.पू. साहेबजी की हाज़िरी में प.पू. काकाजी ने आशीर्वाद भी दिए –

मुकुंद ! तुम में ऐसी 'साधुता' प्रगटेगी कि सत्संग तुम्हारे आस-पास सहज ही बढ़ता जाएगा... ऐसा बापा तुम्हें बनाएंगे।

प.पू. गुरुजी ने भी गुरुवर्य योगीजी महाराज एवं गुरुहरि प.पू. काकाजी के प्रति अपनी गुरुभक्ति अदा करने माहौल को गिने बिना-अपने मन को भी ठुकरा कर प.पू. काकाजी के इस अभिप्राय की भक्ति करके प.पू. काकाजी के अंतर की प्रसन्नता पाई, तो वे हमारे लिए एक प्रेरक स्वरूप बन गए।

आज सबसे अधिक अहोभाग्य हम उत्तरभारत के मुक्तों का है कि प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी जैसी प्रभुधारक विभूति की गोद देकर हमें निहाल कर दिया है। सो, मंच की पृष्ठभूमि पर यह दृश्य आज पिक्चराईज़ करा है।

सायं की **इस सभा के लिए प.पू. गुरुजी ने प.पू. साहेबजी के लिए भगवा रंग के रेशमी कुर्ते पर कढ़ाई के रूप में 'अनुपम मिशन' का मोनोग्राम बनवा कर, साथ में चूड़ीदार पजामा बनवाया था।** सो, प.पू. साहेब ने वह पहन कर सभी को निराले रूप में दर्शन दिए। **यूं उत्सव की हर एक सभा में प.पू. साहेब अक्षरधाम से पधारे कोई 'राजकुंवर' जैसे लग रहे थे।** सभा के प्रासंगिक उद्बोधन कार्यक्रम में सर्वप्रथम लंदन गुणातीत ज्योत के **पू. दिलीपभाई भोजाणी** ने सभी को माहात्म्य दर्शन कराया। पू. दिलीपभाई भोजाणी के बाद **पू. नरेन्द्रजी (जगरांव), पू. शांतिभाई साहेब (अनुपम मिशन), पू. इलेशभाई (विद्यानगर)** ने अपनी-अपनी दृष्टि से प.पू. गुरुजी के कार्य एवं स्वरूपों के प्रति की उनकी भक्ति का अद्भुत वर्णन किया। और... **पू. वशीभाई** का तो मानो आज दिल पर काबू ही नहीं हो, यूं वे ऐसे एक्साईटेड थे कि बस प.पू. गुरुजी की महिमा और कार्यों के बारे मैं क्या-क्या बोलता ही रहूँ... बोलता ही रहूँ। उनके मुख के भाव से सहज लगता था कि आज वे अपने सखा स्वरूप प.पू. गुरुजी के जीवन की एक-एक विशेषता ज़ाहिर करने से पीछे हटने तैयार नहीं।

प.पू. गुरुजी ने सभा के दौरान अब की बार सभी को **निराली स्मृति** भी दी और प.पू. पप्पाजी के साथ की अपनी स्मृति से सभी को तरोताज़ा भी किया। १९९७ में प.पू. गुरुजी के हार्ट का जब ऑप्रेशन हुआ था, तब प.पू. पप्पाजी, प.पू. गुरुजी को देखने मुंबई में लीलावती हॉस्पिटल गए थे और अनकॉन्शियस स्टेट में उन्हें कॉफी

पिला कर गए थे। पर, अनकॉन्शियस स्टेट में भी प.पू. गुरुजी को याद रहा था कि – 'यूं पप्पाजी मुझे कॉफी पिला कर गए हैं।' सो, अब की गुणातीत ज्योत, हरिधाम व मुंबई से सभी बहनें आ रही हैं, यह जान कर प.पू. गुरुजी ने बताया कि **'सब बहनें यानि – पप्पाजी का स्वरूप!'** सो, उन सभी को सभा में कोल्ड कॉफी पिलाई जाए। फिर सहज ही बोले कि – सिर्फ बहनों को ही नहीं, बल्कि सभी को कोल्ड कॉफी पिलाई जाए। और... हमारे आत्मीय स्वजन **प.भ. वी.के. अग्रवालजी** के सहयोग से सभा में सभी को कोल्ड कॉफी सर्व करी गई। कॉफी के प्रत्येक गिलास पर एक स्टीकर लगा था। उस पर **'जय स्वामिनारायण'** के साथ 'M' चिन्ह था व लिखा था – **'Mukund's... कॉफी टाईम इझ एनीटाईम।'** यह देख कर तो प.पू. साहेबजी बोल उठे – **ऐसा तो किसी जगह - किसी उत्सव में नहीं हुआ...** यूं सभी ने सभा में कॉफी का प्रसाद लिया।

तत्पश्चात् गुरुहरि पप्पाजी मूर्तिप्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के वरद् हस्तों** ध्वनि कैसेट **'स्वर्णस्वर भाग - ३'** का अनावरण हुआ। हमारी आत्मीय स्वजन-सी पार्श्वगायिका **सौ. वंदना बाजपेयीजी** और संगीतकार **श्री रतन प्रसन्नाजी** ने खूब भक्तिभावना से कैसेट बनाने में अपना योगदान दिया है। उनकी अहोभाव से की गई सेवा को खूब-खूब अभिनंदन...

आज प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन निमित्त हर एक को अपनी भक्ति किसी ना किसी रूप में व्यक्त करने की तत्परता तो होती ही है, सो हारविधि के कार्यक्रम में सभी केन्द्रों एवं विभिन्न प्रांतों के मुक्तों ने प.पू. गुरुजी को हार व मुकुट अर्पण किए।

मुंबई-**पवई मंदिर की ओर से** अब की बार सांकेतिक रूप से **७० कंठी की लड़ियों का हार पू. घनश्यामभाई अमीन व पू. गिरीशभाई पटेल ने अर्पण किया था।** जिसकी प्रार्थना ✕ पू. वशीभाई ने अपने प्रासंगिक उद्‌बोधन की शुरुआत में ही सुनाई थी।

प.पू. गुरुजी को **अक्षरज्योति की बहनों की ओर से जो हार** अर्पण किया था, उसमें भी पृष्ठभूमि पर अंकित दृश्य की ही प्रार्थना करी थी कि-

'पार्थ - अर्जुन कैसा भी था, लेकिन श्रीकृष्ण परमात्मा के अभिप्राय में जुड़ गया, सो नारायण-स्वरूप बन गया... हम भी आपके अभिप्राय की भक्ति में याहोम होने तत्पर हों।'

और... प.पू. गुरुजी ने भी **'अभिप्राय की भक्ति के मूर्तस्वरूप'** को दर्शाने – अपनी प्रसन्नता बरसाते हुए यह प्रसादी का हार **प.पू. दीदी** को भिजवाया। उत्तर भारत में बहनों के भगवान भजने के कार्य के लिए सर्वप्रथम कदम प.पू. दीदी ने उठाया है और उसे बखूबी निभा भी रही हैं। सो, **वह हार प.पू. हंसा दीदी व प.पू. ज्योति बहन ने मिल कर प.पू. दीदी को पहनाया।**

अब की बार प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त **प.पू. दीदी व प.भ. राकेशभाई** ने अनोखी स्मृति रूप पाँच पुराने गानों के रागों का नया भजन भी बनाया था। चूंकि वे सन् १९५० की चलचित्रों के गाने थे, सो उसका नाम भी दिया – **'मॅडले फिफ्टीझ'** ✻ !

और...**प.पू. दिनकरभाई, प.पू. गुरुजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी व प.पू. हरिप्रसाद-स्वामिजी** ने सभा के अंत में आशिष प्रदान करके मानो दो दिन की शिविर की कहें या उत्सव की पूर्णाहुति करी। **पू. राकेशभाई शाह** ने प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने दो दिन की सभी सभाओं का अत्यंत भक्तिभाव व सुचारु रूप से संचालन किया। इस सारे प्रोग्राम के आनंद में सब इतना खो गए थे कि ग्यारह कब बज गए, वो

✕ ***प्रार्थना** की ओरिजिनल 'गुजराती' स्क्रिप्ट के लिए **पृष्ठ २४-२५** पर पढ़िए।*

✻ ***'मॅडले फिफ्टीझ' भजन स्क्रिप्ट** के लिए **पृष्ठ ३८** पर पढ़िए।*

पता ही नहीं चला! ज्योत की बड़ी बहनों व कई मुक्तों के मुख से तो सहज ही निम्न उद्‌गार फिसल गए –

- ***'ना भूतो ना भविष्यति... ऐसा अद्‌भुत उत्सव हुआ।'*** – प.पू. ज्योति बहन
- ***'प्यॉर स्पीरिच्युअल फंक्शन – ४० साल में कितनी सभाएँ एटेन्ड करी है, लेकिन ऐसा आध्यात्मिक फंक्शन पहला है।'*** – प.पू. पदु बहन
- ***मूर्तिप्रतिष्ठा करके गुरुजी ने सारे समाज को एग्ज़ाम्पल दिया है – यदि समझें तो।*** – पू. डॉ. नीलम बहन
- ***'वेरी-वेरी इफेक्टीव, एक्सलन्ट, टची...'*** – पू. डॉ. भावना बहन सेठ व पू. डॉ. नीरू बहन
- ***'धीस फंक्शन वॉज़ लाईक ए फ्रेश वॉटर इन एन्शियन्ट सी!'*** – प.भ. मल्कानी अंकल
- ***'यह उत्सव इतना (लाईव) जीवंत व यादगार बन गया कि भविष्य में ऐसा फंक्शन होगा या नहीं... वो एक प्रश्न ही है।'*** – प.भ. कानजीभाई (राजकोट)

और...

एक-दो ही मुलाकात से ही परिचय में आई **लुधियाना** की मिस **आशा** इस उत्सव में पहली बार आई थीं, पर यह सारा नज़ारा देख कर भावविभोर होकर कहने लगी – ***'ऐसा लगता है कि आसमान से धरती पर मानो स्वर्ग उतर आया हो...'***

प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के बल से केवल १५ दिन में ही इतनी सहजता से यह सारा उत्सव होना तो दिल्ली मंदिर से जुड़े मानो हर एक सेवक को पल-पल एहसास करा गया कि – हम भले कितना ही सोचें कि अहो! हमने दिन-रात सेवा करी या हमारी इस काबलियत के कारण इतना सब हो पाया... पर असल में वो हमारा भम्र ही है। आज यह जो **'संप, सुहद्‌भाव और एकता'** का सारा नज़ारा दिखाई दे रहा है, वह **प.पू. काकाजी की बदौलत ही है और प.पू. गुरुजी ने** उत्तर भारत में संबंध में आए **सभी मुक्तों के भीतर सहज ही यह मनवा भी दिया है...**

सभा में बैठने की, प्रसाद की, ट्रांसपोर्ट की – सभी सेवाएं थोड़े से मुट्ठीभर सेवकों द्वारा जो हुई, वो सभी को खूब स्पर्श कर गई। शायद उसी हर्ष की अनुभूति कराने प.पू. गुरुजी ने उत्सव के बाद रात को बारह बजे **प.पू. साहेबजी की निश्रा में केक कटिंग करवाई** और... करीब ३००-३५० मुक्तों ने रात को एक बजे तक प.पू. गुरुजी का जन्मदिन मानो दोबारा मनाया, जब **पू. मल्कानी अंकल** ने सभी का आभार प्रकट करते हुए एक अलख जगाई – ***वी ऑल लव गुरुजी! लाँग लीव गुरुजी!*** जिसे सुन कर और बोल कर एक नई उमंग-सी जाग्रत हो गई...

श्रीजी महाराज ने अपने निजी सेवक पू. मूलजी ब्रह्मचारी के बारे एक बार कहा था–

'मूलजी ब्रह्मचारी सर्वप्रकार से निर्दोष हैं, तो भगवान सभी के हृदय में उसके निर्दोष होने का एहसास कराते हैं।'

आज हम देखते हैं कि– प.पू. गुरुजी की सेवा में दिन-रात निमग्न **पू. अभिषेक** की निगाह सिर्फ प.पू. गुरुजी की ही ओर होने की प्रतीति हर एक को होती है। शिस्त में रह कर भी कोई सेवा तो यूं कर सकता है, परंतु पू. अभिषेक की निगाह जो कि केवल प.पू. गुरुजी की ओर ही रहती है, उसका वह **'शुद्ध-सात्त्विक भाव'** सभी को बिना कहे-करे सहज छू जाता है और **उम्र में वह छोटा होते हुए भी कईयों को प्रेरणा देता है।**

सो, ऐसे अपने **अंतेवासी व लाड़ले सेवक पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का रत्न जड़ित स्वर्ण मुकुट प.पू. साहेबजी**

व प.पू. दिनकरभाई के करकमलों से उसे पहनवाया और उससे 'केक कटिंग' भी करवाई।

यह वही मुकुट था जो लुधियाना के **प.पू. काकाजी के पुराने जोगी प.भ. कमल खुरानाजी** ने उत्सव में प.पू. गुरुजी को पहनाया था।

इस उत्सव की अविस्मरणीय स्मृतियाँ मात्र दिल्ली, पंजाब, हरियाणा वाले हरिभक्तों की चित्तपट्टी पर ही नहीं, बल्कि समग्र गुणातीत समाज के हाज़िर सभी मुक्तों के अंतरमन पर अपनी अमिट छाप छोड़ गई हैं...

सबसे अधिक आश्चर्य तो यह है कि करीब दो महीने से ऊपर हो गए, पर अनेक मुक्त तो अभी भी इस उत्सव के एहसास में डूबे हुए हैं। अभी तक कई मुक्तों के जगह-जगह से इस उत्सव के बारे फोन आते रहना, इस बात की अपने आप ही साक्षी दे रहे हैं... **गुणातीत समाज के सभी मुक्तों के लिए यह ऐतिहासिक घटना एक अमूल्य खज़ाना बनी रहेगी।**

प.पू. काकाजी के वचन में प.पू. गुरुजी के असाधारण विश्वास के फलस्वरूप ही गुणातीत समाज के इतिहास के पन्नों में यह एक ऐतिहासिक घटना स्वर्ण अक्षरों से लिखी जाएगी। वर्तमान के साथ भविष्य की पीढ़ी भी प.पू. गुरुजी द्वारा समय-समय पर किए गए ऐसे अनुपम कार्यों की सराहना जरुर करेगी।

सच, प.पू. गुरुजी के अंतर की जैसी भावना थी कि यह उत्सव मेरे ७०वें प्राकट्य दिन का उत्सव नहीं; बल्कि गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा के उत्सव के रूप में ही मनाया जाना चाहिए... वह पूर्ण होता देख प.पू. गुरुजी के अंतर में खुशी देखते ही बनती थी और... यह खुशी उन्होंने **२८ मार्च** की सायं अपने **पार्षदी दीक्षा दिन** निमित्त आयोजित छोटी सभा में निम्न परावाणी ▲ से ज़ाहिर करी –

*'उत्सव बहुत अच्छा हुआ। कहते हैं ना – ' कल्पना से परे का - बीयॉन्ड इमेजीनेशन' ! जन्मदिन के सेलिब्रेशन की बजाय गुजराती में कहें तो – '**जाणे मारा कुटुंबीओनो एक मेळावडो थई गयो !**' या – **तीन दिन की शिविर हो गई...***

*मैं सोचता था – इसे कैसे डिस्क्राईब किया जाए? **मल्कानी अंकल** ने बहुत अच्छा बता दिया – '**धीस वॉझ ए मोमेन्टस सेलिब्रेशन!**' मोमेन्टस का मतलब – फोर्स देने वाला; उत्सव हमें **राईट डायरेक्शन में जाने का फोर्स** दे गया... काकाजी बोलते थे कि 'धन्यवाद हो मेरे साथीदारों को', पर ये फंक्शन देख कर मुझे भी लगा कि वाकई, धन्यवाद हो साथीदारों को... **ये एक-एक जने ने कम से कम बीस-बीस जनों का काम किया है।** किस-किस का नाम दिया जाए?*

*पर **काकाजी का एक जो टारजेट था, उस दिशा की ओर हमारी निगाह मोड़ दी – प.पू. पप्पाजी के इस उत्सव ने... और अब हम सब इसी दिशा में अग्रसर रह कर बिखर रहे गुणातीत समाज का मानो पुनर्गठन कर लें – वही हमने प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी को सच्ची 'श्रद्धांजली' अर्पण करी कही जाए...***

पू. ज्योति बहन** एक बहुत अच्छी बात कर गए; शायद उनमें से महाराज बोल गए। मुझे कहलवाया कि यह बहुत अच्छा काम हो गया - ऐतिहासिक काम हुआ है। पर, **भविष्य में कोई नहीं जानेगा कि यह आपने किया है।

पू. ज्योति बहन हमें काकाजी का वो वारसा देकर गईं कि कई काम भले काकाजी ने किए हैं, और... यह सब जानते भी हैं; लेकिन उनका नाम कहीं नहीं आता!

*मुझे वो बात की खुशी हुई कि **उस कक्षा पर ले जाने काकाजी हमें धकेल रहे हैं...***

...सारे काम 'प.पू. काकाजी के आशीर्वाद' करते

▲ ***प.पू. गुरुजी** की इस परावाणी से **पू. बेलाबहन** का पत्र संपन्न होने तक के '**गुजराती अनुवाद**' के लिए **पृष्ठ २५ से २७** पढ़िए।*

रहते हैं - करेंगे। हम में सिन्सियारीटी होनी चाहिए। पप्पाजी के बारे बोलते हैं ना कि पप्पाजी खूब ऑनेस्ट – खूब सिन्सियर ! यह बहुत समझने जैसी बात है। इस उत्सव के फलस्वरूप हम दूसरों को मान दे सकें – बिना क्षोभ के उनकी प्रशंसा खेलदिली से जॉयफुली सुन सकें, स्वीकार करें – ***ऐसी हायर स्टेज पर महाराज हमें जल्द से जल्द ले जाएं*** *– बस यही प्रार्थना करनी है।'* ये बातें करते-करते प.पू. गुरुजी का दिल भर आया- खूब भावुक हो गए और फिर इससे ज्यादा वे बोल भी नहीं पाए...

प.पू. गुरुजी की ऐसी प्रसन्नता पाना ही तो हमारा जीवनध्येय है ! असल में प.पू. गुरुजी की स्वरुपनिष्ठा में प.पू. काकाजी द्वारा दी गई सिद्धांतिक नींव की दृढ़ता समाई है। **रॅडिकल बातों में प.पू. गुरुजी बहुत पक्के हैं। उनमें वे कभी समझौता नहीं करते** और... प.पू. काकाजी के बताए रास्ते पर चल कर प.पू. गुरुजी खुद जिए हैं, सो संबंध में आए सभी मुक्तों को उसी सत्य को पकड़ कर चलने निरंतर आग्रहपूर्वक कहते भी दिखाई पड़ते हैं...

वर्षों पहले **प.पू. बेला बहन** जब मुंबई-ताड़देव मंदिर के दर्शन करने गईं, तो वहाँ ६/डी, सोनावाला बिल्डिंग्स में ठाकुरजी व गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों की सॅटिंग को देख कर वह दंग रह गईं कि यह केन्द्र तो पूर्णरूप से प.पू. काकाजी का ही बोला जाए ; पर, तब भी **प.पू. काकाजी ने मध्य में प.पू. स्वामिजी की मूर्ति लगवाई है और कोने में अपनी रखवाई है।** प.पू. काकाजी की उदात्त भावना व विशालता किस कक्षा की रही होगी ? **प.पू. बेला बहन तो कुशाग्र बुद्धिशाली थीं।** इस बात का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा और प.पू. काकाजी की विशेषता उन्हें भीतर में इतनी हद तक स्पर्श कर गई कि उन्होंने तुरंत दिल्ली प.पू. दीदी को पत्र लिखा।

आइए, उनके ही शब्दों में लिखी दिल की भावना का मर्म समझ कर नज़दीक आ रही **१२ जून – प.पू.काकाजी के प्राकट्य दिन** पर ऐसे उत्थान को पाने प्रार्थना करें और प.पू. काकाजी को राजी करने प.पू. गुरुजी को हर प्रकार से साथ-सहकार देने हम कृतनिश्चयी बनें – बल प्राप्त करें...

स्वामिश्रीजी

क्लीफ्टन
१२ जुलाई

प्रिय आनंदी (स्मिता गौरी निष्ठा + स्वाती) दीक्षा वगेरे...

...१२ जून को यू.के. का वीज़ा लेने गई थी। यू.के. का वीज़ा लेकर सीधा तारदेव दर्शन करने गई थी। वहाँ पू. काकाजी का पूजन किया।

एक नया दर्शन - नई दृष्टि वहाँ प्राप्त हुई। वैसे तो कितनी ही बार मैंने तारदेव का दर्शन किया है, पर इस बार का दर्शन कुछ अनूठा था। वहाँ पर सीटींग रुम में जो मंदिर पू. काकाजी ने बनवाया है, इस बार बैठे-बैठे ध्यान से उसको देख रही थी कि ***एक दृश्य (से) मेरे मन - बुद्धि स्थिर हो गए। काकाजी की विशालता के सामने मेरा मस्तक अंतर से झुक गया*** *व अंतर से प्रार्थना होने लगी कि* ***हे प्रभु यह दृश्य आप मुझे जीवन के अंतिम श्वास तक याद रखवाना। वहाँ मंदिर में बीच में स्वामीजी व दूसरे स्वरुपों की मूर्ति है व सबसे अंत में पू. काकाजी व पप्पाजी की मूर्ति है।***

यह दृश्य मैंने कितनी ही बार विचारा। ***तारदेव तो पू. काकाजी का धाम था।*** *वहाँ* ***मध्य मंदिर में यदि सेवक लोग पू. काकाजी की मूर्ति रखते, तो कोई अनुचित तो था ही नहीं; उचित ही था।*** *पर* ***उनकी विशालता व सेवकभाव का वह अद्‌भुत दर्शन था। उस जगह मैं अपने आपको रखूं.... तो....***

यह मत सोचना कि यह बात तुम सबको खुश करने के लिए लिख रही हूँ। सच में मेरे हृदय को यह बात बड़ी स्पर्श कर गई है, अतः लिख रही हूँ...

तुम सब प्रार्थना करना – मैं ऐसी ही विशालता अपने जीवन में प्रगटा सकूँ। ***ऐसी विशालता की अपेक्षा करना (चाहना रखना) बड़ा आसान है, पर ऐसी विशालता से जीना अशक्य-सा है।*** *पू. गुरुजी के चरणों में मेरी तरफ से प्रार्थना करना कि वो मेरे लिए इस बात के लिए भजन करें ही...*

आनंदी, तुमने ही मुझे कहा था कि जिन-जिन को पू. काकाजी ने पसंद किया था, उन सबकी जिम्मेदारी पू. गुरुजी की है। तो उन्हें इतना याद कराना कि मुझे भी काकाजी ने पसंद किया था... तो इस नाते उनकी डबल जिम्मेदारी मेरे लिए बनती है...

ओ.के.

बेलादीदी का

जय स्वामीनारायण

* ઐતિહાસિક ઉત્સવની પૂર્વભૂમિકા –

ગયા વર્ષના **મેની ૨૮મીએ પ.પૂ. પપ્પાજી સ્વધામ પધાર્યા** અને... તેઓશ્રીની અંતિમવિધિ કરી દિલ્હી પાછા ફરતાં પ્લેનમાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ દિલ્હી મંદિરમાં પ.પૂ. કાકાશ્રીની મૂર્તિની બાજુમાં જ **એવી ને એ જ કદની પ.પૂ. પપ્પાજીની લાઈફ સાઈઝ મૂર્તિ** પધરાવવાની વર્ષોથી સંઘરી રાખેલી મનની વાત પૂ. મલ્કાની અંકલને કરી – જેને તેઓએ અનુમોદન આપ્યું અને બીજે દિવસે દિલ્હી તેમજ ઉત્તર ભારતના મુક્તો આગળ એ ઠરાવ મૂકતાં સૌએ અત્યંત હર્ષપૂર્વક એવો વધાવી લીધો કે પ.પૂ. ગુરૂજીની આંખો હર્ષના અશ્રુથી છલકાઈ ગઈ! ને... બીજે જ અઠવાડીએથી મૂર્તિ માટે પ.પૂ. ગુરુજીએ જયપુર આવન-જાવન કરવાના શ્રી ગણેશ માંડયા. સાથોસાથ આ વર્ષના માર્ચમાં આવતી પ.પૂ. ગુરુજીની ૭૦મી જન્મજયંતીએ એ મૂર્તિની પ્રાણપ્રતિષ્ઠા થવાના એંધાણ પણ આવ્યા ને સત્સંગ સમાજમાં ય વાત વ્હેતી થઈ અને...

૧૯૯૪માં દિલ્હી મંદિરની મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા વખતે ઉત્તરભારતના મુક્તોના ચ્હેરા પર જે આનંદ વરતાતો, એ જ ઉત્સાહ-ઉમંગ-દિવ્યાનંદ આ ૨૦૦૭ની ૨૫મી માર્ચે પ.પૂ. ગુરૂજીની ૭૦મી જન્મજયંતીએ થયેલ પ.પૂ. પપ્પાજીની મૂર્તિપ્રતિષ્ઠાના અવસરે દરેક મુક્તના મ્હોં પર સહજ ઝળકી ઊઠયો. પ.પૂ. પપ્પાજીએ શરીર છોડયાને હજી વર્ષે ય પૂરૂં નથી થયું ને પ.પૂ. ગુરૂજીએ ગુરૂભક્તિ અદા કરવા એમની મૂર્તિ બેસાડીને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો અને મુક્તોના અંતરની મૂર્તિ લૂંટી લીધી... અમ દિલ્હીવાળાઓ માટે તો સાક્ષાત્ પપ્પાજી જ અહીં વિરાજમાન થઈ ગયા! **દરેકને મન એવું લાગ્યું ય કે આ ગુરૂજીની જન્મજયંતી નહીં, પણ ગુરૂહરિ પપ્પાજીનો મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા ઉત્સવ હતો.**

૧૯૯૭ની ફેબ્રુઆરીમાં જ્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીની **'હીરક જયંતી'** ઊજવી, ત્યારે ય દેશ-વિદેશથી જે પણ મુક્તો આવ્યા તે સહુને એ જ લાગેલું કે પ.પૂ. ગુરૂજીની હીરક જયંતી કરતાં, પ.પૂ. કાકાશ્રીનો જ કોઈ ઉત્સવ હોય એવો ભાવ વધુ જણાય છે અને... **પ.ભ. ઘનશ્યામભાઈ અમીન** તો ત્યારે બોલેલા પણ કે –***આ ગુરૂજીની હીરક જયંતી છે કે કાકાશ્રીનો કોઈ ઉત્સવ ?***

મારો જન્મદિવસ તો દર વર્ષે ફરી આવ્યા કરશે, પણ પ.પૂ. પપ્પાજીની મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા પર આવવાનું રખે ચૂકતા. આપણા બાપની મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠામાં તમો નહીં આવો, તો મારે કોને બોલાવવા ? એવું છેલ્લા લગભગ બે મહિનાથી પ.પૂ. ગુરૂજી મુક્તોને ફોન પર આગ્રહપૂર્વક કહેતાં. આમ પ.પૂ. ગુરૂજીની એવી અદમ્ય ભાવના હતી કે સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો અને સમગ્ર

ગુણાતીત સમાજના સહુ સંતો, બ્હેનો, ગૃહસ્થો આ મૂર્તિપ્રતિષ્ઠામાં અચૂક આવે.

આ બધી વાત જાણી એક મુક્તે તો પૂછયું ય ખરૂં કે ***દિલ્હી-મંદિરે પ.પૂ. પપ્પાજીની મૂર્તિ પધરાવવાના ? એ મંદિર પ.પૂ. કાકાજીનું નહીં ? શું આપણે ત્યાં તો એવું નથી કે જ્યાં જે અધિષ્ઠાતા હોય એની મૂર્તિ ત્યાં હોય ?***

પ.પૂ. પપ્પાજી અને સર્વે પ્રગટ સ્વરૂપો પ્રત્યેની પ.પૂ. ગુરૂજીની ભાવના-લાગણી-સંબંધ ને મહિમા જાણવા છતાં આ પ્રશ્નથી અંતેવાસી સેવકો ને મુક્તોએ પ.પૂ. ગુરુજીને પૂછયું કે પપ્પાજીની મૂર્તિ પધરાવવા અંગે સમાજમાંથી આવો પ્રશ્ન આવે ત્યારે એમને શો ઉત્તર આપવો ?

આના પ્રત્યુત્તરમાં **પ.પૂ. ગુરુજીએ** કહયું – એક મહાનુભાવ કે જેઓ સત્સંગમાં ખૂબ આત્મીયતાથી જોડાએલા છે ને જેઓથી કંઈ કેટલાય પ્રભાવિત છે; એમણે જ મને ત્રણ-ચાર વર્ષ પ્હેલાં કહેલું કે ***'અમે બધાં એક છીએ'–એવું સભાઓમાં પ્રતિપાદન કરવામાં તમે સહુ હવે ખોટો સમય જ બગાડો છો. એવું છે જ નહીં ને હવે સહુ એ સમજી ચૂક્યા છે.***

આ છે આપણી ઈમેજ–સહુની નજરે !

પણ, પપ્પાજી અંગે તો વાત એવી છે કે – પપ્પાજી જે માનતા એ જ બોલતા કે લખતા. એઓ મુક્તોને સંબોધન લખતા – **'સદા દિવ્ય સાકાર...'** અને... હી ઍક્ચ્યુઅલી મેન્ટ ઈટ. આપણે ય એ જોઈ લખતા હોઈશું. પણ, વિચારને પામીએ કે – શું આપણે એ મુક્તને ખરેખર 'સદા-દિવ્ય-સાકાર' માનીએ છીએ ? પ્રસંગે માથાકૂટ મૂકવા -'એનું દિવ્ય જ ગણ્યા કરવાનું' કરી કદાચ મનમનામણાં કરી લેતા હોઈશું – તરી જતા હોઈશું. પણ 'સ્વ' મૂકી **'હું નિરાકાર, એ સાકાર'**–એવું સહજ ગણી એને 'સત્ય' તો નહીં માનતા હોઈએ.

જ્યારે **પપ્પાજી** ?... એમણે મારે માટે એકવાર કહેલું – **'મારો ભત્રીજો'** ! મને પૂરો વિશ્વાસ છે કે એમણે દિલથી મને પોતાનો 'ભત્રીજો' માન્યો જ હોય અને તો જ એ બોલ્યા હોય ! મેં જ્યારે આ કથન સાંભળેલું ત્યારે મને જે આનંદ થયો હશે એની તો કોઈ એ ય કેમની કલ્પના કરી શકવાના કે અહો ! **પપ્પાજીના દિલમાં મારૂં આ સ્થાન છે ?**

લોકમાં ય એ સમજી શકાય એમ છે કે કોઈ સંયુક્ત કુટુંબમાં પોતાના બાપની પ્રતિમા હોય ને જો એ છોકરાને પછી એના કાકા દ્વારા બાપની હુંફ મળી હોય કે કાકાએ છોકરાને બાપની ઉણપ ન લાગવા દીધી હોય, તો છોકરો સહજ જ કાકાની અનુપસ્થિતિમાં બાપની સાથે કાકાની પ્રતિમા મૂકવાનો-મૂકવાનો ને મૂકવાનો જ.

મારો પપ્પાજી સાથેનો આવો વ્યક્તિગત સંબંધ રહયો જ છે ને એટલે જ મારા મનમાં એ વિચાર ઉદ્‌ભવેલો કે મંદિરમાં કાકાજીની સાથે પપ્પાજીની પણ એવી જ મૂર્તિ પધરાવવી છે.

બીજું, બ્રહ્મસ્વરૂપ સ્વામિશ્રી શાસ્ત્રીજી મહારાજે અક્ષરનિવાસી શ્રી નંદાજીને ૧૯૪૮માં જ્યારે મુંબઈથી દિલ્હી આવવા વિદાય કર્યા ત્યારે કહેલું –

'દિલ્હી જાવ... દિલ્હીની ગાદી પર બેસશો. સ્વામિનારાયણનો સંદેશો ફેલાવજો. મહારાજ જેવું મારૂં સાંભળે છે, તેમ તમારૂં સાંભળશે.'

પ.પૂ. કાકાશ્રીએ એ વાતને ઝીલી–યાદ રાખીને મને દિલ્હી મોકલી અત્રે કેન્દ્ર કર્યું... મંદિરે ય થયું ને સ્વામિનારાયણનો સંદેશો વ્યાપક કર્યો...

અહીં રખે ભૂલીએ કે ***પ્રચાર - પ્રસાર 'સ્વામિનારાયણના તત્ત્વજ્ઞાન'નો કરવા*** આ કેન્દ્રનું નિર્માણ થયું છે, ***કોઈ એક વિશેષ વ્યક્તિસ્વરૂપનો નહીં.*** વળી કાકાજી બોલતા –

'શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજની એ શુદ્ધ ગુરૂપરંપરાને સ્હેજ પણ આંચ લાવ્યા વગર એક વિકાસ થયો છે...'

એટલું તો આપણને સહુને ચોક્કસ હશે જ કે પ.પૂ. કાકાજીએ જે 'વિકાસ'ની વાત કરી હશે એ આપણાં કેન્દ્રોના લૌકિક–અલૌકિક વૈભવ કે જાહોજલાલીની તો કદાપિ નહીં જ હોય, પણ આપણા આધ્યાત્મિક વિકાસના અનુસંધાને જ હોય અને

૧૯૬૬થી ૭૪-૭૫ના ગાળામાં –કસણીમાં પણ આપણે સહુ 'એકજૂથ' થઈ જે રહ્યા એ વાતનો 'સમય' સાક્ષી છે.

તો, આ રહસ્ય-મજકૂર ભૂલી એકદેશસ્થ પ્રણાલી કે **'આ તો કાકાજીનું કેન્દ્ર'** એટલે ત્યાં એમનું જ પ્રાધાન્ય જાળવવા – એવાં જ અન્ય ગુણાતીત સ્વરૂપોને પડતા મૂકી એમની એકલાની જ મૂર્તિ રાખીએ તો એ મજકૂર માર્યો જાય – ***આપણાં ચૈતન્યનો વિકાસ રૂંધાઈ જાય*** ને આ મંદિર પણ ભગવાન સ્વામિનારાયણના સનાતન તત્ત્વજ્ઞાનને ફેલાવતા કેન્દ્રને બદલે ***'કાકાજીનું મંદિર'*** તરીકે ઓળખાણને પામી **એક ડેરૂં** - એક કેન્દ્ર બની રહે ને કાળના વ્હેણમાં ક્યાં ને ક્યારે લુપ્ત થઈ જાય એનો ભરોસો નહીં.

વળી, બૅપ્સના ***'આદ્ય સંસ્થાપક'*** શાસ્ત્રીજી મહારાજ ને યોગીજી મહારાજની જેમ 'કાકાજી ને પપ્પાજી' તો આપણા ગુણાતીત સમાજના ***'આદ્ય સર્જક'***–જેમને લઈને આજે આપણે ઉજળા છીએ!

શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમના જ પ્રગટના તત્ત્વજ્ઞાનને વ્યાપક કરતા આપણા કેન્દ્રોમાં દાખલ થતાં દરેકને સહજ જ આ પરિચય તો મળી જ જવો જોઈએ ને ? ને **આ મૂર્તિઓ એ પરિચયને શાશ્વત્ રાખશે.**

પણ, આપણે જ જો એમને બાજુએ ખસેડી દેવાની– સાઈડ લાઈન કરી દેવાની કે એમનું નામ ભૂંસાડી દેવાની ચેષ્ટા કરીશું તો ઇતિહાસ શું આપણને 'કૃતધ્ની' કહી નહીં બિરદાવે ?

વળી, આપણે જો એમને છતરાયા નહીં કરીએ તો શું ઈતર મંદિરો એ કરશે ?

અહીં મને સાંકરદા મંદિરના ખાતમુહૂર્તની પત્રિકાનો એક પ્રસંગ યાદ આવે છે. એ પત્રિકાની મૅટર લખાવી કરી, એને ગોઠવી કરી મઠારીને મૂકવાની સૂચના આપી પ.પૂ. કાકાશ્રી મુંબઈ જતા રહેલા ને અઠવાડિયામાં જ – પત્રિકાનું મૅટર પ્રેસમાં મોકલતો'તો ને પ.પૂ. કાકાશ્રી ફરીથી સાંકરદા આવી પ્હોંચેલા. એટલે મને થયું કે ફાઈનલ મૅટર પ.પૂ. કાકાશ્રીને બતાવી દઉં. મૅટર ને એમાં મૂકેલા ફોટોગ્રાફ્સ વગેરે જોઈ કરી પ.પૂ. કાકાશ્રી બોલ્યા – ***'આમાં કશે પપ્પાજી દેખાતા નથી; એઓ હોય એવો એક ફોટોગ્રાફ મૂકો.'*** તે વખતે તો બ્લૉક બનાવવો–કરવો પડે ને પ્રેસમાં કામ રોકી દેવું પડે. એટલે મેં એ માટે ગલ્લાંતલ્લાં કરવા માંડયા. ત્યારે મને સમજાવતા કાકા બોલ્યા –

રાજા! ***ભવિષ્યમાં આ પત્રિકાઓ ને આપણા પ્રકાશનોના આધારે જ ઇતિહાસ લખાવાનો. ત્યારે ખ્યાલ પડવો જોઈએ ને કે પપ્પાજી જેવી વિભૂતિ પણ હતી.***

આવી ઉદાત્ત વિચારસરણી અને ખાનદાનીભરી રીતિનીતિ હતી પ.પૂ. કાકાજીની!

શું આપણા કેન્દ્રોના આજનાં નિમંત્રણ કાર્ડો-પ્રકાશનો ભાવિ ઇતિહાસ માટે પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. પપ્પાજીની પ્રતિભાને એવી ઉપસાવશે કે આ એમની પાયાની 'વિભૂતિ'ઓ હતી ?

આ અંગે –

'જુઓ, રાધાનું નામ આખા ભાગવતમાં ક્યાંય નહીં મળે – ગુણાતીતનું નામ આખા વચનામૃતમાં ક્યાંય નહીં મળે... એ ભૂલ આપણે ન કરીએ' – એ વાત કરી આપણને પ.પૂ. કાકાશ્રીએ ચેતવણી ય આપી છે.

આજે આપણે સહુ સમજીએ છીએ કે **'ગુણાતીત સમાજ'ના સર્જનના પાયામાં તો પ.પૂ. કાકાજી ને પ.પૂ. પપ્પાજી બન્ને વિભૂતિઓ છે.** એટલે જ તો પ્રસંગોપાત આપણે એ કહીએ છીએ – એમની ઓળખ આપીએ છીએ.

જો કે મને એ વાતનો ય ખૂબ વિશ્વાસ છે કે **'ગુણાતીત સમાજના સર્જક'** તરીકે એમ કંઈ પ.પૂ. કાકાજી-પ.પૂ. પપ્પાજીનું નામ ભૂંસાડી શકાશે નહીં. આટલી બધી સાવધાની વરતાઈ છતાંય **'રાધાકૃષ્ણ'**ના ને **'અક્ષરપુરૂષોત્તમ'**ના તો મંદિરો થયા જ ને ? પણ, આપણે એવાઓની ગણતરીમાં ન આવીએ ને ***એ સેવા અન્યના ફાળે ચાલી ન જાય*** એ જ મારી ભાવના છે. વળી, આ વાતને જો આપણે નહીં સમજીએ તો અંતે ખોટ તો આપણને જ જવાની છે.

કેમ કે – ***મૂળ પાયાની વિભૂતિને, એના આદર્શોને,***

ધ્યેયને ભૂલી, એમને અવગણી આપણે ગમે એટલી ભક્તિરૂપ પ્રવૃત્તિઓ પણ કરીશું-વિસ્તારીશું, એ પ્રવૃત્તિઓમાં કોઈ સત્ત્વ-કૌવત નહીં રહ્યું હોય. એ પ્રવૃત્તિઓ આપણા મૂળ ધ્યેયને (આપણું ધ્યેય છે-વાસનાની નિર્મૂળતા ને પ્રકૃતિના પરિવર્તનને પામી એકાંતિકપણું-બ્રાહ્મીસ્થિતિને પામવું) હાંસલ નહીં કરે.

વર્ષો પ્હેલાં આપણા **'ગુણાતીત સમાજ'** અંગે પૂછતા એક સેવકને કોઈ એક મોટા સંતે કહેલું –

'દાદુભાઈ છે ત્યાં સુધી એનું અસ્તિત્વ રહેશે. છોતરૂં સંતરાની પેશીઓને બાંધી રાખે તેમ દાદુભાઈએ આજે સમાજને એક કરી રાખ્યો છે. એ નહીં હોય ત્યારે સંતરાની પેશીઓની જેમ બધાં છૂટા પડી જવાના-અલગ થઈ જવાના.'

હું માનું છું – એ સંત ખૂબ મોટા; પણ, મહારાજનું કર્તા-હર્તાપણું ભૂલ્યા ને ? વળી, એમણે પ.પૂ. યોગીજી મહારાજ, પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. પપ્પાજીને 'અન્ડર ઍસ્ટીમેટ' કર્યા. એમને ક્યાં તિરોધાન છે ? હા, એ સંત દ્વારા મહારાજે આપણને સહુને 'એક' રહેવા ચેતવ્યા જરૂર છે. તો, આપણે ખૂબ આત્મમંથન કરીએ.

આત્મીયતાની ગંગોત્રી 'તાડદેવ'થી કાકાજી-પપ્પાજી ને કાંતિકાકાના સંયુક્ત કુટુંબમાંથી 'યોગી પરિવાર' રૂપે પાંગરીને વિકસેલા એ 'ગુણાતીત સમાજ'ની અખંડતા ને એકતા અર્થે આજે જો સાવધાન નહીં થઈએ ને એક દેશસ્થ ઉઠાવે કરીને આપણે જૂદા-જૂદા પ્રવાહોમાં ફંટાતા જ જઈશું, તો-આપણા કેન્દ્રોનું સ્વતંત્ર આગવું અસ્તિત્વ ભલે રહેશે, પણ પ્રકૃતિપુરૂષથી પરનો ચાર પાંખડિયો 'ગુણાતીત સમાજ'–આધ્યાત્મિક સમાજ-દિવ્ય સમાજ જે આ બન્ને ભાઈઓએ સ્થાપ્યો એ એક 'ઇતિહાસ' જ બની રહેશે.

'ગુણાતીત સમાજ' તો કાકાજી ને પપ્પાજીનું સર્જન...પ.પૂ. પપ્પાજીના શબ્દોમાં– *'પ.પૂ. યોગીબાપા એ જેનું ૧૯૫૨ની સમાધિમાં પ.પૂ. કાકાશ્રીને દર્શન કરાવેલું.'* તે આજે આપણા સહુ માટે કહીએ તો **એમની** એ એક **જીવંત સ્મૃતિ** છે. વળી **પ.પૂ. પપ્પાજી** સ્વમુખે **કહી ગયા** ને લખી ય ગયા કે–

'આખો ગુણાતીત સમાજ કોઈ પણ ભોગે સંપ, સુહૃદ્ભાવ, એકતા રાખીને જીવે – એ મારી મૂર્તિ છે.'

ને આપણું એ જ ધ્યેય છે કે પ્રભુની એ મૂર્તિને આપણે ગમે તે ભોગે સિદ્ધ કરી શાશ્વત્ રાખવી છે.

પ.પૂ. કાકાજી કહેતાં–

'સર્વદેશીયતામાં ગયા વિના એકાંતિકભાવ-એટલે કે એક પ્રભુની જ મૂર્તિ રહે-એ સિદ્ધ નહીં થાય.'

આ રહસ્યને પકડી-ઘૂંટી આપણે સહુ ભૂતકાળની અરસપરસ વાતો–ભૂલો સદંતર ભૂલી **હવે ભલે 'યુ-ટર્ન' લેવો પડે** કે 'પીછે હઠ' કરવી પડે-પ.પૂ. કાકાજીની લાક્ષણિક શૈલીમાં- ચર્ચીલની જેમ ***'ઑનરેબલ રીટ્રીટ'*** કરીને ય **'ગુણાતીત સમાજ'**ને ચિરંજીવ રાખી આ બન્ને વિભૂતિઓના પરિચયને 'અમર' રાખવા લઈ મંડીએ....

***

×પવઈ-મુંબઈના મુક્તો દ્વારા પ.પૂ. ગુરૂજી માટે મોકલેલ '૭૦ કંઠી'ના હારની પ્રાર્થના –

ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાજી સ્વરૂપ પ.પૂ. ગુરૂજીના ચરણોમાં...
પ્રાગટ્ય પર્વે પ્રણામ સહ જય સ્વામિનારાયણ.

કંઠી, તિલક-ચાંદલો, માળા – સર્વ ભગવાન સ્વામિનારાયણના પ્રતીક,
સર્વ શરણાગતિના દ્યોતક, યુગલ ઉપાસનાના પ્રેરક.
જે ધારણ કરવા થાય ભાગ્યવાન, તે બને શ્રીજીના સંદેશવાહક,
શરણાગત વત્સલ પ્રભુના પ્રતીક કેવાં મરમાળા!
સર્વ માન્ય ને સર્વ સ્વીકૃત... છતાયં સહુથી નિરાળાં!!
ભલે નાજુક છે કંઠીની કાયા, એમાં ઐશ્વર્યો કેવાં સમાયાં,

કાળ, કર્મ ને માયા તેમનાં અડે નહીં પડછાયા,
કંઠી વક્ષમાં વચ્ચોવચ્ચ, જાણે અભેદ્ય રક્ષા કવચ.
તિલક-ચાંદલે ઉપાસના ને ભજનનું સાધન માળા,
નિષ્ઠા, આશરો, પવિત્રતા, ભજન, દાસત્વ, સ્વાધીનતા,
અંતરતિમિરને વિદારી કરે દેવત્વના સરવાળા.
અભાવ-અવગુણની બાદબાકી, દોષ-વિકૃતિની જવાળા,
મહાત્મ્યના ગુણાકાર, અહમ્ મમત્વના ભાગાકાર,
આત્મીયતા પ્રકાશે આતમ ઉજ્જવળ ઝળઝળા!
એવાં કંઠી, તિલક-ચાદંલો, માળા, જો સંતના હસ્તે ધારણ થાયે...
તો શમે કુકર્મો કાળા... થાય સત્કર્મોના સરવાળા,
જે સંતમાં પ્રભુ સમાયા, તે માવતર સહુથી સવાયા,
જે શરણું એનું પામ્યાં, તે આલોક-પરલોકે ફાવ્યા.

હે! વ્હાલા ગુરૂજી,
કંઠી તણો આ હાર સ્વીકારી, સ્વીકારો હાર અમારી,
સર્વ ક્ષતિઓ વિદારી, કરજો આત્મીયતાના આકારી,
અંતર પ્રેમનું પ્રતીક અમારૂં, નથી ચેન કે ચાળા,
ભલે ઉડીને આવ્યા હોઈએ, માની લેજો પગપાળા,
આત્મસખા સહુ સ્વરૂપોના ને છો આત્મબંધુ અમારા,
અમ હૈયું લેતું હિલોળા, અર્પી કંઠી તણી આ માળા,
પ્રેમથી પહેરી, આશિષ અર્પી ધન્ય કરી દો વ્હાલા,
પ્રેમથી પહેરી, આશિષ અર્પી ધન્ય કરી દો વ્હાલા...

લિ. આપના જ દિનકર, બાપુ, ભરત, વશી, રાજુ, રાજુ, અશ્વિન, હરખ, અરૂણ, હીતેન ને સર્વ ભાઈઓ, યોગિની-માધુરી-જયશ્રી ને સર્વ બ્હેનો તથા ઘનશ્યામ, ગિરિશ, હેમંત, ડૉ. મર્ચંટ, એસ.પી., ભગત, સાહોર, અટવાલ ને ગૃહસ્થ મંડળ... અને અક્ષરધામ-પવઈના સર્વ મુક્તોના દંડવત પ્રણામ સહ જય સ્વામિનારાયણ.

* * *

▲ *૨૮મી માર્ચ, સાંજે – પ.પ. ગુરુજીની પરાવાણીથી પૂ. બેલાબેનનો પત્ર પૂર્ણ થતાં સુધી –*

'સમૈયો સરસ ઊજવાયો. કહીએ ને કે – 'કલ્પનાતીત – બીયૉન્ડ ઈમેજીનેશન'! જન્મદિવસની ઊજવણી કરતાં ગુજરાતીમાં કહું તો – ***જાણે મારા કુંટુંબીઓનો એક મેળાવડો થઈ ગયો,*** *અગર-ત્રણ* ***દિવસની એક શિબિર થઈ ગઈ!***

હું વિચારમાં હતો કે – આને કઈ રીતે વર્ણવી શકાય? ***મલ્કાની અંકલે*** *બહુ સરસ કહ્યું –* ***'ધીસ વૉઝ એ મોમેન્ટસ સૅલિબ્રેશન!'*** *મોમેન્ટસ એટલે – ફોર્સ આપી દેવાવાળું; સમૈયો આપણને સાચી દિશા તરફ વળી જવાનો ફોર્સ આપી ગયો... પ.પૂ. કાકાજી બોલતા –'ધન્યવાદ મારા સાથીદારોને'; પણ, આ સમૈયો જોઈ મનેય લાગ્યું કે ખરેખર! ધન્યવાદ છે સાથીદારોને...* ***એ એક-એક જણાએ ઓછામાં ઓછું ૨૦-૨૦ જણાનું કામ કર્યું છે.*** *કોનું-કોનું નામ દઉં?*

પણ, ***કાકાજીનું જે ધ્યેય હતું, એ દિશા તરફ પપ્પાજીના આ સમૈયાએ આપણી સહુની નજર વાળી અને... હવે એ જ દિશાએ આગળ વધી ફંટાઈ રહેલા***

ગુણાતીત સમાજનું પુનર્ગઠન કરી લઈએ એ જ પ.પૂ. કાકાજી અને પ.પૂ. પપ્પાજીને આપણી સાચી 'શ્રધ્ધાંજલી' અર્પી ગણાય.

પૂ. જ્યોતિબેન *એક ખૂબ સરસ વાત કરી ગયા; મહારાજ જ એમનામાંથી બોલી ગયા. મને કહેવડાવ્યું – બહુ સરસ કામ થઈ ગયું આ. ઐતિહાસિક કામ થયું છે. પણ* ***ભવિષ્યમાં કોઈ નહીં જાણે કે આ તમે કર્યું છે.***

પૂ. જ્યોતિબેન આપણને એ કાકાજીનો વારસો આપી ગયા. ભલે, ઘણાં કાર્યો કાકાજીએ કર્યાં છે અને... એ સહુ જાણે ય છે. પણ, એમનું નામ ક્યાંય નહીં આવે !

મને એ વાતનો આનંદ છે કે ***કાકાજી આપણને એ કક્ષાએ લઈ જવા ધકેલે છે.***

...'પ.પૂ. કાકાજીના આશીર્વાદ' બધાં કામ કરે છે-કરવાના છે. આપણામાં સિન્સિયારીટી હોવી જોઈએ. બધાં પપ્પાજી માટે કહે છે ને ? ખૂબ ઑનેસ્ટ-ખૂબ સિન્સિયર ! આ વાત ખૂબ સમજવા જેવી છે. આ ઉત્સવની ફળશ્રુતિ રૂપે આપણે બીજાને માન આપી શકીએ, ક્ષોભને પામ્યા વગર ખેલદિલીથી-આનંદપૂર્વક બીજાની પ્રશંસા સાંભળી શકીએ-સ્વીકારી શકીએ–એવી ઉચ્ચ કક્ષાએ મહારાજ આપણને વ્હેલી તકે લઈ જાય–બસ એ જ પ્રાર્થના કરવી છે.'

આ વાતો કરતાં-કરતાં, પ.પૂ. ગુરુજીનું હૈયું ભરાઈ આવ્યું, ખૂબ ભાવુક થઈ ગયા ને પછી વધુ કંઈ બોલી શક્યા નહીં.

પ.પૂ. ગુરુજીની આવી પ્રસન્નતાને પામવું એ જ તો અમારા જીવનનું લક્ષ્ય છે. વાસ્તવમાં, પ.પૂ. ગુરુજીની સ્વરૂપનિષ્ઠામાં પ.પૂ. કાકાજીએ આપેલી પાયાની સિધ્ધાંતિક દૃઢતા સમાઈ છે. રેડિકલ વાતોમાં પ.પૂ. ગુરુજી ખૂબ દૃઢ છે. એમાં એઓ ક્યારેય કોઈ કોમ્પ્રોમાઈઝ નથી કરતાં...પ.પૂ. કાકાજીએ ચીંધેલા માર્ગે ચાલી તેઓ જીવ્યા છે, તેથી સંબંધમાં આવતા દરેક મુક્તને એ જ સત્યને વળગી ચાલવા નિરંતર આગ્રહપૂર્વક કહેતાં પણ તેઓ દેખાય છે...

વર્ષો પ્હેલાં પ.પૂ. બેલાબેન જ્યારે મુંબઈ-તારદેવ મંદિરે દર્શન કરવા ગયેલા, ત્યારે ત્યાં દ્/ડી, સોનાવાલા બિલ્ડિંગ્સમાં ઠાકોરજી અને ગુણાતીત સ્વરૂપોની મૂર્તિઓનું સૅટીંગ જોઈ એ દંગ થઈ ગયા કે આ કેન્દ્ર તો બધી રીતે પ.પૂ. કાકાજીનું જ કહેવાય. પરંતુ, તો પણ **પ.પૂ. કાકાજીએ મધ્યમાં પ.પૂ. સ્વામિજીની મૂર્તિ રખાવી અને એક ખૂણામાં પોતાની મૂકાવી છે.** પ.પૂ. કાકાજીની ઉદાત્તભાવના – વિશાળતા કઈ કક્ષાની રહી હશે ? **પ.પૂ. બેલાબેન તો ખૂબ વિચક્ષણ હતા.** આ વાતનો એમના મન પર એટલો ઊંડો પ્રભાવ પડયો અને પ.પૂ. કાકાજીની વિશેષતા એમને હૈયે એટલી હદે સ્પર્શી ગઈ કે એમણે તરત જ પ.પૂ. દીદીને એક પત્ર લખ્યો.

આવો, એમના જ શબ્દોમાં એમણે વ્યક્ત કરેલી એમના હૈયાની ભાવનાનો મર્મ સમજી નજદીક આવી રહેલી– **૧૨મી જૂનના પ.પૂ. કાકાજીના પ્રાગટ્ય દિવસે** આવું ઉત્થાન પામવા પ્રાર્થના કરીએ ને પ.પૂ. કાકાજીના અંતરની પ્રસન્નતા મેળવવા પ.પૂ. ગુરુજીને દરેક પ્રકારે સાથ-સહકાર આપવા કૃતનિશ્ચયથી બનીએ – બળને પામીએ.

સ્વામિશ્રીજી

કલીફ્ટન

૧૨ જુલાઈ

પ્રિય આનંદી – (સ્મિતા, ગોરી, નિષ્ઠા + સ્વાતી) દીક્ષા વગેરે...

...૧૨મી જૂને યૂ.કે.ના વીઝા લેવા ગઈ'તી. યૂ.કે.ના વીઝા લઈ સીધી તારદેવ દર્શન કરવા ગઈ'તી. ત્યાં પૂ. કાકાજીનું પૂજન કર્યું.

ત્યાં એક નવું દર્શન-નવી દૃષ્ટિ મળી. આમ તો ઘણી વાર મેં તારદેવમાં દર્શન કર્યાં છે, પણ આ વખતે દર્શન કંઈ જૂદું હતું. ત્યાં સીટીંગ રૂમમાં પ.પૂ. કાકાજીએ જે મંદિર બનાવડાવ્યું છે, એના આ વખતે બેઠા-બેઠા ધ્યાનથી દર્શન કરી રહી હતી ને ***એક દૃશ્યથી મારા મન-બુદ્ધિ સ્થિર થઈ ગયા. કાકાજીની વિશાળતા સામે મારૂં***

માથું અંતરથી નમી પડયું *ને અંતરથી પ્રાર્થના થવા માંડી કે –* ***હે પ્રભુ ! આ દૃશ્ય આપ મને જીવનના અંતિમ શ્વાસ સુધી યાદ રખાવજો. ત્યાં મંદિરે મધ્યમાં સ્વામીજી અને અન્ય સ્વરૂપોની મૂર્તિ છે અને સૌથી છેલ્લે પૂ. કાકાજી અને પપ્પાજીની મૂર્તિઓ છે.***

આ દૃશ્ય પર મેં કંઈ કેટલી ય વાર વિચાર્યું. ***તારદેવ તો પૂ. કાકાજીનું ધામ હતું.*** *ત્યાં* ***મંદિરમાં મધ્યે જો સેવકો પૂ. કાકાજીની મૂર્તિ રાખે તો કંઈ અનુચિત તો હતુ જ નહીં – ઉચિત જ હતું.*** *પણ,* ***એમની (પ.પૂ. કાકાજીની) વિશાળતા અને સેવકભાવનું એ અદ્‌ભુત દર્શન હતું. એ જગ્યાએ હું પોતાની જાતને રાખું... તો...***

રખે માનતા કે આ વાત તમ સહુને ખુશ કરવા માટે લખી રહી છું. ખરેખર, મારા હૈયાને આ વાત ખૂબ સ્પર્શ કરી ગઈ છે એટલે લખી રહી છું.

તમે સહુ પ્રાર્થના કરજો કે આવી જ વિશાળતા હું મારા જીવનમાં લાવી શકું. ***આવી વિશાળતાની અપેક્ષા કરવી (ઇચ્છા રાખવી) ખૂબ સ્હેલું છે, પણ આવી વિશાળતાથી જીવવું અશક્ય જેવું છે.*** *પૂ. ગુરુજીના ચરણે મારા તરફથી પ્રાર્થના કરજો કે એઓ મારી આ વાત માટે ભજન કરે જ...*

આનંદી, તેં જ મને કહેલું કે જેમને-જેમને પૂ. કાકાજીએ પસંદ કર્યા'તા એ સહુની જવાબદારી ગુરૂજીની છે. તો, એમને એટલું યાદ કરાવજે કે મને પણ કાકાજીએ જ પસંદ કરી'તી... તો એ નાતે મારે માટે એમની બમણી જવાબદારી થાય છે...

ઓ.કે.
બેલાબેનના
જય સ્વામિનારાયણ

(आइए, दिनाँक ***२३, २४, २५ और २६ मार्च – गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा, प.पू. साहेबजी के प्राकट्योत्सव व प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्योत्सव*** *निमित्त मुक्तों के दिल के उद्‌गार निहारें व स्वरूपों द्वारा बहाई आशिष गंगा में स्नान करके धन्य बनें...)*

२३ मार्च, २००७ – सायं सभा

प.पू. निर्मलस्वामिजी

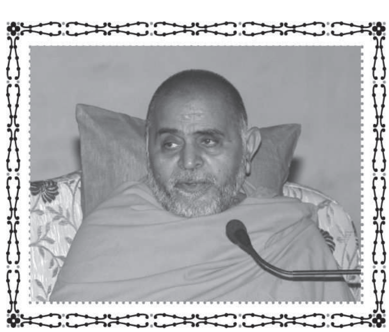

भगवान स्वामिनारायण ने प्रथम के १५वें वचनामृत में स्वयं कहा है कि **जिसके हृदय में भक्ति हो, उसे भगवान जो-जो वचन कहें, उसमें भूल कर भी यह नहीं कहना (चाहिए) कि मेरे से इतना तो माना जाएगा और इतना नहीं माना जाएगा।**

...स्वामिनारायण भगवान गढडा में लक्ष्मीवाड़ी के चौक में सो रहे थे, रात का समय था और पूर्णिमा का दिन था। तो, चन्द्रमा की रोशनी उनकी आँखों पर आ रही थी। इसलिए भगवान स्वामिनारायण ने सोते-सोते कहा कि यह चन्द्रमा मेरी नींद में बाधारूप हो रहा है, इसे दूर कर दो। देखो, ये 'वचन' था; पर यदि **हृदय में भक्ति हो तो** वह **वचन माना जाए। सुराखाचर** खड़े हो गए और एक घंटे तक आकाश में तलवार घुमाई। फिर

भगवान स्वामिनारायण ने कहा कि – 'अब चन्द्रमा आगे चला गया।' चन्द्रमा तो यूं कुछ तलवार से दूर होता नहीं; लेकिन **भगवान स्वामिनारायण का वचन था और हृदय की भक्ति थी, तो वह वचन माना गया।**

गोंडल में शरद्‌पूर्णिमा का उत्सव था और उस समय मैं कोठार में था। **पप्पाजी** कई बार शरद्‌पूर्णिमा के उत्सव के लिए महीना-महीना, पंद्रह-पंद्रह दिन तक रहते और बापा की आज्ञा से पप्पाजी रसोई की सारी व्यवस्था करते थे। मैं भी साथ में ही रहता था। एक दिन योगीजी महाराज ने पप्पाजी को कहा कि ये सारे बर्तन साफ करवा दो। ५०-६० हज़ार भक्तों के बड़े - बड़े बर्तन थे। पप्पाजी सभी युवकों को लेकर बर्तन साफ करा रहे थे। तीन से चार घंटे तक लगातार बर्तन साफ किए। फिर जब बापा देखने आए; बापा का हाथ पकड़े हुए मैं भी साथ में ही खड़ा था। पप्पाजी को बापा ने पूछा कि बर्तन साफ हो गए? पप्पाजी ने कहा – हाँ, साफ हो गए। बर्तन अच्छे साफ किए थे और अच्छी तरह रखे थे। **हमें ख्याल नहीं पड़ता कि वचन की भक्ति – हृदय की भक्ति क्या होती है?** लेकिन बापा ने एक सुंदर चरित्र किया कि पानी के नल के पास बापा गए। पानी के नल को थैली नहीं बांधी हुई थी। सो, पप्पाजी को बापा ने कहा कि तुमने बर्तन तो जरुर साफ करवाए, लेकिन नल पर थैली नहीं बांधी हुई थी, सो सब बर्तन दोबारा मांझ कर रखवा दो। बर्तन तो अच्छे से साफ करे हुए थे, लेकिन नल को थैली नहीं बांधी हुई थी; इसलिए बापा ने दोबारा आज्ञा करी कि ये बर्तन दोबारा मांझ दो। देखो, इसे 'वचन' कहा जाए – हृदय की भक्ति कही जाए। मैंने तो पप्पाजी को कहा कि बापा ने भले कहा, लेकिन हम नल पर थैली बांध कर थोड़े बर्तन मांझ कर रख दें। यूं **'वचन' का पालन** भी हो जाएगा। पप्पाजी बोले – नहीं। सो, नल पर थैली बांधी और चार घंटों में सारे बर्तन दोबारा धो डाले। देखो, ये **हृदय की भक्ति कही जाए**, वर्ना तो ये वचन माना ही नहीं जाए।

...गोंडल मंदिर की गौशाला में एक सेवक था। वह कब क्या करे पता नहीं था। एक दिन गौशाला में से (उसने) सारी गाय खोल कर छोड़ दी और... गाय सारी भाग गईं! जब वो भाग गईं तो वही सेवक योगीजी महाराज के पास आया और बापा को कहा कि गाय सभी गौशाला में से भाग गईं हैं, सो ढूंढने जाना पड़ेगा। **काकाजी** पास खड़े थे, तो बापा बोले – दादुभाई साहेब, गाय सारी गोंडल मंदिर से बाहर चली गईं हैं, ज़रा ढूंढ लाओ। देखा जाए तो – वह काकाजी का विषय नहीं था। वे ना तो गायों को पहचानते थे और गायों को अपने साथ कैसे लाना वह भी वे जानते नहीं थे। लेकिन योगीजी महाराज ने कहा कि दादुभाई गायों को आप ले आओ। गाय तो गोंडल शहर में चली गईं थीं। सो, काकाजी ने उस सेवक को कहा कि मैं तुझे एक जोड़ी कपड़े ला दूँगा, तू मेरे साथ चल; ताकि गाय पहचानी जाएं कि ये गाय मंदिर की हैं और डोरी साथ में ले ले। काकाजी वह सेवक को लेकर तीन घंटे तक गोंडल शहर में घूमे और दस गाय ढूंढ कर लाए। देखो, **काकाजी को योगीजी महाराज के वचन का यह मूल्य था!** इसी तरह **हरिप्रसादस्वामी** प्रभुदासभाई के रूप में थे और योगीजी महाराज ने कहा कि यह गोंडल मंदिर का सारा कॅम्पस तुम्हें साफ कर देना है। वो तो कितना बड़ा? और... रात को ही सारा साफ कर देना! फिर रात को बापा यह भी आज्ञा करते कि तुम्हें फलां के साथ गोष्ठी करनी है। यूं, दो बजे तक गोष्ठी करनी और फिर कॅम्पस साफ करना! मैंने तो प्रभुदासभाई को कह भी दिया था कि – आगे-आगे का साफ कर देते हैं, बाकी का दिन में साफ कर देंगे। तो बोले कि – नहीं, बापा ने आज्ञा करी है तो... और सुबह के पाँच बजे तक सारा कॅम्पस साफ करके जगह-जगह कूड़े के ढेर बना कर रखे। देखो, वचन की कितनी कीमत है यह! फिर, सुबह योगीजी महाराज मंगल प्रवचन कर रहे थे। तो हम ऐसी उमंग-उमंग में गए कि इतना साफ किया है, तो बापा राजी हो जाएंगे। हम मंगल प्रवचन में जाकर बैठे ही थे कि बापा बोले कि कूड़े का ढेर भर लिया है? जाओ वापिस! यूं ये बड़े पुरुषों ने इतनी भक्ति करी है। भगवान स्वामिनारायण 'धोराजी' (गाँव) से 'उपलेटा' (गाँव) की ओर जा रहे थे। भगवान स्वामिनारायण गाड़े में सो रहे थे।

गाड़ा छोटा पड़ रहा था, सो वे बोले कि गाड़े को खींचो। आधे घंटे तक सेवकों ने गाड़ा खींचा, फिर महाराज बोले कि अब लंबा हुआ। **खींचने से गाड़ा कुछ लंबा होता नहीं, तलवार चलाने से चंद्र आकाश में हटता नहीं, पर हृदय की भक्ति का यह दर्शन है।**

इतने सारे उत्सवों की परंपरा का हमें यहाँ लाभ मिलता है। हमारे हृदय की भक्ति हो तो हमें प्रसन्नता मिल जाए। हरिद्वार में पप्पाजी के अस्थिविसर्जन के समय भी बारिश थी, वायुमंडल का माहौल कुछ विपरीत था। उस समय भी सभी की 'भक्ति' के दर्शन का लाभ मिला था। हमारे साथ सौराष्ट्र से एक नए-नए भाई आए थे – बिल्कुल नया था, पर उसके हृदय में भाव था कि मुझे कुछ लाभ लेना है, तो दूर खड़े-खड़े उसे ऐसे दर्शन हुए कि कुंभ के पास योगीबापा और कई संत थे। योगीबापा के पास पप्पाजी खड़े थे, भगवान स्वामिनारायण थे। उसने कहाँ तप किया था? उसने कहाँ कुछ भक्ति करी थी? पर हृदय साफ था, तो हरिद्वार में ऐसी दिव्यता के दर्शन हुए! जो सभा थी, वह अक्षरधाम की सभा हो ऐसा उसे दर्शन हुए!

जूनागढ़ में गुणातीतानंदस्वामिजी बहुत बीमार पड़े थे और सारे देश में समाचार फैल गया। उस समय एक पटेल बाड़ी में काम कर रहा था और उनके घर की औरत सुबह रोटी लेकर जाती थी। पटेल की औरत 'भात' लेकर कुछ देर से पहुँची। तो उसने पूछा कि क्यों देर से आई? वह बोली कि जूनागढ़ के जोगी बीमार हुए हैं और सभी हरिभक्त वहाँ जा रहे थे इस कारण व्यस्त थी-सो, देर हुई। उस पटेल के पैर कीचड़ से सने हुए थे। वो वहीं से सीधा चल पड़ा! वहाँ स्वामिजी सो रहे थे, दोनों देश के आचार्य पास बैठे थे। सभी सद्गुरु भी आ गए थे। पटेल में भक्ति थी, उसका हृदय था; पर वहाँ जाकर स्वामी का कपड़ा खींचा और बोला स्वामी आप बीमार पड़े हो? क्यों बीमार पड़े? तब स्वामी ने आँख खोली, जबकि पाँच दिन से आँख नहीं खोली थी। स्वामी ने आँख खोल कर पटेल को पूछा कि तू कब आया? वह बोला कि अभी आया। फिर, स्वामी ने पूछा कि तूने भोजन किया? तो, पटेल बोला कि आप कहो तो खाना खा लूं, वर्ना चला जाऊँ। स्वामी के साथ उसका ऐसा गाढ़ संबंध था। गुणातीत पुरुषों के साथ सेवक के इतने गाढ़ संबंध होते हैं।

योगी बापा ने एक बार एक पटेल को कहा कि तू कंठी पहन ले। तो पटेल बोला कि आप यदि अंतकाल में मुझे लेने आने वाले हो, तो कंठी पहनूँ। बापा वैसे जल्दी हाँ नहीं करते थे, पर उसने तो जिद्द पकड़ी कि आप लेने आने वाले हो तो कंठी पहनूँ। आख़िर बापा बोले कि हाँ, मैं तुझे लेने आऊँगा और तब उसने कंठी पहनी। वर्षों के बाद पटेल बीमार हुआ, अंतकाल आया। भगवान स्वामिनारायण उसे मूलजी ब्रह्मचारी के साथ लेने आए। पर, पटेल उनके साथ गया नहीं कि मुझे तो योगीजी महाराज ने कहा है कि मैं लेने आऊँगा। सो, तब ही मैं जाऊँगा। उन दिनों गाड़ियाँ नहीं थीं, सो बापा बैलगाड़ी में घूमते थे और... वे किसी गाँव में जाने निकले थे। बैल को कुछ चोट लगी, सो बैलगाड़ी को वहीं रोक देना पड़ा। बापा बैलगाड़ी में बैठे-बैठे स्वामी की बातें बोल रहे थे। एक भाई दौड़ता-दौड़ता वहाँ आया और कहने लगा कि आपका भक्त बहुत बीमार है और आपको याद कर रहा है। वो कंठी वाला पटेल था। योगी बापा वहाँ-उसके पास गए और पटेल के सिर पर हाथ फिराया। तब पटेल बोला कि भगवान स्वामिनारायण और मूलजी ब्रह्मचारी यहाँ बैठे हैं। आप भी आए हो, तो अब मैं आऊँगा। देखो, बड़े पुरुष का वचन कैसे सिद्ध होता है!

ऐसा दूसरा प्रसंग – योगीजी महाराज गाँव-गाँव घूम रहे थे, सिर पर गठरी (पोटला) लेकर घूम रहे थे। वे खुद भोजन भी बना लेते थे। गाँव में तब कोई गैस के चूल्हे नहीं थे, माचिस नहीं होती थी। गाँव में घर-घर में देवता (आग) दबा रखते थे और फिर उसमें से निकालते थे। तो, बापा ने एक लड़के को कहा कि तू तेरे घर से देवता ले आ – हमें भोजन बनाना है। लड़का मुमुक्षु था। घर में दूध का मटका भरा था, सो उसे हुआ कि देवता ले जाते हैं, साधु भोजन

बनाएँगे और हमें प्रसाद मिलेगा। इसलिए दूध भी साथ लेकर जाऊँ। बापा ने उसे पूछा कि घर में पूछ कर दूध लाया है? तो, वो बोला नहीं, हमारे घर में किसी को पूछने की जरुरत नहीं है। बापा ने थाल किया, ठाकुरजी को धराया, लड़के को प्रसाद दिया और उसे कहा कि यह प्रसाद तू घर पर भी लेकर जा। जिस मटके में दूध लेकर वह आया था, वह मटका तब आधा खाली था। पर, वह जब घर गया तो मटका दूध से पूरा भरा हुआ था! लड़का समझ गया कि ये संत कोई महान हैं। घर बंद करके लड़का दौड़ कर आया। बापा चलते जा रहे थे; तो, लड़के ने उनके पैर पकड़ लिए और माँगा कि जिस प्रकार आपने दूध का मटका भर दिया है, इसी प्रकार मेरे सिर पर हाथ रखो कि मैं भर जाऊँ और मैं 'एकांतिक भक्त' बन जाऊँ। योगीजी महाराज ने उसके सिर पर हाथ रखा और वर्षों के बाद वह साधु बन कर 'एकांतिक' बन गया। **हमारे सिर पर सभी बड़े पुरुषों ने हाथ रख कर भर दिया है, पर हमें विश्वास नहीं है कि हम भरे हुए हैं।**

...हम सभी वर्षों से सत्संग समूह में रहते हैं। इतने वर्षों से काकाजी, पप्पाजी, बापा – सभी के साथ इतना सुख लिया है। सत्संग में कई प्रकार के प्रसंग बनते रहते हैं। कितने नए-नए प्रकार के दर्शन होते हैं। कितने प्रकार के कितने मुक्तों के दर्शन होते हैं। एक बार गोंडल में राळ के वृक्ष के नीचे काकाजी-पप्पाजी बैठे थे, तब बापा ने बहुत अच्छी बात करी थी। उन्होंने कहा – **सत्संग में हर एक बात हमें सीधी लेनी। कोई भी प्रसंग बने, कोई भी क्रिया बने उसमें से सीधी बात लेनी। यह रीति-नीति योगी बापा, काकाजी और पप्पाजी के पास से सीखने को मिलती थी।**

कच्छ-भुज के एक गाँव में पारायण चलती थी। उस समय घरों में नहाने-धोने की कोई सुविधा नहीं होती थी। इसलिए जिसने सप्ताह बिठाई थी, उसने एक पटेल को कहा कि आपकी बाड़ी में पानी की सुविधा है। सो, वहाँ संतों के नहाने-धोने की व्यवस्था कर दो; क्योंकि हमारे घर में पानी की व्यवस्था नहीं है। वह सत्संगी नहीं था, तो उसने सत्संगी की रीति से नहीं, पर मित्र के दावे से कह दिया कि भले नहाने आएं।

पहले के समय में स्वामिनारायण संप्रदाय में संत बड़े-बड़े लोटे रखते थे। उस समय बोतलों और जग में पानी नहीं रखा जाता था, इसलिए लोटे में पानी भर लेते थे। वहाँ संत रसोई बना रहे थे, उसमें कुछ बना-नहीं बना; उस बात पर बहस हो गई और बड़े झगड़े का रूप ले लिया। मारपीट होने की तैयारी थी; लेकिन वहाँ हरिभक्त खड़े थे। तो, संतों ने एक-दूसरे को कहा कि तू बाहर निकल तब पता चलेगा। मतलब संतों को बाहर नहाने जाना था, तो वे बोले कि – बाहर निकल। इस ओर उस हरिभक्त ने पटेल को कहा था कि हमारे संत तो बहुत पवित्र, एकदम शांत और शीतल हैं... पर, वहाँ कुएँ पर नहाने गए संत तो लोटों से मारपीट करने लगे। यह देख कर वह हरिभक्त एकदम नाचने-कूदने लगा। तब पटेल ने कहा कि – तू तो तेरे संतों का बखान कर रहा था कि संत बहुत अच्छे हैं। पर, वे तो लोटों से मारपीट कर रहे हैं। उनके माथे से खून निकल रहा है और... तब भी तू नाच क्यों रहा है? तो, वो बोला कि हमारे यहाँ वर्ष में एक बार **'लोटा उत्सव'** होता है, इसलिए नाच रहा हूँ। **देखो, उसने बात सीधी ली!** भले मारपीट हुई-झगड़ा हुआ, चोट भी लगी थी। पर, सीधा लिया। यूं **सत्संग में हर एक क्रिया में हमें गुणगान ही गाना, महिमा समझनी।**

अभी ये भव्य उत्सव हो रहा है। इस उत्सव में से बहुत कुछ जानने को - सीखने को मिलेगा। यदि महिमा से हम दर्शन करेंगे, तो यह प्रसंग कोई अलग ही है।

यह ऐतिहासिक प्रसंग ऐसा सर्जित हुआ है कि इसमें से हमें कुछ आध्यात्मिक भोजन बांध कर जाना है। यह कोई दूसरे मेलों की तरह मेला नहीं है। कई उत्सव हो गए, ऐसा उत्सव नहीं होगा। यह कोई

कलश उत्सव नहीं, इसमें कोई ध्वजाएँ नहीं चढ़ानी हैं, कोई भागवत् की सप्ताह नहीं है। लेकिन, एक उत्सव अद्भुत होने वाला है। इसमें जितनी तुम में शक्ति हो, उतना तुम ले सकोगे...

प.पू. दिनकरभाई

गुरुजी के प्राकट्य दिन की जय, जय, जय। आज शुक्रवार की शाम की सभा हो रही है। कल यज्ञ से उत्सव की शुरुआत होगी और रविवार के दिन गुरुजी के प्राकट्य दिन से पूर्णाहुति होगी। निर्मलस्वामिजी ने बहुत अलग-अलग प्रकार के प्रसंग – पप्पाजी, काकाजी, स्वामिजी और संतों के बताए। एक के बाद एक सारे मास्टर प्रसंग निकल रहे थे। निर्मलस्वामिजी बापा के पास बहुत छोटे थे, तब से सेवा में थे और हर एक प्रसंग के अंदर वे एक बात बता रहे थे कि **बड़े पुरुष की आज्ञा हम बिना सोचे - विचारे पालन कर लें।** वचनामृत में, शिक्षापत्री में, स्वामी की बातों में और हमारे सभी गुणातीत स्वरूपों ने भी ये सब बार-बार दोहराया है। **आज्ञा और उपासना वो हमारी दो पंखुड़ियाँ हैं। 'आज्ञा' पहली पंखुड़ी है। आज्ञा में हम जितने गुरुमुखी बनेंगे, उतनी हमारी आत्मा प्रभावित होगी, तेजस्वी होगी, बलवान होगी। भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में मध्य ३७ और मध्य ६३ में भी यह बताया है कि आज्ञा का पालन करने से हमारा जीव कैसे बलवान हो जाए।**

आज हम दोपहर को गुरुजी के साथ बैठे थे और हमारे अमितभाई व भाई लोग अमेरिका से च्युइंगगम लाए थे। **गुरुजी ने सभी हरिभक्तों को वो च्युइंगगम दी और साथ में एक आज्ञा दी कि ये च्युइंगगम शाम तक च्यु करनी है, निकाल नहीं देनी है– थूक नहीं देनी है। इतना ही नहीं, मगर च्यु करते – करते बोलना कि 'हम क्या करने को आए हैं और क्या कर रहे हैं?'** देखो, **गुरुजी का** ध्येय – **'गोल' है कि हम सतत् अंतर्दृष्टि करें और सतत् प्रभु के अंदर जीते रहें।** वो आज्ञा का पालन अभी तक वो हरिभक्त कर रहे थे, आठ बजे तक! अभी गुरुजी ने संदेशा भेजा कि अब थूक दो, तो निकाल दी। ये **आज्ञा छोटी है, मगर वो हमें गुरु के साथ ऐसा दिव्यभाव का दिव्य संबंध कराती है।**

कल यज्ञ भी होने वाला है। यज्ञ के बारे भगवान ने गढडा मध्य ८ में भी ज्ञानयज्ञ – योगयज्ञ की बात बताई है और अंतर्दृष्टि की भी बात बताई है। उसमें भगवान कहते हैं कि आँखें बंद करके कोई ध्यान में बैठा हो, तो हमको ऐसा लगेगा कि ये कोई बड़े संत पुरुष हैं, उनको हम प्रणाम करेंगे। मगर जब वो ही संत आँखें खोल कर खुली आँखों से बाहर देखता होगा, तो हमारे अंदर वो भाव लाना मुश्किल पड़ेगा। हमें ऐसा नहीं लगेगा कि ये संत बाहर दृष्टि रख कर भी प्रभु में जीता है। काकाजी ये बात हमें बार-बार दोहराते थे कि **भगवान ने 'अंतर्दृष्टि' जो बताई है, वो ये है कि आँखें खुली हों या बंद, मगर भगवान की ओर यदि हमारी दृष्टि रहेगी– ऐसे भगवान के धारक संत के प्रति दृष्टि रहेगी, तो वो हमारी अखंड 'अंतर्दृष्टि' है।** वर्ना तो आप आँखें बंद करके भी बैठे हो, पर भगवान का ध्यान नहीं धरते हो, तो वो 'बाह्यदृष्टि' हो जाएगी। दुनिया को भले लगेगा कि ये अंतर्दृष्टि करके बैठा है...

यूं जब भगवान आए हों, ऐसे संत आए हों, तब हमारी **प्रकृति को छोड़ कर** उनकी **सेवा करनी - वो हमारी भक्ति है।** उस सेवा से प्रभु राजी हो जाएंगे। वर्ना तो, गुणातीतानंदस्वामी ने भी कहा है कि भक्ति से स्वभाव बढ़ेगा। गुस्से का स्वभाव है, तो भक्ति करने के बाद गुस्सा कम होना चाहिए। मगर गुणातीतानंदस्वामी बोलते हैं कि यदि हम अच्छी तरह से 'भक्ति' नहीं करेंगे तो गुस्सा बढ़ेगा... निर्मलस्वामिजी ने 'लोटा उत्सव' की बात करी... आज ऐसा कुछ नहीं चलता है। हम सब समझते हैं कि उसमें फायदा नहीं है। लेकिन दूसरे लेवल की समझ लानी है। भगवान ने हमें दो आँखें दी हैं। कोई प्रसंग बनेगा और हमारे ढंग का नहीं होगा, तो हमें क्लीक हो जाएगा – अंदर फोटो पड़ जाएगा कि फलां ये क्यों करता है? फलां ये क्यों नहीं करता है? **वो भी हमारे लिए 'लोटा उत्सव' ही है। काकाजी कहते थे 'निर्दोषबुद्धि', वो अलग चीज है।** किसी की कोई भी क्रिया में हमें कोई दोष नहीं दिखाई दे, उसके प्रति का सद्भाव भी कम नहीं हो, वो **सच्ची 'निर्दोषबुद्धि' पक्की करनी है।**

गुरुजी अपनी बीहॅव से बार-बार वो दोहराते हैं। गुरुजी का हम दर्शन करते हैं, वो सेवक के सेवक होकर जीते हैं। हर एक की 'हाँ' में 'हाँ' करके बहुत सरल होकर वे जीते हैं। तो हम भी हमारे साथीदारों के साथ – हमारे सेवकगण के साथ ऐसा क्यों नहीं करें? हर एक में काकाजी का – पप्पाजी का – स्वामिजी का – गुरुजी का दर्शन करेंगे, तो हमें किसी का दोष नहीं दिखाई देगा।

काकाजी कहते थे कि बुद्धि के चार दोष हमें 'निर्दोषबुद्धि' से दूर ले जाते हैं। एक है संकल्प, दूसरा है विकल्प, तीसरा है भेदभाव और चौथा है विपरीतभाव! ये चार चीजें हमें प्रभु से दूर ले जाती हैं। सत्संगी, मित्र, संबंधी से दूर ले जाती हैं। उसमें 'भेदभाव' – वो क्या है? **हर एक के मन में यह रहता है कि मैं ही सच्चा हूँ। मैं जो कुछ करता हूँ, वो ही सच्चा है।** इंग्लिश में कहते हैं – **'आई एम मिस्टर ऑल राइट! एवरी थिंग एल्स इज़ रॉंग!'** मैं सच्चा हूँ, **बाकी सब चीज सच्ची नहीं है। सब लोग मुझे समझते नहीं हैं, सुनते नहीं हैं, जानते नहीं हैं। बुद्धि का ये जो दोष है, वो भेदभाव पैदा करता है।** बुद्धि के वो दोष से अलग-अलग मंडल बन जाते हैं। अलग-अलग संस्थाएं बन जाती हैं और कभी-कभी 'लोटा उत्सव' भी हो जाता है। काकाजी बताते थे – ये 'भेदभाव' नहीं होना चाहिए। उसके लिए हमें पहले ऐसा भाव पैदा करना चाहिए कि **मेरे ही अंदर जो दोष है, वो मुझे निकालना है।** प्रथम के १६ वचनामृत में भगवान ने बताया है कि अपने अंदर जो दोष हैं उसके प्रति नज़र रखनी है – आगे बढ़ने के लिए मैं कैसे आगे बढ़ूँ? नहीं कि, दूसरा ये कहता है - दूसरा ये करता है – उसको आगे बढ़ाना है। **मुझे किसी का गुरु बन कर किसी का दोष निकालना नहीं है।** हमारे सत्संग में भी कई हरिभक्त लोग आते हैं। मानो कि एक पति और पत्नी हैं, उसमें से पति कंप्लेईन करे कि भई! ये मेरी बात सुनती नहीं है – ये है, वो है और मानो कि हम भगवान को प्रार्थना करें और बीवी उसका सब सुनना - करना शुरु करे; तो फायदा किसको होगा? पति को होगा कि पत्नी को होगा? पति तो वैसा का वैसा ही रहेगा। **हम इधर आए हैं, अपने आपको बदलने के लिए; नहीं कि – दूसरों को।** हम ऐसी प्रार्थना क्यों नहीं करें कि मेरे अंदर कुछ ऐसा परिवर्तन लाओ कि मेरे स्वभाव से मेरी बीवी भी सत्संगी बन जाए। **हम सच्ची तरह से - दिल की सच्चाई से - प्रमाणिकता से प्रभु का भजन करेंगे, तो हमारा जो अरोमा, हमारी जो सुवास (खुश्बू) है, वो हमारे साथीदारों तक जरुर पहुँचेगी। घर में कभी भी झगड़ा नहीं होगा। घर मंदिर बन जाएगा और मंदिर की हम भक्तिभाव से पूजा करेंगे।**

अभी एक हरिभक्त के यहाँ हम गए थे। वो बोलते थे कि सारे दिन में भगवान का नाम-भजन बहुत कम होता है, ज्यादातर दुनियादारी की बातें चलती हैं। मैंने पूछा कि आप सुबह में उठ कर भगवान के लिए कुछ नाश्ता बनाते हो क्या? तो बोले – भगवान के लिए नहीं बनाते, हमारे लिए बनाते हैं। तब मैंने कहा कि जब नाश्ता बनाओ, तो ऐसी

भावना करो कि आज भगवान को भोग धराना है – भगवान के लिए नाश्ता बनाना है। **नाश्ता वही का वही होगा, मगर हमारी भावना बदल जाएगी और भगवान को धरा कर फिर हम जो खाएंगे, तो हमारे विचार – हमारी सोच को भी बदल देगा।** दो दिन पहले हम एक ऑफिस के काम से जा रहे थे। उधर हमारा काम नहीं हो रहा था। तो हमारे सुहृद्स्वामी ने बोला कि प्रसाद के थोड़े लड्डू लेकर जाओ और वो लेकर गए तो काम होना शुरु हो गया। क्योंकि **ये 'प्रसाद' जो हम खाते हैं, वो अंदर से परिवर्तन लाता है...**

योगीजी महाराज ट्रेन में जा रहे थे और साथ में संत और काकाजी बैठे थे। जिनके पास टिकट थी, वो दूसरे डिब्बे में बैठे थे। टिकट चेकर आया, तो संतों ने बोला कि हमारी टिकट दूसरे डिब्बे में किसी के पास है। वो टी.टी का पारा चढ़ गया कि – टिकट, तुम्हारे पास होनी चाहिए। तुम सब लोग मुफ्त का खाते हो, झूठ बोलते हो और मैं ऐसे नहीं चला लूँगा – यूं अंटशंट बोलने लगा। जब स्टेशन आया, नीचे उतरे तो वो सेवकों ने जाकर टी.टी. को टिकट दिखाई कि – ये हमारी टिकट है। टिकट चेकर स्तब्ध हो गया कि मुझ से गल्ती हो गई – ये लोग तो ऐसे नहीं हैं। उस समय योगीजी महाराज ने क्या किया? उनकी झोली में से लड्डू निकाला और वो टी.टी. साहेब को दिया। साथ ही आशीर्वाद दिए कि – आप बड़े अफसर हो जाओगे। उनकी जगह हम तो ऐसा बोलते कि – देखो ये टिकट है ना हमारे पास! **बापा की दृष्टि** – बापा की जो **भावना** थी, वो **हमेशा पोज़ीटिव थी।** उसको भी आशीर्वाद दिया कि आप बड़े अफसर हो जाओगे और प्रसाद भी दिया। हम भी घर में सुबह, दोपहर, शाम को – जो भी टाईम पर **भगवान को भोग धराएंगे, वो हमारा खाना पवित्र हो जाएगा।** मगर हम क्या सोचते हैं कि एक बार भगवान को धराएंगे तो वे खा लेंगे। तीन बार क्यों धराना है? भई, हम भी तो तीन बार खाते हैं! तो **हमारी हर एक क्रिया जब हम भक्तिरूप करेंगे – वो क्रिया में भगवान का नमक डालेंगे – संतों को याद करेंगे तो हमारे घर में शांति-शांति रहेगी। लक्ष्मी घर में आएगी और हमारा जो परिवार है – हमारे बेटे हैं – बच्चे हैं – वो सब संस्कारी होंगे।**

तो, इधर की जो सब फॅमिलीज़ हैं, कुटुंबीजन हैं उनमें गुरुजी ओत-प्रोत होकर मंदिर के प्रति भाव पैदा करते हैं। १९६८-६९ में आज से चालीस साल पहले गुरुजी शुरुआत में जब यहाँ आए, तब सत्संग में आने वाले तो इधर बहुत कम थे। किसी को पता भी नहीं था कि 'स्वामिनारायण' कौन हैं? मगर **काकाजी, गुरुजी – सब संत इधर आए और** आप **सब के साथ ऐसा कुटुंबभाव पैदा किया,** तो आज आप सब लोग आए हैं... कल यज्ञ में जो भी बैठ सकें वो बैठेंगे और बाकी के हम सब यज्ञ में दूर ही बैठे हुए मन से भावना करें, मन से आहुति दें - वो प्रभु तक पहुँच जाएगी। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

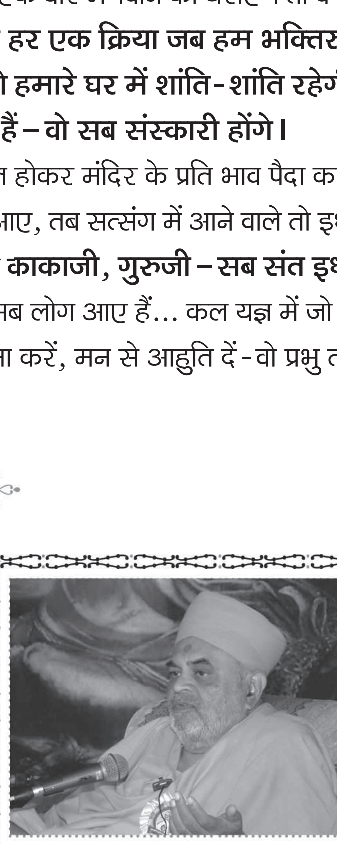

आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए और संतपुरुषों के आशीर्वाद के लिए कैसा जीवन जीना चाहिए, इसके बारे में अभी दिनकरभाई ने बहुत अच्छी तरह से दृष्टांत के साथ हमें समझाया। विशेष तो, निर्मलस्वामिजी ने पप्पाजी, काकाजी, हरिप्रसादस्वामिजी - इन सबका दृष्टांत देकर एक बहुत सुंदर – बहुत अच्छी बात बताई कि **संतपुरुष-गुणातीत पुरुष हमें जो आज्ञा करें, उसमें कैसी श्रद्धा और विश्वास रखना चाहिए** और... हम सब के जीवन में - संतों के जीवन में, भाईयों के जीवन में,

सब के जीवन में यही एक अहम् बात है कि **हमें जो गुरु मिले हैं, उनके वचन में विश्वास रखना है।** अपनी प्रकृति, स्वभाव और अपनापन जो है, वो सब इनकी कृपा से ही निकलेगा। हमें ऐसी **उच्च आध्यात्मिक भूमिका में जाने के लिए उनका यह आशीर्वाद ही काम आएगा।**

योगीजी महाराज हमें बताते थे कि सबसे बड़ी बात यही है कि **जो पुरुष हमें मिले हैं, उनकी आज्ञा का बिना सोचे पालन करना चाहिए** ...मतलब कि-उनकी आज्ञा में हमें कोई विचार नहीं करना है। निर्मलस्वामी ने यही बताया कि 'चन्द्रमा को भगाओ'–उसमें हम विचार करने जाएंगे, तो यह नहीं हो सकता है। भगतजी महाराज को गुणातीतानंदस्वामिजी ने बोला कि–गिरनार (पर्वत) को बुला लाओ। गिरनार (पर्वत) तो आने वाला नहीं था, मगर भगतजी महाराज ने 'आएगा कि नहीं आएगा' ऐसा कोई विचार नहीं किया। वो तो बोले कि मैं जाऊँगा और उसको माथा टेक कर बोलूँगा कि 'भई! हमारे गुरुजी तुझे बुलाते हैं;' आएगा तो ठीक है, नहीं आएगा तो उसकी मर्जी-वो विमुख होगा। मुझे तो आज्ञा पालनी चाहिए ना! जो हम भगवान भजते हैं, इसमें-साधना की प्रगति के लिए यह बहुत बड़ी चीज है। जो-जो साधक भगवान भजते हैं और आगे गए हैं, सबके जीवन में यह बात तो हुई है। सब के ऐसे प्रसंग भी हैं। बापा कहते थे कि **गुणातीत पुरुष जो हैं, वो कल्पवृक्ष हैं–चिंतामणी समान हैं। वो लोग जो बोलते हैं, वो होता है।** मगर हमारी समझ में नहीं आता है। हम बुद्धिप्रधान हैं, तो हमारी बुद्धि लगाते हैं। उसी कारण हम इनके वचन को कभी-कभी पाल नहीं सकते हैं। यह हमारी कसर अगर निकल जाए, तो हमारी साधना बहुत सरल हो जाए...

मगर यह बहुत कठिन बात है। इतना सरल जो साधक एक्ट करे, उसे लोग बुद्धू ही कहेंगे। लेकिन गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा है कि–**सत्पुरुष के पास-भगवान के पास जो ऐसा 'बुद्धू' होता है, वो ही भगवान भजता है।** मुकुंदजीवनस्वामी यहाँ पर हैं, उनका जीवन (आज जो) इतना सरल है-सिम्पल है, काकाजी के वचन का पालन करके यहाँ पर जो डॅवलपमेन्ट उन्होंने किया है, वो उनके लिए तो अशक्य ही है। **काकाजी कुछ भी बोले और उसमें सोचना ही नहीं और काम करने का एक्सट्रीम एग्ज़ाम्पल जो कोई अपने समाज में है, तो यह 'मुकुंदजीवनस्वामिजी' का है**; मैं अभी की बात नहीं करता हूँ। उनकी लाईक्स और डिसलाईक्स खूब शार्प थी और दिमाग़ तो इतना चलता कि वो कुछ भी मानने को तैयार ही नहीं हो सकता। मगर काकाजी भी इतने ग्रेईट कि उनकी तो कोई बात ही क्या करें? उन्होंने इनकी बुद्धि को एकदम डाईल्युट बना दिया और जो उनकी प्रकृति थी, वो आज दिखाई नहीं देती है। अभी हम देखते हैं, तो उनमें वह रंचमात्र भी नहीं है। **वो काकाजी के वचन में लय और लीन हो गए।** तो उन्होंने जो करके दिखाया है, वही बात हमें करनी है...

काकाजी तो बुद्धि में इतने प्रखर थे कि सारी दुनिया को वो लेकर घूम सकते थे। इन्टलेक्चुअली पप्पाजी-कांतिकाका ये सब भी टॉप लेवल के थे... फिर भी काकाजी, पप्पाजी और यह ताड़देव मंडल सब ने बोला है और बहनों ने भी भजन में बताया कि **'तमने संभारी मारुं बुद्धिने ताळु रे, दिव्य मूर्ति योगी तमने संभारु...'** तो काकाजी, पप्पाजी और बा एवं यह बहनों और भाईयों सबने तय किया कि अपनी बुद्धि जो है, उसको इन पुरुषों के आगे हम यदि यूज़ करेंगे, तो अपनी साधना में डिले होगा-लेट होगा। साधना नहीं होगी ऐसी बात नहीं है, मगर इट विल टेक टाईम... इसलिए निर्मलस्वामिजी ने आज बहुत अच्छी बात बताई और यह बात मुकुंदजीवनस्वामी के जीवन में हमने तादृश देखी है। हमने यह महसूस किया है अब तक।

गुरुजी में जो बात हुई है-बनी है, वो उनकी कृपा से वो हम सबको बाँट सकते हैं। पप्पाजी कहते थे कि जिसके

पास कुछ है, वो दूसरे को दे सकते हैं। जिसके पास है ही नहीं, वो क्या देंगे? आप **सब काकाजी के भक्त हैं**; मगर **काकाजी का साक्षात्कार करना है-काकाजी का आशीर्वाद प्राप्त करना है, तो वो गुरुजी के पास है-वो ख़ज़ाना!** और उनके पास से वो ख़ज़ाना लेने के लिए हम को क्या करना है? वो **गुणातीतानंदस्वामिजी ने** बात में **बताया है** कि –**'सत्संग का अर्थ क्या है?' दो हाथ जोड़ कर वो जैसा बोलें वैसा करते जाओ, उसमें बिल्कुल सोचो मत।** वो बोलेंगे– 'तुम बुद्धू हो, तुम कुछ समझते नहीं हो, ऐसा नहीं करते हो-वैसा नहीं करते हो;' फिर भी कोई बात नहीं। बस ऐसे ही करते जाओ। तो देखना, उसका रिज़ल्ट बहुत जल्दी-शॉर्ट टाईम में आएगा, वर्ना हम **अपने पुरुषार्थ से कुछ भी करने जाएंगे, वो नहीं हो सकेगा। गुरु की कृपा की आवश्यकता है ही है।** वो **गुरु की कृपा पाने के लिए** यह जो निर्मलस्वामी ने बताया-ऐसा विश्वास! **उनके वचन में विश्वास होना चाहिए और विश्वास होगा, वो काम होगा ही।**

हमने अक्षरभुवन में योगीजी महाराज की टॅक्नीकलर 'लीली' के हार वाली फोटो बनाई थी। तब वो कॉडाक कंपनी में से निकलवानी पड़ती थी। हम कॉडाक कंपनी में गए तो बोला कि–बीस रुपये का एक पड़ेगा। काकाजी ने यह जाना तो वे मुझे बोले कि यह क्या है? बीस रुपया इसका! तुम उसको बोलो कि दस रुपये में दे दे। अरे! इतनी बड़ी कंपनी है और वहां ऐसी बारगॅईनींग नहीं होती है, तो कैसे वो दस रुपये में कॉपी देगा? काकाजी बोलते तो हैं, मगर कैसे होगा? फिर भी मैंने सोचा–'चलो ट्राय करें'। तो हम कॉडाक कंपनी में गए और उसको बोला। वो जो काउन्टर पर था, वो बोला कि तुमको ज्यादा कॉपी चाहिए–सौ कॉपी चाहिए तो पंद्रह में निकाल देंगे। मैंने बोला नहीं, हमें और कन्सेशन चाहिए, हमें मैनेजर को मिलना है। मैं मैनेजर को मिला और बोला कि ऐसी सौ कॉपी हमें निकलवानी हैं–ये हमारे गुरुजी की है। तो वो बोलता है-कोई बात नहीं, चलो दस रुपये में दे देंगे। दस रुपये में कॉपी निकाल कर दी! मेरा कहने का मतलब यही है कि **ये लोग जो बोलते हैं, वही होता है।** मगर **हमको विश्वास नहीं होता है!** अपने हरिभाई साहेब हैं। राजकोट में काकाजी ने उन्हें बोला कि स्टेशन पर जाओ, टिकट बारी से पोस्ट कार्ड लेकर आओ। अरे! रेलवे स्टेशन की खिड़की पर रेलवे टिकट मिलता है, पोस्ट कार्ड थोड़ा मिलता है? मगर 'भाई' को विश्वास था, तो वो तो गए। रेलवे टिकट की खिड़की पर जाकर बोले–एक पोस्ट कार्ड दो! तो उसने पोस्ट कार्ड दिया!! यह विश्वास रखना बहुत बड़ी चीज है और ऐसा **विश्वास अगर हमें आ जाए, तो अपनी साधना खूब सरल हो जाए...** पप्पाजी-काकाजी वो परिणामवादी हैं। वे तो बोलते कि- 'मानिये के बोलिये तेनो दे ज़ीरो मारक, वर्ते के रुचि राखे तेने करे मूर्तिधारक...' तो, यदि वर्तने के लिए प्रयत्न करते हैं, वो प्रयत्न देख कर वे कृपा करते हैं और उनकी कृपा के सिवा तो कुछ हो ही नहीं सकता। और... ऐसे–वैसे तो वे कृपा करते ही नहीं हैं।

एक खानगी बात करता हूँ–ये लोग बोलें कि हम तुम पर बहुत खुश हैं, तो इनकी यह बात कभी नहीं मानना। मैं यह जो बोलता हूँ; मैं तो इनका दोस्त हूँ–सखा हूँ, इसलिए बोलता हूँ कि मुकुंदजीवनदासस्वामी कभी बोले कि मैं तो तुम पर बहुत खुश हूँ, तो बोलना कि तुम भले खुश हो-तुमको और खुश करना है। हक़ीक़त में तुम खुश हो, तो मुझे आपके जैसा वर्तन करने का जो मन करता है, वो चेइन्ज मुझ में आए–वो आपका राजीपा-प्रसन्नता है। बड़े पुरुष जो कहते हैं कि हम खुश हैं, ऐसे कोई खुश नहीं होता है। अगर हक़ीक़त में वो खुश होता है–अंतर से यदि उनकी प्रसन्नता होती है, तो हमारे अंतर में चेइन्जीस होते हैं और हमारा जीवन बदल जाता है। यदि वो पलटाव हो जाएगा-बदल जाएगा, तो हमें अंतर में महसूस होगा कि नहीं, हमको बहुत अच्छा लगता है कि–वी आर क्वाईट हॅपी, मूर्ति का सुख आता है, भजन अच्छी तरह से होता है, अपना भजन भगवान सुनते हैं। अगर यह महसूस होता

है, तो उनको बोलने की जरुरत नहीं। महंतस्वामी को एक बार पूछा कि – महंतस्वामी, आप कभी योगीजी महाराज के पास जाते नहीं हैं? तो बोले कि – मुझे कोई काम ही नहीं है, योगीजी महाराज को कोई आज्ञा देनी हो, तो वे मुझे बुला ही लेते हैं। मुझे कुछ खानगी करनी है ही नहीं। तो बात यह है कि **उनकी आंतरिक प्रसन्नता होती है, वो अपने को अपने दिल में महसूस होती है** कि वे हम पर बहुत खुश हैं, बहुत राजी हैं। ऐसा अपने को महसूस होता है, **वही सच्चा आशीर्वाद है - सच्ची कृपा है।** इसके लिए अहम् बात यह है कि निर्मलस्वामिजी ने बताया वैसे **उनके वचन में विश्वास रखना है।** वे कुछ भी बोलें तो उसमें विश्वास रखना है। **ऐसा विश्वास रखने का ये उत्सव है।**

कल पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा है और गुरुजी का जन्मदिन है। ऐसे दिन हमारे अंतर में खूब आनंद रहता है और तब **ऐसे एट्मॉस्फीयर में हम प्रार्थना कर दें तो प्रभु को पहुँच जाएगी।** तो, ऐसी प्रार्थना करें कि **हम इनकी कोई भी आज्ञा अंधविश्वास रख कर मान लें, मगर शंका ना करें और वे जैसा कहें, वैसे करें! तो हमारी प्रगति - आध्यात्मिक उन्नति बहुत स्पीडी - कॉन्कर्ड की स्पीड से होगी...** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

२४ मार्च, २००७ प्रातः – यज्ञ के पश्चात्

प.पू. दिनकरभाई

आज बड़े आनन्द का दिन है... हर एक के ऊपर ये संतों की कृपा दिखती है। **यज्ञ की कुंडी** भी एक होने की बजाय **धाम, धामी और मुक्तों की तीन कुंडियाँ बनी हैं।**

पिछले एक हफ्ते से मैं देख रहा हूँ कि जो भी गुणातीत स्वरूप इधर आने वाले हैं, उन सब की व्यवस्था में **गुरुजी** बहुत निमग्न थे। हर एक को वे ऐसी सूचना, इन्सट्रक्शन्स या तो डाईरेक्शन देते रहते हैं। जो भी स्वरूप इधर आते हैं, उनके लिए गुरुजी के दिल में बहुत बड़ी-बड़ी भावना रहती है। इतना ही नहीं, जो कोई भी हरिभक्त इधर आता है, उनके प्रति भी गुरुजी की ऐसी ही दिव्य भावना रहती है जैसे कि काकाजी पधार रहे हों। उससे भी आगे, गुरुजी कहते हैं कि – **बाहर से जाते - जाते भी कोई इस मंदिर का दर्शन करेगा – सद्भाव लेगा उनका भी काकाजी और गुणातीत स्वरूप परम कल्याण करेंगे।** तो, आज बहुत पवित्र जगह पर इतने स्वरूपों का हमें दर्शन हो रहा है। वो हमारे भाग्य की बात है।

आज यज्ञ हुआ, पप्पाजी बैठेंगे। पहले '९४ में गुरुजी ने इधर बहुत बड़ा यज्ञ किया था और बड़े पैमाने पर शोभायात्रा भी निकली थी। काकाजी को इधर बिठाने के निमित्त में सभी संत आनंद कर रहे थे - नाच रहे थे - कूद रहे थे। सब बहुत-बहुत आनंद में थे... कल ऐसा मौका फिर मिलने वाला है। यूं चार पर्व इकट्ठे हुए हैं। आज पहले यज्ञ की विधि हुई। दूसरा आज शाम को साहेब का प्राकट्य दिन मनाने वाले हैं। कल सुबह पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठा होगी और कल शाम को गुरुजी का ७०वां बर्थ - डे मनाया जायेगा।

गुरुजी वैसे ७० साल के दिखते नहीं हैं... वैसे गुरुजी का ऊपर से फेस देखें तो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण या तो गुणातीत मूर्ति की तरह अखंड जवान हैं और उनसे भी आगे वो सेवक के सेवक बन के इधर रहते हैं। गुरुजी ने इधर कहीं भी अपनी मूर्ति या कुछ नहीं रखा है...

स्वामिनारायण भगवान के समय के बहुत मंदिर हैं, बहुत हरिभक्त हैं... **आज गुरुजी एक नया रहस्य दोहरा रहे हैं। जैसे बॅप्स के मंदिर में शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की मूर्ति है। अक्षरपुरुषोत्तम**

की उपासना का वह रहस्य है। वैसे ही हमारे गुणातीत समाज के अंदर काकाजी और पप्पाजी – वो अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्तियाँ हैं... वो दोनों स्वरूप एक हैं। दोनों स्वरूप के अन्दर की प्रतिभा भी एक है। मगर पप्पाजी ने बहुत गरीब स्वभाव रखा। कहीं भी सभा होगी तो काकाजी गर्जना करेंगे और पप्पाजी बहुत चुप रहेंगे - सुनेंगे। ये **दोनों का ऐसा सांझा भाव था।** आज मूर्तिप्रतिष्ठा के दिन पर हम ऐसी भावना लेकर जाएं – ऐसी शाश्वत् स्मृति लेकर जायें कि ये दोनों स्वरूपों का - ये अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का रहस्य हमारे दिल में पक्का बैठ जाए। वो रहस्य जब तक नहीं बैठेगा, तब तक जैसे कि कल अक्षरविहारीस्वामिजी ने बोला था – हमें फल प्राप्त नहीं होगा और... फल प्राप्त हो, तो हमारी परिस्थिति बदल जाएगी – हमारा कलेवर बदल जायेगा – **हम ब्रह्मरूप हो जाएंगे। यही तो गुणातीत स्वरूपों का और ये सब स्वरूप – जो आये हैं, बैठे हैं उन सबका ये परिश्रम है।** तो ये परिश्रम हम जल्दी ही सफल करें। वर्ना, अक्षरविहारीस्वामिजी कहते हैं कि होने वाला तो है ही, मगर लम्बा होगा – वो लम्बा नहीं करना है... जय स्वामिनारायण!

प.पू. साहेबजी

...**गुरुजी का एक नए तरीके से 'बर्थ डे' मनाया जा रहा है।** गुरुजी को काकाजी, पप्पाजी के प्रति योगीजी महाराज के प्रति कितना भाव – कितनी भक्ति है; उसका वो दर्शन करा रहे हैं... **पप्पाजी बोलते थे – गुरुजी एक कॉस्मोपॉलिटन सेईन्ट – साधु हैं। कॉस्मोपॉलिटन साधु हूँ। गुरुजी भी** दिया गया। आज यज्ञ में पूरे समाज को पंजाबी, गुजराती सबको खड़े कर दिये। **कर रहे हैं। बहुत बुद्धिमान, जिसको करते हैं, तो स्पीरिचुअल एनालेसिस** का हमको दर्शन होता है। **ऐसे साधु भगवान और काकाजी ने उत्तर प्रदेश बहुत-बहुत कृपा की है।** इसलिये वो वाले 'फावी' गया (यू.पी. वालों को फायदा से ही हमारा जीवन बदलता है। जीवन दर्शन करो - सेवा करो - ऐसा करो - वैसा है, अपना **स्वभाव - प्रकृति को चेईन्ज अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना श्रेष्ठ**

हम सबको सुखी करने के लिए कई कितनी कठिनाई झेल कर हम सबको रूप होते हैं। 'ऐसे साधु में प्रभु हैं' – ऐसा

काकाजी खुद बोलते थे कि मैं ऐसे हैं, इसलिये उनको दिल्ली भेज इकट्ठा कर दिया। मारवाड़ी, जाट, **कद छोटा है, लेकिन काम बहुत बड़ा बोलते हैं – 'जीनियस'! वो जो बात खूब अच्छा करते हैं।** उनके 'संतत्व' **की भेंट देकर स्वामिनारायण वालों और दिल्लीवासियों के ऊपर** लोगों ने भजन में बोला है हम यू.पी. हो गया)। ऐसे साधु के साथ लगाव होने ऐसे ही नहीं बदलता। मंदिर जाओ - करो, लेकिन अपने जीवन को बदलना **करना है; तो उसके लिये मार्ग है।**

शास्त्रीजी महाराज - योगीजी महाराज ने अद्भुत मार्ग दिया। ऐसे साधु प्रभु के मानकर उनका दर्शन करके उनकी आज्ञा का पालन करें, तो हमारा जीवन रूपांतरित होता है। दिल्लीवासियों को आते - जाते हर साल मिलते रहते हैं। इन सबको – गृहस्थ को भी देखते हैं, तो पूरा जीवन का ढांचा बदल गया होता है। हमारा विजयपाल और शशिबेन – पूरा

समाज देखो, वो अपने घर को गुरुजी का ही मानते हैं, अपना नहीं मानते हैं। **गृहस्थ यदि धन-धाम, कुटुंब-परिवार सत्पुरुष के लिए बनाए रखे, तो उनको बंधन रूप नहीं है।** ऐसे जीवन जीते ये सब गृहस्थ भाईयों, बहनों और युवानों को देखकर लगता है कि गुरुजी ने कितना अद्भुत कार्य किया है, वह अपने आप समझ में आता है।

...और ये क्यों हो रहा है, उसका दर्शन ये काकाजी की मूर्ति, पप्पाजी की मूर्ति – उसको स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करके हमें करा रहे हैं। उन्हें पप्पाजी के प्रति, काकाजी के प्रति, योगीजी महाराज के प्रति, सोनाबा के प्रति कितना भाव है! योगीजी महाराज ने साधु बनाया, लेकिन साधु बनने में बा का प्रेम विशेष रूप से मदद में आया। और... साधु बन के क्या करना है, वो काकाजी और पप्पाजी ने अपने भाव से उनको बताया। तो वो भी पप्पाजी और काकाजी में एकरूप होकर योगीजी महाराज का जो कार्य था, उसे बढ़ाने में पूरा समर्पित होकर ये कार्य कर रहे हैं। **ऐसे साधु की आज्ञा से काम करने से वह 'सत्कर्म' बन जाता है...**

मुझे तो अंग्रेजों ने खिताब दिया है कि काका का लड़का हूँ। काकाजी के योग से - काकाजी के समागम से उनका हेत से हम सब पप्पाजी और बा के साथ रहे। लेकिन काकाजी ने, पप्पाजी ने, बा ने जो सिंचन किया है – इससे हमारा पूरा गुणातीत समाज हुआ है। **आज गुरुजी को ज्यादा से ज्यादा अभिनंदन इसलिये देना है कि सबको इकट्ठा कर दिया।** शाम को हरिप्रसादस्वामिजी आयेंगे। हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, संत लोग, दिनकरभाई, भरतभाई, निर्मलस्वामी और इतना मास – इतनी संख्या में भगवे कपड़े वाली बहन लोग आ गईं। मैंने देखा तो पूरा कॅम्पस में भगवा छा गया है। **हम भी भीतर से ऐसे बन जाएंगे – उनके साथ रहो बस! सब में एक प्रभु को देखना;** पप्पाजी, काकाजी में तो प्रभु ही देखने हैं, गुरुजी और संत लोगों में भी देखने हैं। लेकिन **भक्तों में भी देखने हैं – वो हमारी साधना है।** उनके हेत - प्रेम से यह हो रहा है – हम देखते हैं।

आप कुछ मत करो बस वॉच करो; देखते रहो। इधर जो काम हो रहा है - चल रहा है, इन सब में एक-दूसरे के प्रति जो भक्तिभाव - माहात्म्य है। सब बहन लोग, गृहस्थ लोग को देखो; बातचीत करते, काम करते देखते रहो, तो आपको मालूम पड़ जायेगा कि ये पूरा अक्षरधाम है। **यहाँ भाव नहीं है - दिव्यभाव है, प्रभु का भाव है। प्रभु का भाव है तो देह का भाव छूट जायेगा।** सब भाव चले जाएं तो ऐसा भक्तिभाव कि प्रभु की प्रसन्नता के लिये मुझे कुछ करना है - इसमें से दिव्यभाव प्रगटता है। यूं ऐसे साधु - संतों के प्रेम से ऐसा भक्तिभाव आता है। गुरुजी के प्रेम में ये सब इतने लय हो गए हैं, तो अपने आप को भूलकर सब इकट्ठे होकर इतनी अच्छी तरह से एक - दूसरे से मिलकर - साथ रहकर, **योगीबापा का** जो **ब्रह्मसूत्र** था –

'संप, सुहृदभाव और एकता से काम करो; भगवान की शक्ति काम करेगी। आप नहीं करेंगे, भगवान करेंगे।' – ये ब्रह्मसूत्र इधर पूरा हो रहा है। ये देख कर – उनका दर्शन करके **हम सब को ऐसा होता है कि गुरुजी में प्रभु तो हैं ही, तभी ऐसा हो सकता है।**

गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर पप्पाजी की मूर्ति की कल प्राणप्रतिष्ठा होगी। गुरुजी और हम सब पप्पाजी के साथ रहे, उनसे मिले, उनके पास बैठे हैं। ये पप्पाजी की मूर्ति हूबहु बनाई है। गुरुजी इतने भाव से उनके पीछे लग गए थे। ये मल्कानी अंकल भी खुद जाकर मूर्तिकार के पास बैठे थे। कितना स्माईलिंग फेस है! कितना आशीर्वाद देती मूर्ति है! खुद का भाव है, तो ही ऐसा हो सकता है। **कोई आर्टिस्ट या कोई शिल्पी मूर्ति बना देगा, लेकिन भीतर का भाव - प्रभु का भाव जो प्रगटता है, वो गुरुजी की भक्ति से आया है।** ऐसी भक्ति वे हमको सिखाते हैं। जिसके

साथ हम जुड़े हुए हैं – जिस साधु के साथ हमको प्रेम है, वो साधु के प्रति ऐसी हमारी भक्ति बढ़ती जाए, ऐसी गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर प्रार्थना करते हैं। **आपने संप, सुहृदभाव और एकता से पूरा काम करा हुआ है और पूरा गुणातीत समाज – हम एक हो रहे हैं। भीतर से अहंकार टलता जाएगा, मेरापन टलता जाएगा, तो अपने आप संप, सुहृद्भाव और एकता प्रगटता जायेगा।** लेकिन, **तब तक हम एक-दूसरे के गुणगान महिमा गाकर, एक-दूसरे को ऐसे सपोर्ट करके भक्ति करते रहें।** ऐसा हम सबको बल, बुद्धि और प्रेरणा मिले।

दिनकरभाई को ज्यादा अभिनंदन कि – मार्च के पहले वीक में पप्पाजी के अस्थि विसर्जन-शाश्वत् स्मृति पर्व पर आए थे और अब फिर वे आए। अमेरिका नज़दीक नहीं है। हम गुजरात से आने वाले को तकलीफ पड़ती है कि आएं या ना आएं... मैं दोपहर को आने वाला था। मैंने सोचा कि यज्ञ में मेरा कोई काम नहीं है। यज्ञ की पूर्णाहुति के टाईम पर पहुंचने वाला था, तो गुरुजी का फोन आया कि ऐसा मत करो, अर्ली मॉर्निंग आओ। हम अर्ली मार्निंग निकले, तो अच्छा हुआ; सबका दर्शन हुआ, मूर्ति का-पूजन का लाभ मिला... हम सब ऐसे भक्तिभाव से – ऐसे एक-दूसरे के प्रति भीतर से माहात्म्य के भाव से मिलते रहें। पप्पाजी बोलते – 'आ पळ धामरूप रेहवुं छे।' **'आ पळ धामरूप' – अर्थात् मुख पर अखंड हास्य – आत्मा में सदा प्रसन्नचित्त रह पाएं – ऐसा हमारा सभी का जीवन हो...** जय स्वामिनारायण।

प.पू. ज्योति बहन

दो दिन से जो ये उत्सव में दर्शन कर रहे हैं, तब ऐसा लगता है कि १९५२ के वर्ष से काका, पप्पा और बा जो सत्संग करते थे; उसका तादृश दर्शन अभी हो रहा है। उस समय **काका और पप्पा ने योगीबापा को यथार्थ पहचाना था** और योगीबापा की पहचान कराने के लिए बिगुल बजाया था कि – **'जोगी भगवान हैं, जोगी भगवान हैं, जोगी भगवान हैं, जोगी भगवान हैं।'** यूं कहा जाए कि **यूं करके सारे समाज में योगीबापा की ध्वजा फहरा दी।** वर्ना तो शास्त्रीजी महाराज आए थे, उन्हें इस तरह किसी ने नहीं पहचाना। **गुणबुद्धि का सत्संग बहुत लोग करते थे, पर आत्मबुद्धि-प्रीति का सत्संग करना, तो काका-पप्पा और बा ने – इन्हीं लोगों ने किया।**

काकाजी को योगीजी महाराज ने साक्षात्कार करवाया और पप्पाजी बोले – ऐसा मेरा भाई, उसे भगवान वश हो गए और लोग कहते हैं कि वो पागल हो गया! तो अब इंडिया जाऊँ और यदि मेरे भाई ने भगवान वश किए होंगे, तो मैं उनके साथ रह जाऊँगा। यदि भगवान नहीं वश किए होंगे, तो मैं उसे लेकर आफ्रिका आ जाऊँगा। पप्पाजी यह विचार करके आए थे। लेकिन, दोनों सात वर्ष और नौ वर्ष के थे, तब अक्षरधाम पृथ्वी पर लाने का जो संकल्प किया था, वे ३३ वर्ष और ३६ वर्ष के हुए, तब योगीबापा ने सच में अपना कार्य उन्हें सौंपा और जोर-शोर से वह काम शुरु किया। बहनों का भी काम शुरु किया, संतों का भी काम शुरु किया। बापा को ५१ संत बनाने थे, उसमें भी काकाजी, पप्पाजी, बा बहुत भाग लेते थे। काकाजी और पप्पाजी दोनों एक ही घर में थे, वह बहुत अच्छा रहा। **योगीबापा ने एक ही घर के दो स्वरूपों की पहचान करवाई। दोनों भाईयों ने योगीबापा की पहचान करवाई और... ये दोनों स्वरूप भी अलग नज़र आते हैं दो, लेकिन हैं एक!** इस प्रकार उन्होंने बापा का कार्य किया। बापा काकाजी को बुलाते, काकाजी जाते और ये ताड़देव में हमारा अखाड़ा चलता। 'योगीबापा भगवान हैं' – का अखाड़ा चले और

उस दौरान युवकों में पहले अक्षरविहारीस्वामी, कोठारीस्वामी, ज्ञानस्वरूपस्वामी, माधवस्वामी और गुरुजी – ये पाँचों वहाँ – ताड़देव बा के पास आते थे। ये **गुरुजी किसी के बहकावे में आएं ऐसे नहीं थे और आते भी नहीं थे।**

...पर किस प्रकार उनके दिव्य प्रेम के लगाव में वे किस प्रकार साधु बन गए और किस प्रकार दूसरों को भी इस राह पर चलाने वाले बन गए! जहाँ जैसा सत्पुरुष की जरुरत हो, ऐसे चैतन्य को ढूँढ कर ऐसे स्थान में महाराज ने रखा और ऐसा फिल्ड दिया।

आज काका-पप्पा ने क्या किया? हम सभी को फिल्ड दिया। **उन्होंने अपने में जोड़ कर नहीं रखा। सभी को अपने जैसा सामर्थ्य दिया और सभी को अपने जैसी स्वतंत्रता दी।** तब भी खुद तो परे के परे रहे। वह उत्सव आज मनाया जा रहा है। **काका और पप्पा अलग नहीं हैं, सच में एक हैं।** वे एक ही कार्य करने आए थे। पप्पाजी का ४५वीं साल का एक पत्र है कि दादुभाई हम यह कार्य करने नहीं आए हैं। हम दुनिया में कुछ नया करने आए हैं। वह यह कि खुद 'मैं ब्रह्म-मैं प्रकाश – मैं दास' बन कर जिए और हम सभी को प्रकृति – स्वभाव से परे रह कर जीना सिखाया। **काका-पप्पा भगवान के स्वरूप होते हुए भी खुद हम सभी में विलीन भी हो गए।** उन्होंने किसी को भी उसके 'अहं' का ख्याल देने का कभी प्रयत्न नहीं किया। वे दास के दास हो गए, हम सभी में समा गए और हम सभी को ऐसा फिल्ड दिया।

सच में गुरुजी को बहुत धन्यवाद कहा जाए, बहुत धन्यवाद कहा जाए कि **जब १९९४ की साल में काकाजी की मूर्ति पधराई – तब समाज के विरोध में काका की मूर्ति पधराई थी और सच में जो काका के पास सीखे, वह ज्ञान उन्होंने सभी को दिया। 'संप, सुहृद्‌भाव, एकता' रखने का ज्ञान सच में गुरुजी ने सभी को सिखाया और उसका डंका मारने, दोबारा ये काका और पप्पा दोनों का सात और नौ वर्ष का जो स्वप्न था, वो आज उन्होंने साकार किया।** यह साकार करने **आज हुबहु पप्पाजी की मूर्ति – सच में यूं लहू बहा कर काम किया** कहा जाए। कितनी बार जयपुर गए! जयपुर कोई यहीं नहीं है। रात-दिन देखे बिना दौड़ाभागी करनी। सुबह जाकर, शाम को वापिस आना। रात को बारह-बारह, एक-एक बजे आते होंगे।

तुम मूर्ति का जितना मनन-चिंतन करो, इतना तुम्हारा जगत खारा होता जाए। यह हम सब 'ज्ञान' में तो समझते हैं। पर, गुरुजी ने 'विज्ञान' शुरु किया और खुद वे रूप हो गए!

और... आज **काका , पप्पा, बा अक्षरधाम में बैठे-बैठे** देखते होंगे। सच में इन लोगों ने कसनी भी इतनी सही है, पर **आज आनंद भी इतना ही करते होंगे कि ये सभी बाँट कर खा रहे हैं।** आज हम सब बाँट कर खा रहे हैं। **हमारी जो कोई त्रुटि हो, वह छोड़ दें** और हम सब संप, सुहृद्‌भाव, एकता की राह पर – जैसे योगीबापा ने शुरुआत में यही किया कि काका-पप्पा और कांतिकाका के कुटुंब को एक करके 'संप, सुहृद्‌भाव, एकता' की जो घोषणा करी थी और पप्पाजी ने 'पराभक्ति की सौरभ' के आख़िरी पन्ने पर यही लिखा है कि उनका हेतु क्या है कि **हम सब संप, सुहृद्‌भाव, एकता से रहें** – यही करें और **यह करने के लिए** सभी स्वरूप **दूर-दूर से आए हैं।** दिनकरभाई को देखें तो २०-२२ दिन हुए होंगे और तब भी दौड़ कर आना, कोई आसान बात नहीं है। इसे माहात्म्य कहा जाए, माहात्म्य! और टॉप मोस्ट चीज कही जाए!

इसलिए हम सभी को वह माहात्म्य – काका -पप्पा -बा एक ही चीज चाहते थे; छोटे से छोटा – अल्प संबंधवाला माथे का मुकुट! यह उन्होंने देखा। तो अभी यही दिखाई पड़ता है कि जितने-जितनों को प्रत्यक्ष का संबंध है। जिन-जिन्होंने काका, पप्पा, बा का सेवन किया है, गुरुजी का सेवन किया है, साहेब, दिनकरभाई, हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी का सेवन किया है, (उनमें) वह (माहात्म्य) अभी हमें दिखाई दे रहा है। इसलिए उन सभी को

खूब-खूब प्रार्थना कि **हमारे में अभी भी जो रही-सही त्रुटि हो, वह आप जल्दी से निकाल देना** और हम भी **जैसा आपको चाहिए वैसा बनें** और **आपके अंतर में ठंडक करें**, ऐसा कर देना यही प्रार्थना! जय स्वामिनारायण।

प.पू. हंसा दीदी

आज दिन बहुत बड़ा है... ये **गुरुजी आज हमारे सामने एक आदर्श स्वरूप बने हुए हैं।** क्यों? योगीजी महाराज का संकल्प था दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर बनाने का और काकाजी ने इस आज्ञा को प्रत्यक्ष स्वरूप दिया। प्रत्यक्ष रूप में गुरुजी ने साकार किया। गुरुजी को पहले जब दिल्ली भेजे, वे कैसे आए थे? यहां दिल्ली में तो एक नवलबा थीं, और कोई नहीं। आज देखते हैं कि 'आज्ञा' का क्या महत्व है? कल बातें हुई थी; निर्मलस्वामिजी ने बताया था – दिनकरभाई ने भी बताया था। अक्षरविहारीस्वामिजी ने तो कल बहुत-बहुत कृपा करके आशीर्वाद दिया। और... ये बातें करके हम सभी को गुरुजी का माहात्म्य समझाने का भरसक प्रयत्न किया था। अक्षरविहारीस्वामिजी तो अभी बीमारी से ही आए हैं। लेकिन कल का उनका जो स्वरूप था, अलग था। **क्योंकि गुरुजी ने ऐसा कार्य किया है।**

हमारा जो बहनों का मंदिर है, वहाँ तो पट की मूर्ति-तैल चित्रप्रतिमा रखते हैं। **हमें ऐसा था कि हमारे पप्पाजी और काकाजी की ऐसी मूर्ति हो कि अक्षरपुरुषोत्तम महाराज और शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज के साथ बैठा कर उन्हें भी थाल-आरती सब करा जाए।** क्यों? स्वामिनारायण भगवान के समय से सत्संग में दो भाग थे; एक गृहस्थ और एक त्यागी संत। लाडूबा – जीवूबा जैसी त्यागी बहनें थीं, लेकिन इनका कोई अलग विभाग नहीं था। पप्पाजी, काकाजी ने यह नया कार्य किया। योगीजी ने इसलिये ही उन्हें संस्था से अलग किया – जिसे संस्था में बोलते हैं – 'विमुख'! लेकिन पप्पाजी बोलते हैं – 'पार्टीशन'। योगीजी ने पार्टीशन इसलिये करा कि जो कार्य मुझे आपके पास कराना है, वो आप यहां संस्था में रहकर नहीं कर सकेंगे। वहाँ किसी की ताकत नहीं है कि आपको यह करने दे। योगीजी महाराज तो प्रत्यक्ष भगवान का स्वरूप थे; यूं उन्होंने ही बहनों का कार्य '५२ से शुरू कर दिया था। पप्पाजी – काकाजी ने सत्संग का कार्य करने के लिए अपना घर-बार सब कुछ एक बाजू पर रख कर उन्होंने योगीजी महाराज की ही आज्ञा को – वचन को जीवन में स्थान दिया। योगी का कार्य वे लोग ही कर सकते थे।

गुरुजी ऐसे संत हैं जिन्होंने पप्पाजी-काकाजी के कार्य का दिल से स्वीकार करके, उनकी मूर्ति पधराने का इतना बड़ा जोखम लिया है। यह सामान्य कार्य नहीं। ऐसे **गुरुजी हमारे पप्पाजी और काकाजी, बा के वारिसदार बन गए।** क्योंकि पुत्र ही अपने पिता के कार्य को चालू रख सकते हैं। तो **गुरुजी ने पप्पाजी, काकाजी और बा की पीढ़ी चालू रखी।** मूर्तिप्रतिष्ठा करके जो श्वेताम्बरी स्वरूप हैं, उनको भी शास्त्रीजी महाराज योगीजी महाराज जैसे काशाम्बरी स्वरूप समान मान लिया। अब **प्रतिष्ठा हो गई, थाल-आरती होगी। तो प्रार्थना करना, वे जरूर काम करेंगे।** हमारे (यहां) पप्पाजी की ऐसी फोटो भी काम करती है, तो ये तो प्रत्यक्ष हैं। हम तो मानते ही हैं कि पप्पाजी गए ही नहीं, लेकिन हमारी प्रार्थना सुनने वाले जब मूर्तिस्वरूप में सामने होते हैं, तो अधिक आनंद आता है। मीरांबाई ने इतनी छोटी-सी मूर्ति में कृष्ण भगवान को देखा और साक्षात्कार किया तो वो प्रभुमय बन गई थी! ऐसे ही पप्पाजी, काकाजी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की तो प्रतिष्ठा हो चुकी है।

पप्पाजी जब तक अक्षरधाम नहीं सिधारे थे, तब तक गुरुजी ने सिर्फ काकाजी की मूर्ति रखी थी; लेकिन उसको फीक्स नहीं करवाया था। अब दोनों साथ में खड़े हैं और हमारी आवाज़ सुन कर काम करने के लिए वे खड़े-खड़े रहेंगे।

मैंने पप्पाजी को कहा है – पप्पाजी ! मैं तो दर्शन करके बैठ जाऊंगी, लेकिन आपको तो खड़ा ही रहना पड़ेगा क्योंकि सारा भक्तगण आपको प्रार्थना करेंगे और वहां डॉक्टर नीलम भी आप को रोकेंगी नहीं – कोई नहीं रोकेगा। आपको अवश्य काम करना ही पड़ेगा और वो काम करेंगे। काकाजी काम करते हैं और प्रत्यक्ष में कुछ प्रार्थना करनी हो, तो गुरुजी तो हैं ही। और आज का यज्ञ... बहुत सालों के बाद ये यज्ञ का दर्शन किया; गोंडल जाते थे तब यज्ञ होता था। आज ये धाम, धामी और मुक्त के – ऐसे यज्ञ में हमें जपयज्ञ करना है, स्मृतियज्ञ करना है और सेवायज्ञ करना है। यही हमारा जीवन है। शरीर अच्छा हो, तो देह से सेवा कर सकते हैं। गृहस्थों के लिए – वे धन से शक्तिशाली हो, तो धन से सेवा कर सकते हैं और मन से स्वस्थ हो, तो प्रार्थना से भी सेवा कर सकते हैं। वो प्रार्थना कैसी कि ज्योति बहन ने एक संकल्प बताया कि सारे गुणातीत समाज में संप, सुहृदभाव और एकता हो, ये मेरा संकल्प है – यानि पप्पाजी का। और दूसरा संकल्प – पप्पाजी ने वो ही पेज में लिखा है कि अंत्य. ३५ वचनामृत की कक्षा के जो हैं वो अंत्य. २६ वचनामृत में जाएं। मतलब, भगवान के पास मनोरथ सिद्ध कराने जो आते हैं, वे उस भूमिका से भी पर – भगवान की जो आज्ञा आती हो, वो भगवान की रीत से हमारा मन, इंद्रिय - अंतःकरण सेवा कर सके – 'मेरा मन' ना रहे; मन में जो कुछ उठता हो (उसमें) समझ तो सकते हैं कि यह भक्ति नहीं है, तो हम नहीं कर सकें; ऐसी जो प्राप्ति – अंतिम प्रकरण का २६ वचनामृत की – वो हमारे जीवन में साकार हो जाए, ऐसा पप्पाजी का संकल्प था; तो जरूर होगा।

पप्पाजी का देहांत हुआ, लेकिन उनकी शक्ति का अंत कभी नहीं है। वो तो आज गुरुजी के द्वारा चालू है और साहेब हैं, हरिप्रसादस्वामिजी – सभी स्वरूप हैं ही...

जब से पप्पाजी विद्यानगर आए, तब से साहेब पप्पाजी के पास एक दास बन कर आते थे। लेकिन पप्पाजी ने उनको कभी दास नहीं समझा। '६७ की पौषी पूनम के दिन २६ जनवरी थी – गुरुवार था। तब तक समाज में संत और गृहस्थ दो ही (विभाग) थे। बाद में बहनें हो गईं और कर्मयोगी व्रतधारी भाइयों की नई पंखुड़ी पप्पाजी, काकाजी और बा ने तब खोली। वो था '६७ की छब्बीस जनवरी, गुरुवार – पौषी पूनम – गुणातीत का दीक्षा दिन। पप्पाजी तो उस समय से कहते हैं ये सब स्वरूप हैं... पप्पाजी, काकाजी बा कहते थे कि अंत्य. २६ की कक्षा में रह कर जो कोई कार्य कर सकते हैं, वो स्वतंत्र है। तो पप्पाजी, काकाजी और बा ने साहेब को ऐसी स्वतंत्रता भी दी। अक्षरविहारीस्वामिजी, हरिप्रसादस्वामिजी का पप्पाजी खुद बहुत माहात्म्य गाते थे। इसलिये हम सबमें उनके माहात्म्य का साक्षात्कार हो गया है। तो यह माहात्म्य ही हमारे जीवन का सुख है। **कभी भी किसी का कम माहात्म्य समझते हैं, तब पप्पाजी दिल में जोर-जोर से बोलते हैं कि – 'मुझे दुःख होता है, मुझे दुःख होता है, मुझे दुःख होता है।'** सबके हृदय में प्रभु बैठे ही हैं। **प्रभु की आवाज़ सुनने के लिए हमें 'जाग्रत' रहना है।**

पप्पाजी के चरणों में प्रार्थना है कि आप तो आज यहां खड़े हैं, कल तो ऊपर मंदिर में पहुंच जायेंगे। प्रतिष्ठा हो जाएगी लेकिन हमारे हृदय में तो आपकी प्रतिष्ठा हुई है। आप हृदय से अलग नहीं, दूर भी नहीं हो, लेकिन आप सब में विराजमान हैं – ऐसा भाव करके मैं दर्शन करूं और 'वचन' – जब मुझे ऐसा लगे कि मेरे 'स्वधर्म' से चूक जाऊँगी, तो (आपका) ये 'वचन' मानने का मैं सिन्सियर प्रयत्न करूं और आपकी प्रसन्नता को प्राप्त करूं ऐसी मुझे शक्ति देना, बल देना, प्रेरणा देना। जय स्वामिनारायण।

प.पू. दीदी

सबसे पहले तो, हम सबके लिये अक्षरधाम से धरती पर आए सारे गुणातीत स्वरूपों और काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब, दिनकरभाई – इन सब प्रगट स्वरूपों को प्रणाम सहित जय स्वामिनारायण।

आज सारा नज़ारा देख कर अक्षरधाम का आनंद महसूस हो रहा है। कल ही ज्योत की बहनें जब आईं, तो इन बहनों में ही किसी ने बोला कि **४० साल में पहली बार ही ऐसा हुआ है कि हमारा ग्रुप एक ही महीने में इस तरह दो बार निकला है** – फर्स्ट टाइम ऐसा हुआ है। **जब से पप्पाजी की मूर्ति बनवाने का संकल्प गुरुजी ने लिया, तब से उनकी बहुत इच्छा थी कि जब प्रतिष्ठा हो तब सारा गुणातीत समाज हाज़िर हो** और आज वो साकार देख कर मन में बहुत खुशी हो रही है। हम सब समझ सकते होंगे कि **ये सब देखकर गुरुजी के दिल को कितना आनंद मिल रहा होगा।** तो सबसे पहले गुरुजी को धन्यवाद कि **आज उन्होंने ऐसा मौका बना दिया कि हम सब यहां इकट्ठे हुए** और आज ये दर्शन का हम लाभ ले रहे हैं।

१९७८ से मेरा सत्संग में आना हुआ। यहां तो 'स्वामिनारायण' नाम को कोई जानता ही नहीं था। देवी माँ, राम, कृष्ण, हनुमान इन सबकी पूजा होती थी, लेकिन 'स्वामिनारायण धर्म' यहाँ के लिए बिल्कुल नया था। काकाजी तीन-तीन महीने में यहां – दिल्ली आते थे। मैं तब शायद १६-१७ साल की थी। ऐसे **काकाजी के रूप में भगवान के स्वरूप का दर्शन हो रहा है, वो बात गुरुजी ने कृपा करके बिठा दी।** हमने तो गुजरात का – बॉम्बे का समाज तब तक देखा भी नहीं था, नए-नए थे। पर, **काकाजी के हर प्रवचन में अकसर आता कि – हमारे स्वामिजी को देखो, हमारे पप्पाजी को देखो – मेरा भाई बहुत सिन्सियर! बहुत प्रमाणिक! अक्षरविहारीस्वामिजी को देखो, मेरे साहेब को देखो, ज्योति बहन – तारा बहन को देखो!** और... हमने तो किसी को देखा नहीं था। सो, **मन में काकाजी ने ही ऐसी महिमा भर-भर के ऐसी ललक जगा दी थी कि कब इन लोगों का दर्शन करें?** वो महिमा उन्होंने हमारे भीतर – मानो ब्लड में डाल दी थी। तो एक लालसा बनी रहती थी कि वो लोग आएं और हम उनका दर्शन करें। काकाजी ने बहुत परिश्रम लिया है यहाँ के लिए। दिन-रात, धूप-सर्दी कुछ भी उन्होंने नहीं गिना। **आज ये जो सारा दिखाई पड़ रहा है, वो काकाजी-गुरुजी के परिश्रम के फलस्वरूप दिखाई दे रहा है।** हमारा उसमें कुछ भी नहीं है। हमने तो कुछ भी साधन नहीं किया है। पर, उनकी कृपा के कारण, उनके परिश्रम के कारण हम ये सारा दर्शन कर पा रहे हैं।

आप सबको आश्चर्य होगा **जिस दिन से पप्पाजी की मूर्ति यहाँ कॅम्पस में लाए हैं, उस दिन से** कम से कम १५-२० जनों ने मुझे कहा कि – दीदी, **ऐसा** नहीं **लगता है कि पप्पाजी अपने कॅम्पस में ही हैं।** तो ये बात सबूत देती है कि **ऐसे 'स्वरूप' गए ही नहीं हैं और पहले से भी अधिक व्यापक रूप में कार्य कर रहे हैं।** वर्ना बीस-पच्चीस जनों को ऐसा कैसे महसूस हो? एक जने को हो, दो जनों को हो – वो तो समझ सकते हैं, पर सभी को

हो वो कितनी बड़ी बात है ? तो **जब से पप्पाजी ने इस कॅम्पस में एन्टर करा तभी से पप्पाजी ने बता दिया कि मैं यहां पर दादु के साथ खड़ा ही हूँ।**

एक पिक्चर आई थी 'देवदास' – वो सब गृहस्थ हरिभक्त देखकर आए। फिर उन्होंने गुरुजी को बताया कि गुरुजी उसमें एक बात बहुत अच्छी है। उसमें 'चंद्रमुखी' है – जो एक गणीका है और 'पारो' है – जो उसकी प्रेयसी है। पारो कुछ चंद्रमुखी को डांटने आती है कि तुमने देवदास को यहां अपने पास क्यों रख लिया है ? और कहती है कि मैं देवदास को यहां से ले जाऊंगी। चंद्रमुखी उसे देवदास के कमरे में ले जाकर एक-एक चीज बताती है कि– *'देख! यहां की दीवारें देख – इसमें से खुशबू आ रही है देवदास की, बिस्तर पर पड़ी सिलवट देख – उसमें से देवदास की खुश्बू आ रही है। एक गिलास रखा होता है, जिसमें शराब आधी छोड़ी हुई होती है; वह दिखा कर भी कहती है – इसमें भी देख! इन सब चीजों में से देवदास को ले जा सकती हो, तो ले जा के बताओ। दरअसल, देवदास तो वहां होता ही नहीं है। पर कमरे की एक-एक चीज दिखा कर कहती है कि अगर तुम ले जा सकती हो – तुम्हारी ताकत है तो यहां से देवदास को ले जाकर बता।'*

इससे पारो को चंद्रमुखी के देवदास के साथ के एटेचमेन्ट का ख्याल आ जाता है। सुन कर – गुरुजी ने कहा – उसे तो भगवान व संत का कुछ पता भी नहीं है। एक स्थूल लेवल की मामूली व्यक्ति के लिए एक वो लेडी ऐसा कह सकती है कि देखो! यहां उसकी खुश्बू बसी है – यहां ये बसा है। तो हमें तो कितनी बड़ी प्राप्ति हुई है ? सो, **हमारे बीच में से काकाजी – पप्पाजी गए ही नहीं हैं– वे यहां ही हैं।**

हमने देखा है कि काकाजी को शरीर छोड़े **२१ साल** हो गए। लेकिन, **यहाँ एक भी ऐसा नहीं कह सकता कि काकाजी की कमी गुरुजी ने फील होने दी है।** वैसे की वैसे ही सारी प्रतीति – आनंद – मनोरथ सब वे पूरा कर रहे हैं और वैसे ही पप्पाजी को गुरुजी ने धाया हुआ है। तो वे भी सभी के मनोरथ – सभी के संकल्प पूरे करेंगे। यह मूर्ति सिर्फ संगमरमर की प्रतिमा नहीं है, जीवंत मूर्ति है। हम जिस भाव से इनको देखेंगे – **जिस भाव से इनकी आरती, पूजा, थाल करेंगे, वैसी ही वे हमें प्रतीति कराएंगे।**

तो अब जो कसर है, वो हमारी है। **इन स्वरूपों के देने में तो कोई कसर नहीं है – हमारे लेने में कसर है।** सो, अब इन स्वरूपों को तत्त्व से पहचानें। पिछले कई साल से **गुरुजी कहते रहते हैं कि सब 'कुटुंबभाव' से जियो।** बस एक-दूसरे का स्वीकार करके कुटुंबभाव से जिओ, ये अभी उनकी मर्जी है। **तो वे जो कराना चाहते हैं – हम सब उनकी मर्जी में जितना साथ देंगे, उतना हम निहाल हो जाएंगे।**

पप्पाजी एक बार फार्म हाऊस पर आए हुए थे और हम सब भी वहां सभा में थे। तब **पप्पाजी ने बताया था** कि **गुरुजी ने प्रथम का ५८ वचनामृत सिद्ध करा है।** उसमें ये बात है कि तुम स्वरूप को निष्कामी, निर्लोभी, निःस्नेही मानोगे वैसे तुम हो जाओगे। तो, आज काकाजी ने गुरुजी को जो दिया या ये सभी स्वरूप जो हमें देना चाहते हैं, वो लेने के लिए हमें हमारी झोली बड़ी करनी है। वो तो लुटाने ही बैठे हैं।

...एक बात का मुझे बहुत बार आनंद होता है कि सारे गुणातीत समाज में मैं सबसे छोटी हूं। हमारे लिये तो फूलों का रास्ता तैयार रखा है। जैसे-जैसे बड़े आगे चलते जायेंगे और हमारे को रास्ता दिखाते जायेंगे – बस उनकी 'हां में हां' और 'ना में ना' से हम चल सकें ऐसी प्रार्थना है।

२४ मार्च, २००७ सायं – प.पू. साहेब का प्राकट्योत्सव

पू. पुरी साहेब

सबसे पहले बाहर से आए मेहमान – 'मेहमान' शब्द शायद अच्छा नहीं; मेरे भाई एवं बहन – उनका ताड़देव में हार्दिक स्वागत व अभिनंदन... ये जो सौभाग्य पप्पाजी ने हमें दिया, उसके लिए हम बहुत-बहुत ऋणी हैं... पप्पाजी का गुरुजी से जो स्नेह हमने पिछले १५-१६ साल में देखा या महसूस किया, उसके बारे में शब्द जो हैं बहुत दूर की बात... पप्पाजी की तबियत नासाज़ हुई तब भी पप्पाजी ने कहा कि मुझे गुरुजी के जन्मदिन पर दिल्ली जाना है। तो गुरुजी ने कहा कि पप्पा! अब आप ना आएं। मैं अब हर साल आपके दर्शन के लिए विद्यानगर आया करूँगा। अपने गुरु के लिए – जिसको आप पूजनीय मानते हो, उन्हें मन की इतनी बड़ी बात पब्लिकली कोई कह पाए, ये गुरुजी के बस की बात है। मन की जो बात है, उसे कहने के लिए गुरुजी को शब्द ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ती है... तो गुरुजी के आदेश से हम आप के लिये जो सहुलियत कर पाये और इस आयोजन में हम से कोई त्रुटि रह जाए या हम कोई त्रुटि कर जाएं, उसके लिए हाथ जोड़ कर आप से क्षमा प्रार्थना है। आप अपने घर में आए हैं और खुले दिल से आप हमारी गल्ती के बारे में हमें बताएं। स्वामिनारायण संप्रदाय में समैया (उत्सव) तो नॉनस्टॉप चलते हैं। एक फंक्शन खतम होता है, दूसरे की तैयारी शुरू हो जाती है। ये स्टेज पर जो प्रभुरुप संत विराजमान हैं, इनके आदेश से हम जो कुछ भी करते हैं, हमारे लिये – वही समैया, वही फंक्शन, वही उत्सव है। इनका आदेश हम दिल से अपने मन में धार कर उसके मुताबिक जी पाएं ऐसा हमें बल, बुद्धियोग दें – ऐसी इनके चरणों में प्रार्थना।

पू. पियुषभाई (सुरत)

...**पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा-मूर्ति का स्थापन** यह तो **गुरुजी ने एक अद्भुत कार्य किया ही।** लेकिन इसके **साथ-साथ आध्यात्मिक इतिहास में उन्होंने प्राण भरे! काकाजी ने पप्पाजी को ज्योति बहन और तारा बहन के बारे पूछने के लिए बापा के पास भेजा।** तब बापा ने कहा था – बहनों भगवान भजे तो क्या गलत बात है? फिर जब पूछा कि बापा! अभी तो आप प्रत्यक्ष हो, लेकिन बाद में? तब आँखें झपकाते हुए बापा ने कहा कि **सत्पुरुष कहाँ अदृश्य होने वाले हैं?** गुणातीत स्वरूपों की ये बात – आज भी देखते हैं कि काकाजी को देह छोड़े कितने वर्ष हुए, लेकिन दिनकरभाई, गुरुजी, ताड़देव के सभी भाई भरतभाई – काकाजी थे और जो कार्य होता था, आज वैसा का वैसा ही कर रहे हैं।

गुरुजी का कैसा अद्भुत परिश्रम! **काकाजी का जो गुणातीत पुरुषों के साथ का संबंध – हरिप्रसादस्वामी, साहेब, पप्पाजी और बा के साथ का संबंध – वैसे का वैसा वारसा गुरुजी ने जीवंत रखा है। जैसे काकाजी करते थे, इसी प्रकार उन्होंने सारे समाज को इकट्ठा किया है। खुद सभी गुणातीत स्वरूपों को आगे रखते हैं। यहाँ सभी गुणातीत पुरुषों की मूर्ति है – भरतभाई और दिनकरभाई की भी है, लेकिन कहीं भी गुरुजी की मूर्ति नहीं है।** वे खुद छुपे रह कर काकाजी, पप्पाजी और बा को आगे रखते हैं।

ओरिजिनल वस्तु यही है – संबंध वाले का माहात्म्य! काकाजी, पप्पाजी, बा ने वह ताड़देव की धरती से शुरुआत करी। यह इतिहास हम सभी को पता है। पप्पाजी बहनों को ट्रेनिंग देते थे कि एक थाली यदि तुम मुझे धोने के लिए दो, तो मैं उसके दस रुपये दूँ। मतलब कि नौकर रख कर काम कराना और संबंध की महिमा समझ कर सेवा

करनी – ये दोनों चीजें अलग हैं। यह वारसा हमें दिया है काकाजी, पप्पाजी, बा ने। **सच में आज यहाँ सारा ताड़देव खड़ा किया है।** पप्पाजी को देह छोड़े दस महिने हो गए। बापा के आशीर्वाद हैं कि सत्पुरुष कहाँ अदृश्य होने वाले हैं?

...पप्पाजी के बाद कौन? – यह किसी ने पूछा था; इस संदर्भ में बात करते हुए ज्योत की एक छोटी साधक बहन ने कहा – इतने वर्षों के बाद आप पूछ रहे हो कि पप्पाजी ने किया क्या? छाती ठोक कर यूं नहीं कह सकते कि पप्पाजी के बाद मैं हूँ! बापा ने जो वचन दिया था कि सत्पुरुष कहाँ अदृश्य होने वाला है? – वो ही पप्पाजी हमारे में हैं, यह उस बहन का कहने का मतलब था। तो उन्हें धार कर इन भाई, बहनों व ताड़देव के भाईयों ने काकाजी-पप्पाजी को प्रत्यक्ष रखा है। यह वारसा मिला है – संबंध वाले का माहात्म्य समझने का। **संस्थाओं का विकास तो खूब होने ही वाला है, लेकिन हम जहाँ हैं वहाँ अपनी आत्मा का विकास हो – ऐसी निरंतर जाग्रतता से जीने का हम सभी को सभी स्वरूप खूब-खूब बल दें**-यही आपके चरणों में प्रार्थना!

पू. वच्छराजजी

...गुरुजी के साथ खूब रहने का मौका मिलता है... जो पुराना इतिहास है, उसको हम सब ऐसे संतों-मुक्तों से सुनते हैं और अब जो इतिहास बनने जा रहा है, वो सारे इतिहास के पन्नों के हम साक्षी हैं। तब जाकर के रामायण की बात मुझे याद आती है कि उर्मिला को रघुवरजी ने पूछा था कि आपको क्या चाहिए? विवाह के बाद तुरंत तो उनके पति चौदह साल के बनवास के लिए चले गए थे। तब भी उर्मिला बोली कि यह मेरे परम सौभाग्य की बात है कि मैं रघुकुल की बहु कहलाती हूं! इसी तरह, आज गुणातीत समाज के हम सब जितने भी यहाँ बैठे हैं, उनके लिए बहुत **बड़े गर्व की बात है कि इस इतिहास के पन्नों का भागीदार हमें ऐसे सत्पुरुषों ने बनाया। गुरुजी की गुरुभक्ति है** कि – उस इतिहास को गुरुजी समाज के सामने भक्ति रूप में अदा कर रहे हैं। सुबह दिनकरभाई ने यज्ञ में बहुत अच्छी बात करी कि **बॅप्स में शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की जो देन है, इसी प्रकार गुणातीत समाज के हमारे आद्यसर्जक प.पू. पप्पाजी महाराज, प.पू. काकाजी महाराज, प.पू. बा को गल्ती से भी हम ना भूलें।**

गुरुजी हम सबको ऐसा जीकर भी दिखाते हैं। भक्तों की भक्ति की बात करें, तो गुरुजी सुख में भी इतने आनंद में रहते हैं और कोई दुःख का प्रसंग हो तब भी गुरुजी इतने ही सेन्सिटीव होकर कार्य करते हैं। आज मुझे कहते हुए गर्व होता है कि **पप्पाजी** ने एक बार गुरुजी के बारे में कहा था, जो कि खूब याद रखने जैसा सॅन्टेन्स है कि – **'दी करे ए दीकरो कहेवाय'** – जब लंदन वाले मामाजी के प्रसंग को गुरुजी ने इतनी भक्ति से हॅन्डल किया कि पप्पाजी को कोई कष्ट ना पड़े। उसे देख कर **पप्पाजी इतने राजी हुए और** तब जाकर **उनके हृदय के भाव निकले कि 'दी करे ए दीकरो कहेवाय'।**

इसी प्रकार पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा की बात इतने आनंद की है कि उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं। इतनी बहनों के दर्शन, इतने संतों के दर्शन, इतने हरिभक्तों के दर्शन हमें कहाँ प्राप्त हो सकते हैं? **गुरुजी का ये ऋण, गुरुजी की ये कृपा हम कभी भी भुला नहीं सकते।**

आज इस महामंगलकारी दिन पर इन सब स्वरूपों के चरणों में एक ही प्रार्थना करनी है कि जैसे कल पू. निर्मलस्वामिजी ने 'लोटा उत्सव' की बात करके जो बताया कि सत्संग के कैसे भी प्रसंग को हम 'पॉज़ीटिव वे' में लें।

मन के बवंडर से किसी भक्त के प्रति हमें प्राकृतभाव आ जाता है, उससे सत्पुरुष कभी राजी नहीं होते हैं। जब इस समैया (उत्सव) की हमारी मीटिंग हुई थी, तब दीदी ने हमें बताया था कि कोई भी बड़ा फंक्शन लेकर हम बैठते हैं, तब हमारी भावना यही होनी चाहिए कि किसी का चेहरा गल्ती से भी उदास नहीं हो। देखो! कितनी बड़ी भावना सत्पुरुष हम सबसे रखते हैं...

पू. प्रभाकरजी

जब मैं पहले-पहले सत्संग में आया तो डायरेक्टली तो मैं गुरुजी से ही पहले मिला। लेकिन, यहां पर बातें होती रहती थी कि पप्पाजी ऐसे हैं, काकाजी ऐसे हैं, स्वामिजी ऐसे हैं, साहेब के बारे में; और बाद में काकाजी से मिला, तो काकाजी के मुंह से भी निरंतर यही बातें निकलती कि पप्पाजी के पास विद्यानगर जाओ, तो हमारी बहनों को देखो। हमारी कितनी बहनें एक साथ रहती हैं। और... जब पप्पाजी को स्टेज पर पहली बार देखा तो बिल्कुल शांत - गंभीर। ऐसा लगे ही नहीं कि कोई हलचल हो रही हो। ऐसा लगता कि समुद्र की तरह – एकदम शांत! लेकिन उनसे अंदर की जो हलचल होती है, वो सबको हिला देता है। पप्पाजी भले कितने भी शांत दिखते हों, लेकिन सारी जो भी बात होती थी, उनकी पैनी नज़र हर जगह होती थी। ऐसा कोई नहीं कह सकता था कि पप्पाजी किसी चीज से अनजान हैं। हम कई बार कई बातों को समझ नहीं पाते। मेरे ख्याल से १९८५ - ८६ की बात होगी कि पप्पाजी बी-३२ में रुके हुए थे; मैं उनकी सेवा में था और सुबह-सुबह पप्पाजी बाहर बैठे हुए थे। पप्पाजी को कोई चाय देकर गया। मैं सामने खड़ा हुआ था। वहाँ चॅयर रखी थी, तो पप्पाजी ने मुझे गुजराती में कहा 'बेसी जाव'। पर, चूँकि पहले से ये बात मन में थी कि पप्पाजी की आध्यात्मिक कक्षा बहुत ऊंची है; मेरी तो हिम्मत ही नहीं पड़ी कि पप्पाजी के सामने बैठ जाऊँ। पप्पाजी ने मुझे दूसरी बार फिर कहा 'बेसी जाव'। मैंने कहा पप्पाजी – नहीं। तीसरी बार पप्पाजी ने कहा 'बेसी जाव'। लेकिन मेरे अंदर का विवेक मुझे गवाही नहीं देता था कि मैं पप्पाजी के सामने चॅयर पर बैठ जाऊं। मैं नहीं बैठा। तब पप्पाजी ने एकदम सहजता में कहा – 'बहु विवेकी छो'। यह बात आज भी मेरे मन में घूमती है। **मुझे लगता है उसके बाद मेरे जीवन में जो कुछ विवेक आया है, वो पप्पाजी का उस समय का दिया हुआ आशीर्वाद है – जो आज भी मेरे लिए काम करता है।** ऐसे ही पप्पाजी फार्म हाऊस पर रुके हुए थे और उन्हें सायटिका का पेन होता था। तो, एक्यूप्रेशर देने डॉ. नीलमबेन ने मुझे बुलाया। नॅचरली, जो पॉइंट पर मैं प्रेशर देता पप्पाजी को वहाँ पेन होता था। एक दिन थोड़ा ज्यादा दर्द हुआ, तो मुझे एकदम कहा – 'मारीस'। वो एक ऐसा दर्शन था कि मानो उनका मुझ पर हकदावा था। वर्ना कौन किसको कहता है कि 'मारीस'? वो जो पप्पाजी के प्रति का मेरे अंदर भाव था, वो आज तक सहेज के रखा है। कभी याद करूं तो पप्पाजी का वो हाथ और वो 'मारीस' शब्द नहीं भुला सकता...

गुरुजी ने कृपा से मुझे अपनाया है। उस समय जब गुरुजी ने मुझे कहा था कि आर्मी छोड़ दो – काकाजी ने आज्ञा करी थी कि आर्मी छोड़ दो, तब आर्मी में १० लाख लोग थे। उसमें से मैं ही था ना जिसको उन्होंने चुना? तो वो भी मुझे अपने बारे कई बार अपने आप में महसूस होता है कि हम कुछ अलग से हैं। अभी पप्पाजी की मूर्ति का जब से प्रसंग चला है। गुरुजी कितनी बार जयपुर गए? आते थे वहां से, आकर फिर कहीं चले जाते। हम समैया में तीन दिन काम करते हैं तो हमें लगता है कि हम थक गए। आज नहीं उठेंगे, आज हम सुबह आराम से उठेंगे। गुरुजी को आप सुबह दूसरे दिन देखो तो ५.४५ – ६:०० बजे वे अपने सोफे पर बैठे होंगे और वही कि – पप्पाजी की मूर्ति का ये - ये काम बाकी है, इसलिए जाना है। मैंने देखा है कि गुरुजी का कम से कम बीस दिन का ऐसा टूर था – जयपुर से

आना, पंजाब जाना फिर आना कहीं और जाना, फिर बॉम्बे जाना। गुरुजी मल्कानी साहेब को ले गए, बहनों को साथ में ले गए। गुरुजी ऐसों-ऐसों को साथ में ले गए, जिन्होंने पप्पाजी को बहुत नज़दीक से- बहुत क्लोज़ से निहारा होगा। लेकिन उन सारी बातों के बीच में गुरुजी का एक ही मकसद था कि मूर्ति में कोई कमी ना रह जाए। वो वे पॉईन्टआऊट कर सकते थे। भक्ति अदा करने का उनका अपना यह एक तरीका है। ऐसी कुछ बातें गुरुजी की हैं जो टोटली डिफरन्ट है। उसको हम अपने शब्दों में नहीं बांध सकते। शब्दों में बांधने के लिए उसकी सीमाएं होती हैं। कुछ चीजें ऐसी हैं जिसको हम नहीं बांध सकते। सूर्य के प्रकाश को हम बांध नहीं सकते। वैसे ही **गुरुजी के दिल में पप्पाजी, काकाजी, स्वामिजी – हर एक के प्रति जो भक्तिभाव है, उसकी कोई सीमा नहीं है। उसकी कोई बाऊन्ड्री नहीं हैं। ये बात एक इतनी परम सत्य है – जितना सूर्य का पूर्व में उदय होना है।** गुरुजी ने अपने वर्तन से हम सबको ऐसा दर्शन कराया है।

पहले भी हमने यहाँ पर साहेब का जन्मदिन मनाया था। आज फिर वैसा ही मौका आया हुआ है कि गुरुजी और साहेब का जन्मदिन साथ-साथ मनाने का हमें मौका मिल रहा है। तो आज सभी स्वरूप यहां मौजूद हैं और उन सब ने अपने गुरु को ऐसा समर्पित करा है कि गुरुदेव ने हर एक को यूनिक बना दिया। **हम** भी **'यूनिक' बनना चाहते हैं।** सिर्फ **सवाल इतना है कि हमने अपने आपको गुरु को समर्पित किया है?** शायद **हंसा दीदी** ने आज कहा था कि **जितना हम खाली होंगे, उतना ही हम में भरा जाएगा।** पर **हम ऐसे छोड़ना नहीं चाहते। काकाजी भी कहते थे कि मन के राज्य को छोड़कर 'गुरुराज्य' में चले जाओ, वो हम नहीं जा पाते। हमारी इच्छा है, लेकिन हमारे स्वभाव – हमारा मन – हमारा वर्तन – हमारा अन्तःकरण हमें वहाँ नहीं जाने देता जहाँ हमें जाना है।** सभी स्वरूपों के चरणों में **हम हर बार यही प्रार्थना भी करते हैं, लेकिन उससे मुकर भी जाते हैं; जब वो कराने आते हैं, तो हम फिर पीछे हट जाते हैं।**

तो, उनके चरणों में यही प्रार्थना कि अब हम पीछे हठ ना करें। जो वो हम से करवाना चाहते हैं, वो हम कर पाएं ऐसा बल दें।

पू. मांगेराम गर्गजी

आज बड़े आनंद की अनुभूति हो रही है। प.पू. स्वामिजी (प.पू. गुरुजी) के जन्म दिवस की बेला अगले २४ घंटे तक भी चलती रहेगी। सभी महापुरुषों कि जिन्होंने समाज को कुछ ना कुछ दिया है, वो समाज सदैव उनका ऋणी रहता है। संतों के श्रीचरणों में बैठ करके हमने ये **भारत की संस्कृति** पूरे विश्व के अंदर फैलाई है और निश्चित रूप से सभी ने स्वीकार किया है कि जो संस्कृति भारत ने दी है, वही विश्व के लिए 'संस्कार' हैं। पिछले दिनों **'अक्षरधाम'** मंदिर जाने का अवसर मिला। राष्ट्रव्यापी संगठन **'धर्मयात्रा महासंघ'** के ७०-८० पदाधिकारी के साथ प.पू. स्वामिजी के सान्निध्य में हम गये थे। देखने के पश्चात् एक जिज्ञासा और उत्पन्न हुई – हमारे ग्रन्थों में उल्लेखित है कि **पूरे विश्व को अगर कुछ दिया है, तो हमारे संतों ने – मुनियों ने – ऋषियों उन्होंने ही दिया है** क्या ये सत्य नहीं है? और **आज जो समृद्धशाली हैं, वो समृद्धि भी हम से ही प्रारंभ हुई थी।**

मैं आज बड़े आनन्द की अनुभूति कर रहा हूं कि प.पू. स्वामिजी के चरणों में अनेक बार बैठकर के मुझे मनन करने का अवसर मिलता है। साल में दो-चार पांच बार तो अवश्य आना हो ही जाता है। सौभाग्य है मेरा कि जिस क्षेत्र का मैं प्रतिनिधित्व करता हूँ, वहीं पर ही यह स्वामिनारायण मंदिर विराजमान है। अनेक बार कई समस्या आती हैं,

तो उनके निदान के लिए प.पू. स्वामिजी के पास आकर के हम रास्ता ढूंढते हैं। आज व्यस्तता काफी थी, पर मैं नरेले से दौड़कर आया। किसी भी राजनैतिक क्षेत्र के व्यक्ति के लिए चुनाव बहुत प्रमुख हुआ करता है। मेरे साथ **देवराजजी** इस क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में हैं – वे मेरे साथ आये हैं। प.पू. स्वामिजी का आशीर्वाद इन्हें प्राप्त हुआ है। मैं स्वामिजी के श्रीचरणों में नमन करता हूँ; सदैव इसी तरह से आपका मार्गदर्शन मिलता रहे, आने वाली पीढ़ियां भी सदैव आपके दर्शन से लाभान्वित होती रहें और लाभ प्राप्त करती जाएं। जय स्वामिनारायण!

पू. मल्कानी अंकल

कई दिनों से यहाँ रोज सभा, रोज आनंद – रोज सॅलीब्रेशन... यहाँ ये जो सूत्र लिखा है–'अपना मान भले टल जाये, पर भक्त का मान न टलते देखा...' मैंने कल ये देखा, तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यहाँ तो हम रोज ही ऐसा देखते हैं। चाहे वो ज्योत में हो, चाहे यहाँ गुरुजी के अंब्रेला के नीचे अशोक विहार के मंदिर में हो, चाहे साहेब के पास हो, हरिधाम में हो – गुणातीत समाज में तो ये एक डेईली हॅपनिंग है... कल निर्मलस्वामी ने 'लोटा उत्सव' की बात बताई, वो एक ऐसी बात है जो सिर्फ याद नहीं, बिल्कुल फिट आ गई। उस समय मुझे याद आया कि जशभाई साहेब का एक सूत्र है – 'थिंक पॉज़ीटिव, एण्ड धी रेस्ट विल फॉलो।' पहले साहेब ने कुछ मग्झ (कप) बनाए थे और डिस्ट्रीब्यूट किये थे – उन पर भी ऐसा लिखा हुआ था – थिंक पॉज़ीटिव एण्ड धी रेस्ट विल फॉलो। तो, साहेब की ये बात उस टाईम बहुत याद आई, जब निर्मलस्वामी 'लोटा उत्सव' की बात बता रहे थे। साहेब की एक और बात भी मुझे बिल्कुल फिट बैठ गई। दो बातें हैं – दोनों वर्णन मैं करूंगा। हम मिशन में 'समाधि स्थान' पर गए थे। साहेब भी वहां थे। मैंने साहेब से पूछा कि 'स्वामिनारायण भगवान सर्वोपरि' का कोई पूछे तो क्या समझाएं उसको ? तो साहेब ने जो बात बोली वह बहुत अच्छी थी, जो दिल में बिल्कुल बैठ गई। उन्होंने बोला कि हर एक साधक को, हर एक हरिभक्त को ये समझ लेना है कि सर्वोपरि उसका गुरुहरि है। उस दिन के बाद मैंने कभी दोबारा इस मामले पर सोच-विचार नहीं किया है। क्योंकि **मेरे लिए गुरुहरि पप्पाजी – सर्वोपरि** ! दूसरी एक बहुत छोटी-सी बात बतलाता हूँ। एक टाइम मेरा मन बहुत ही डूबा हुआ था या डिस्टर्ब्ड कहिए। पता नहीं क्या बात चल रही थी, तो साहेब ने बोला – **हमें भक्त बनना है, भगवान नहीं बनना है।** ऐसी साहेब की दो चार बातें मैं बार-बार सोचता हूँ। आज मौका मिला है साहेब के जन्मदिन का, तो इन दो-तीन सूत्रों के लिए साहेब को मैं पर्सनली थॅंक्स कहना चाहता हूँ।

यहाँ आज सवेरे पप्पाजी की मूर्ति यज्ञ में बिठाई गई थी और इस समय ऊपर मंदिर में तैयारियाँ चल रही हैं। इससे बढ़ कर तो ख़ुशी का दिन, आनंद का दिन, सुख का दिन हमारे लिए ज्यादा हो ही नहीं सकता। **गुरुजी ने आज इस समाज में जो एस्टाबलिश किया है, वो अंग्रेजी में कहा जाए तो अनपॅरेलल्ड है।** मेरे ख्याल से पूरे गुणातीत समाज की हिस्ट्री में या वैसे भी स्वामिनारायण मूवमेन्ट में ऐसा कोई कदम मैंने ना सुना है ना पढ़ा है। तो थॅंक यू गुरुजी, **थॅंक यू फॉर एस्टाब्लीशींग धिस सिस्टम। थॅंक यू फॉर आल धी एफर्ट्स यू हॅव पुट इन – नॉट वरिंग एबाउट यॉर बॉडी, नॉट वरिंग एबाउट एनीथिंग एट ऑल फ्रॉम एनी डाईरेक्शन। पप्पाजी अभी यहीं हैं।** जहां ऐसी सभा होती है, बड़े संत बैठे हुए होते हैं – वहाँ प्रभु तो खुद हाज़िर होते हैं। तो आज काकाजी

महाराज, पप्पाजी महाराज, स्वामिजी महाराज सब यहाँ हाजिर हैं – ऐसा मन से महसूस होता है। काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज और हरिप्रसादस्वामिजी महाराज ने योगीजी महाराज की ओर जो गुरुभक्ति दिखाई, उनका निर्मलस्वामिजी ने वर्णन किया।

मैंने कुछ दिन पहले भी यहीं मंदिर में शाम को छोटी सभा में बात की थी। कोई कम्पेरीज़न तो नहीं है, मगर मैंने ये बीते २० सालों में देखा है कि **गुरुजी की जो कमिटमेंट है,** वो भी एक अनपॅरेलल्ड है। गुरुजी की कमिटमेंट किस चीज के लिए ? गुरुभक्ति – काकाजी की ओर, पप्पाजी की ओर, उतना ही स्वामिजी की ओर और उससे भी ज्यादा समाज की ओर। कमिटमेंट कहना एक सहज शब्द है, मगर ये गुरुजी की लाइफ स्टोरी है – ट्वेंटी फॉर इन टु सॅवन! सवेरे से लेकर रात तक उनकी समाज की ओर सेवा चलती ही रहती है। सवेरे हम गुरुजी को टॅलीफोन करते हैं। 'जय स्वामिनारायण, गुरुजी!' तो उनकी एक कृपा है कि वे टॅलीफोन एटेन्ड करते हैं। सिर्फ ऐसा नहीं कि टॅलीफोन एटेन्ड करते हैं; **गुरुजी की एवेलेबलिटी भी ऐसी है कि इतनी चार-पांच सौ फॅमिलीज़ जुड़ी हुई हैं पर, कोई भी हरिभक्त हो – उनके छोटे-छोटे बच्चे भी गुरुजी को मिलने के लिए आते हैं, टॅलीफोन करते हैं और गुरुजी उनकी बात सुनते हैं-उनसे मिलते हैं-उनको प्रेम देते हैं। उनको अपने लिये कोई समय है ही नहीं।**

ऐसी समाज सेवा, ऐसा सत्संग कहाँ मिलेगा? इतना एक बड़ा साधु जिसके ऊपर इतने प्रेशर्स हैं, वो अपने को फ्री करके और काम छोड़ करके किसी भी हरिभक्त को, किसी भी सत्संगी को समय दे पावे – ऐसा आज की लाइफ में बहुत कठिन है।

उससे भी थोड़ा आगे ये कहूंगा कि पहले मुझे कई विचार आते थे कि वाय गुरुजी डज़न्ट डू लाईक धिस, वाय डज़न्ट ही डू लाईक धॅट? कई विषय होते थे ऐसे; पर आज मैं देखता हूँ कि सवेरे से लेकर रात तक गुरुजी का **सारा जो लाइफ स्टाइल है उसमें एक ट्रांसपरन्सी बहुत है – ऑपन बुक, नो सिक्रेट्स! आज सेंटर में या स्टेट्स में हमारी गवर्नमेंट ढूंढ रही है कि कैसे ट्रांसपरन्सी करें? यहां हम रोज देखते हैं कि 'ट्वेन्टी फोर इन टु सेवन' – गुरुजीज़ टोटल ट्रांसपरन्सी।** गुरुजी को, जशभाई साहेब को मेरा थँक्स।

प.पू. दिनकरभाई इतनी दूर से आए हैं। गुरुजी ने बुलाया, वो आ गए यहाँ पर दर्शन दिया उन्होंने, उसके लिए दिनकरभाई को बहुत-बहुत थँक्स। सब स्वरूप आए हैं, बहनें आई हैं, बहुत ख़ुशी हो रही है और आनंद आ रहा है... थँक्यू – जय स्वामिनारायण।

प.पू. भरतभाई

...हम कल रात को आए। एक शिविर जैसा वातावरण है... ऐसे गुणातीत स्वरूप की एक ही भावना होती है कि किस तरह से हम प्रभु में जुड़ जाएँ। आज बहुत विशिष्ट प्रसंग यहाँ लगाया है। भीष्म पितामह ने प्रतिज्ञा करी थी कि कृष्ण भगवान युद्ध में शस्त्र धारण करें ऐसा करवाऊँगा। क्योंकि कृष्ण भगवान ने ऐसी प्रतिज्ञा करी थी कि मैं ये युद्ध में शस्त्र ग्रहण नहीं करूँगा। **भगवान ने अपनी प्रतिज्ञा को दृढ़ नहीं रखा। भक्त के लिए अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी और अर्जुन की रक्षा भी करी।** तो ऐसे **गुणातीत स्वरूप हमारी हमेशा रक्षा में रहते हैं।**

गुरुजी का काकाजी के साथ ऐसा संबंध था और काकाजी की गुरुजी के प्रति ऐसी प्रीति थी। काकाजी की हर एक क्रिया में, हर एक कार्य में, हर एक प्रसंगों में गुरुजी को दिव्यता ही दिव्यता नज़र आती थी। आज हम गुरुजी से बहुत सारे प्रसंग सुनते हैं तो पता चलता है कि गुरुजी को काकाजी के प्रति कैसा निर्दोषभाव था, कैसा भाव था! और... **उसका दर्शन – आज हमें ये समाज का दर्शन करने से होता है।**

बड़े संत पुरुष को हम समझ नहीं पाते हैं। काकाजी बहुत बार हमें यह बताते थे। बर्थ डे पर मैंने जब गुरुजी को फोन किया और मैं बोला कि काकाजी को अंतर से 'हाश' हो, ऐसा हमारा जीवन बने। तब **गुरुजी ने बहुत अच्छी बात करी कि – इन पुरुषों को हम से अंतर में हाश हुई है – हमारे में उनको विश्वास आया है, तभी तो उन्होंने शरीर छोड़ा है; सो अंतर से तो उनको 'हाश' है ही। मगर अभी हमारा जीवन – हमारा वर्तन ऐसा बने कि हमें देख करके उनके अंतर में आनंद-आनंद हो जाए, वो खुश-खुश हो जाएँ।**

बड़े पुरुष को अंतर में आनंद लाने के लिए क्या करना चाहिए? तो उसका एक यही तरीका है कि उनकी जो मर्जी है – वो जो हम से कराना चाहते हैं, ऐसा हम करते रहें।

उनके जो प्यारे भक्त हैं, उनके जो संबंध वाले हैं, उनके जो पसंदगी पात्र हैं, उनके साथ रसबसता बढ़े। तो हमें देख कर उन्हें खुशी होगी। तो आज हम गुरुजी के चरणों में वो प्रार्थना करते हैं। बड़े संत पुरुष हमेशा प्रसन्न तो होते ही हैं, मगर हमें वो जो देना चाहते हैं, वो ले पाएं। साहेब का हमने देखा है, जब काकाजी के पास आते थे और काकाजी का दर्शन करते थे, तो काकाजी का कोई भी वचन उन्होंने अध्धर झेला है... हम जाने-अनजाने में संत पर हमारी पसंदगी थोप देते हैं कि – 'ऐसा कर दो।' वो तो करने वाले हैं ही – क्योंकि वो **'भक्त के भक्त'** हैं और हमें राजी करने के लिए वे सदैव तत्पर रहेंगे। मगर हम उनकी प्रसन्नता पाने के लिए सदा तत्पर रहें और उनको प्रसन्न करने के लिए ही सदा जीवन जिएं, ये आज के दिन पर प्रार्थना है। इधर **गुरुजी के पास सब भक्त गुरुजी जो बोलें वो करने के लिए तत्पर रहते हैं, उसका हमने दर्शन किया... बड़े संत पुरुष कभी कुछ हम से लेते नहीं हैं। वो हमेशा भीतर की भावना देखते हैं।** हम जिसको गुणातीत स्वरूप मानते हैं, उनकी तरफ हमारे अंतर की ये शुद्ध भावना, हमारे अंतर की ऐसी भक्ति सदैव रहे; तो हमें उनके आशीर्वाद मांगने नहीं पड़ेंगे – वो ऑटोमॅटिक मिल जाएंगे।

ऐसा जीवन हमारा बने यही आज के शुभ दिन पर साहेबजी के प्राकट्य पर्व पर – गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर – मूर्तिप्रतिष्ठा के दिन पर प्रार्थना करते हैं। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. निर्मलस्वामिजी

पिछले दो दिन से उत्सव परंपरा की दृष्टि से हम खूब आनंद का अनुभव कर रहे हैं। हम प्रगट के उपासक हैं। एक बार **काकाजी ने बहुत सुंदर बात करी थी कि परोक्ष के लाख चरित्र हम गाएं, लेकिन प्रगट का एक चरित्र गाएं तो लाख मन सोने की कमाई करी – इतना हमें लाभ होगा।**

आज यहाँ यज्ञ हुआ, योगीजी महाराज ने गोंडल में हरियाग यज्ञ किया था, उसके भी दर्शन हुए थे। भगवान स्वामिनारायण ने गोंडल में एक जबरदस्त यज्ञ किया था और उस यज्ञ में कई लोग आए थे। उसमें एक मुस्लिम आया था। यज्ञ की आहुति में से जो धुँआ निकला था, उस धुँए का मुस्लिम को स्पर्श हुआ। मुस्लिम के हृदय में

भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति बैठ गई! वह नमाज पढ़े, तो भी उसे स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति ही दिखाई दे। सो, मुस्लिम गोंडल में स्वामिनारायण भगवान का भजन करने लगा। फिर उस मुसलमान के बिरादरी वालों ने उसे जाति से बेदखल कर दिया। अपने हरिभक्तों ने वह मुस्लिम को अपने समाज में शामिल कर लिया और मुस्लिम 'सत्संगी' बन गया। मुस्लिम ने जब शरीर छोड़ दिया और उसके शरीर का अग्निसंस्कार करने श्मशान में ले गए। वहाँ श्मशान के एक पेड़ पर अनेक भूत रहते थे; मुस्लिम के अग्निसंस्कार का जो धुँआ निकला, उससे प्रत्येक भूत 'ब्रह्ममहोल' को पा गया। **यज्ञ का ऐसा एक संबंध है।** फिर थोड़े समय बाद कई भूत जो बाहर घूमने गए हुए थे, उन्होंने आकर देखा कि श्मशान में क्यों कोई भी नहीं है? तब किसी ने बताया कि ये मुस्लिम के अग्निसंस्कार के धुँए से सभी भूत 'ब्रह्ममहोल' में गए हैं। उन्हें हुआ कि हमें क्या करना? तो किसी ने बताया कि मुस्लिम का जहाँ अग्निसंस्कार किया है उस राख में लोटो (खुद को रगड़ लो), तो तुम भी 'ब्रह्ममहोल' में जाओगे। ऐसी यज्ञ की एक महिमा है।

गुरुजी को तो जब वे युवक थे, तब से मैं देख रहा हूँ। युवक में थे तब भी हमारे साथ थे। जब ५१ योगेश्वरों ने दीक्षा ली, तब मैं भी साथ में ही था। **गुरुजी में जो आज दर्शन हो रहा है – आध्यात्मिकता का दर्शन होता है।** यह चीज देख कर हमें खूब आनंद होता है कि अहो! **योगीबापा के ऐसे पवित्र संत हैं! सांगोपांग भगवान को रखे संत हैं! गुरुजी का हलन-चलन देखें, तो चौबीस घंटे भगवानमय ही उनका जीवन है।** योगीबापा ने ऐसे शालीन संत बनाए हैं। **गुरुजी के हलन-चलन में शालीनता की सुगंध आती है। शालीनता यूं ही मिलती नहीं। शालीनता आशीर्वाद से मिलती है। शालीनता वारसे में मिलता है। ऐसे शीलवान संत जो हमें मिले हैं, यह सारा योगीबापा के प्रताप से है। काकाजी का सेवन किया है। सभी गुणातीत स्वरूपों का उन्होंने सेवन किया हुआ है।**

साहेब का भी आज प्राकट्य दिन मना रहे हैं। मुझे तो इनका खूब लाभ मिला है। वर्षों पहले, जब मैं गोंडल में कोठारी था, तब साहेब की उम्र १५ से १६ वर्ष के बीच की होगी। सत्संग का तब इतना विकास नहीं था, इतने युवक नहीं थे। पर साहेब ने पहली बार जब गोंडल में प्रवचन किया था, तब पुराने संतों और पुराने हरिभक्तों ने पूछा कि यह लड़का कहाँ से आया है? बहुत सुंदर है, बहुत अच्छा बोलता है...

साहेब बापा की प्रसन्नता के पात्र हैं। तो मैंने मेरी रीति से उनका भजन बनाया है। मेरी रीति से मैं प्रार्थना करूँगा –

''दिसे मूर्ति मनोहर तारी – २
जोवा मळे छे, अधिक नर-नारी, जोवा मळे छे, अधिक नर-नारी
दिसे मूर्ति मनोहर तारी।
कोई कहे छे राजकुमार। -२
कोई कहे छे अमर अवतार, कोई कहे छे अमर अवतार।
दिसे मूर्ति मनोहर तारी। ''

ऐसा शरद्पूर्णिमा के दिन योगीजी महाराज की हाज़िरी में साहेब का मैंने दर्शन किया है। ५२ साल से ऐसे सत्पुरुषों का दर्शन करते हैं...

वर्षों पहले की बात है – एक दिन **पप्पाजी** नापा में थे और मैं वहाँ रसोई में खिचड़ी बना रहा था। पप्पाजी वहाँ

आकर खड़े रह गए और पूछा कि यह खिचड़ी पक गई है, वह कैसे पता चले ? मैंने कहा कि कुकर में तीन सीटी बजे तो ख्याल पड़े। तो, **पप्पाजी बोले तुम्हारे अंदर भी तीन सीटी हैं और वो तीन सीटी जब तक नहीं बजे, तब तक खिचड़ी पकेगी नहीं।** पप्पाजी ने यह नापा में कहा था... **योगीजी महाराज** ने मुझे ११ वर्ष की आयु में साधु बनाया था। उनके खूब आशीर्वाद हैं... एक बार **काकाजी** गोंडल में बैठे थे और योगीजी महाराज सभा कर रहे थे। गोंडल में गोबर से भरा हुआ पाँच फुट का गड्ढा था। योगीजी महाराज ने काकाजी को कहा कि दादुभाई साहेब, ये गोबर के टोकरे आपको निकालने हैं। काकाजी का ऐसा कोई 'अंग' नहीं था, फिर भी धोती चढ़ा कर गोबर के गड्ढे में खुद उतरे। योगीजी महाराज वहीं पर ही कुर्सी डाल कर बैठे। काकाजी गोबर के टोकरे के टोकरे निकाल रहे थे। हम देखें कि ऐसे पुरुषों ने गुरु के वचन में कितना परिश्रम किया है ?

गुरुजी का जीवन हम देख रहे हैं... तो हम संतों के लिए गौरव की बात है। हमारे तो ये **'परखे-तराशे'** संत कहे जाएं। ऐसे संतों के हम दर्शन करें, उनके आशीर्वाद लें – यही हमारी प्रार्थना! सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. साहेबजी

आज ये महासभा में प.पू. निर्मलस्वामिजी का अलग रूप में दर्शन करने का मौका मिला है। कवि के रूप में और अच्छे गायक के रूप में। बहुत अच्छा गाते हो – स्वामिजी आप। इस सभा में हाज़िर होकर बहुत अद्‌भुत दर्शन का हमें मौका मिला है।

दो दिन से, कल से सत्संग का एक अलग-सा माहौल यहाँ चल रहा है। सब को यहाँ बहुत-बहुत आनंद की अनुभूति होती रहती है। गुरुजी के प्राकट्य पर्व और उसके निमित्त से पप्पाजी की मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा कल होगी। राकेशभाई ने सभा में मेरे जन्मदिन की एनाऊन्समेन्ट करी, तो मैंने गुरुजी को प्रार्थना करी कि हम सभा में आनंद लेने के लिए आते हैं... वैसे तो चौबीस और पच्चीस दो दिन गुरुजी के सान्निध्य में ये उत्सव के लिए हम आए हैं। वालिया साहेब को भी मैंने कहा था – जो करना हो दो दिन के बाद अलग प्रोग्राम करना। दो दिन गुरुजी के सान्निध्य में जो सत्संग चल रहा है, इसमें शामिल होकर हमें पूरा आनंद लेना है। हम तो विजयपाल और शशी बहन के साथ बैठे थे। दूसरा कोई कार्यक्रम नहीं था, यहीं आना था। तो उनके लड़के ने मुझे बताया कि सभा शुरु हो गई होगी, आपको जाना नहीं है ? मैं बहुत खुश हो गया कि जाना है – हम को भी जाना है...

मल्कानी अंकल ने जो सर्वोपरिभाव की बात बताई। वो हम को इस तरह से लेनी है कि **हमारे हृदय में हमारे प्रभु का स्थान सर्वोपरि है-सबसे ऊँचा है और जिसको हम प्रभु मानते हैं – जिसमें प्रभु प्रगट हैं; उनका स्थान सबसे ऊँचा है। उनको जीवन में प्रसन्न करना वही हमारा ध्येय है – वही हमारी साधना है!**

ऐसा काम यहाँ हो रहा है। बातों-बातों में विजयपाल ने बताया कि आज उनके भतीजे की शादी है। तो, मैंने पूछा कि आपको जाना है ? तो बोले नहीं, गुरुजी का प्राकट्य दिन – यही हमारा सब फंक्शन है। **ये भगवान और गुरु को सर्वोपरि स्थान पर बिठाया माना जाए।** शादी में नहीं जाओ, शादी नहीं एटेन्ड करेंगे – क्या फर्क पड़ता है ? काकाजी कहते – **जो भी करना है करो ; प्रभु को साथ में रख कर करो, तो उनके साथ एटेच नहीं होंगे।** प्रभु के बिना मंदिर में बैठे होंगे, तो पत्थर भी आपको एटेच होगा ? कोई उठाएगा तो बोलोगे कि दो घंटे से यहाँ बैठा हूँ, हमको क्यों उठाया ? प्रभु को सर्वोपरि मान कर, वो ही पूरी साधना हम सब को करनी है...

कोई भी प्रॉब्लम आए, तो दूसरों को हानि करे बिना उसमें से इन्स्टन्ट – इन्टेलीजेन्टली निकल जाना, वो गुरुजी में हम देखते हैं। वे बोल्ड भी हैं... पप्पाजी के पास गुरुजी बैठे थे, तो वो बोले – मुझे काका अच्छे लगते हैं ; आप नहीं लगते, मैं आपको प्रेम नहीं करता हूँ। तो पप्पाजी ने बोला कि भले तुझे प्रेम नहीं है, पर मैं तुझे प्रेम करता हूँ ; तू मुझे अच्छा लगता है। **वो जो पप्पाजी ने बोला उसे गुरुजी ने अपने जीवन में एप्लाई किया।** बाकी गुरुजी किसी एक को प्रेम करें; तो दूसरे को नहीं – मीन्स 'नहीं'। उसके साथ उनकी बनती ही नहीं – उसके साथ वो बैठते ही नहीं – बात ही नहीं करते। **लेकिन काकाजी, पप्पाजी, बा के प्रेम ने उनमें जो गुणातीत भावना प्रकट करी उसका दर्शन अब हो रहा है।** आज पप्पाजी के साथ भी इतना प्रेम – इतना लगाव हो गया था। २८ मई को पप्पाजी ने अपने भौतिक देह का त्याग किया, उससे पहले दो मास जो पप्पाजी रहे, गुरुजी दो-तीन बार आए। पप्पाजी का दर्शन करके, पप्पाजी को देख कर वो रो पड़ते थे। भीतर से पूरे आँसू आ जाते थे। यूं, उनको काकाजी और पप्पाजी दोनों में इतना भाव हो गया था। इससे भी आगे **पप्पाजी की स्मृति को उन्होंने शाश्वत् कर दी! किस तरह से? तो – जो पप्पाजी के हैं, वो मुझे मानें या नहीं मानें, मेरा स्वीकार करें या नहीं करें, लेकिन मैंने उनका स्वीकार कर लिया है। हरिप्रसादजी से जुड़े मुझे मानें या ना मानें, लेकिन मैंने उनका स्वीकार कर लिया है। जो भी 'स्वामिनारायण' के हैं, वो मुझे मानें-मेरा स्वीकार करें या ना करें, उनका मुझे स्वीकार है। यह मेरी गुरुभक्ति है – मेरी प्रभुभक्ति है। वो गुरुजी ने अपने जीवन में सिद्ध कर दिया है।** वो ही हमें करना है, वो ही श्रेष्ठ मूर्ति है; दूसरी मूर्ति चली जाएगी।

भगवान स्वामिनारायण ने भी बोला है कि समाधि में जाने वाले बीमार हो जाते हैं या कोई देशकाल आ जाता है, तो उनकी मूर्ति कहाँ चली जाती है वो मालूम नहीं पड़ता है। लेकिन ये पप्पाजी के 'वचन' की जो मूर्ति कि तुझे मुझ से प्रेम हो ना हो, तू मुझे अच्छा लगता है और मैं तुझे प्रेम करता हूँ – उस वचन को लेकर **गुरुजी ने अपने जीवन में यह 'ब्रह्मसूत्र' एप्लाई किया कि दूसरा मेरा स्वीकार करे या ना करे, मुझे माने या ना माने, मेरे पास आए या ना आए, मेरी मूर्ति रखे या ना रखे, पर ये सब का मुझे स्वीकार है, सबसे मेरा प्रेम है। ये जो पप्पाजी की मूर्ति, वो ही उन्होंने सही रुप में अपने हृदय में स्थापित करी।**

अब वो मूर्ति की यहाँ प्राणप्रतिष्ठा हो रही है और वो मूर्ति काम करेगी। **यही हमारे जीवन में करना है, जो गुरुजी ने किया।** हम देखते हैं कि **जो भी इधर आता है, इन सब को अपनापन लगता है।**

दूसरा, यहाँ **आनंदी दीदी** हैं, काकाजी के साथ बहुत एटेच्ड लड़की है वो। ऐसे बहनों के काम में काकाजी थे, सो गुरुजी तो अलग ही रहते थे। पवई में भी काकाजी के साथ बहुत एटेच्ड लड़कियाँ हैं। लेकिन काकाजी के देह छोड़ने के बाद गुरुजी में आनंदी दीदी को 'काका' दिखाई दिए और इधर बहनों का एक अद्भुत काम शुरु हो गया। इस तरह पवई में भी भरतभाई और महेन्द्र बापु, दिनकरभाई के साथ बहनों का काम शुरु हो गया। ज्योत की बहनें हैं, हरिधाम की बहनें हैं। ये पूरी नारायणी सेना बन गई। लेकिन काकाजी बोलते थे – 'सर्वदेशीयता' मीन्स अपने गुरु को अपने हृदय में हाईएस्ट स्थान पर रखो; लेकिन, स्वामिनारायण के जो भी भक्त हैं, उनके प्रति हमारा प्रेम, उनके प्रति हमारा भाव, उनके प्रति हमारा निर्दोषभाव-दिव्यभाव बढ़ता जाए, तो मानना हम अपनेपन – 'स्व' के दायरे में से निकल रहे हैं। **ऐसा काम गुरुजी इधर कर रहे हैं।** उनमें ऐसा अपनापन है, इसलिए सब इधर आते हैं। सब साधु-संतों के साथ उनमें जो मैत्रीभाव है, सुहृद्भाव है, एकत्वभाव है उसका दर्शन हम उनके एक्शन से – बोलने से नहीं, कर रहे हैं। **यही है गुणातीतभावना का दर्शन, दासत्वभाव! दूसरों को ही आगे करना – दूसरों**

परम पूज्य साहेबजी का प्राकट्योत्सव......

२४ मार्च '०७, सायं

२५ मार्च '०७, प्रात:

मूर्तिप्रतिष्ठा

अन्नकूट आरती...

परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी द्वारा गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा विधि

गुरुहरि पप्पाजी मूर्तिप्रतिष्ठा के पश्चात् अंतर से प्रार्थना करते हुए दर्शन-पूजन करतीं
गुणातीत समाजी की साधक बहनें...

२५ मार्च '०७, प्रात:

को ही मान देना – दूसरों को ही यश देना। वो गुणातीतभाव – जो योगीजी महाराज में था, काकाजी, पप्पाजी, बा में था; ऐसा ही भाव गुरुजी में- स्वामिजी में दिखाई पड़ता है।

तो हमारे लिए तो बहुत खुशी-आनंद की बात है... यहाँ लिखा है ना – 'अपना मान भले टल जाए, पर भक्त का मान ना टलते देखा'। कृष्ण परमात्मा की मूर्ति आज देखने लायक है, दर्शन करने लायक है। हम निश्चिंत हैं ऐसे गुरु मिलने पर... काकाजी का एक प्रसंग है कि छात्रालय के काम के लिए काकाजी विद्यानगर आए थे। मणीभाई जीवाभाई की कार में वे जा रहे थे। रास्ते में रेलवे का फाटक बंद था और वो फाटक खुल गया। कुछ गड़बड़ हो गई थी और वो फाटकमॅन के साथ मणीभाई जीवाभाई की बहस हो गई। दोनों गुस्से में आ गए... मणीभाई कार में से निकले और वो भी केबिन में से निकला! काकाजी ने देखा कि इधर तो हाथापाई हो जाएगी। तो काकाजी भी निकले और धोती ऊपर चढ़ा कर – कुर्ते की बाजु ऊपर चढ़ा कर बोले – खबरदार जो आगे आया तो! काकाजी का दर्शन करके, उनकी वाणी का प्रभाव देख कर वो तो पीछे चला गया। **यूं भक्त के पक्ष में रहते हुए जो कुछ भी करे वो गुणातीत!** ऐसे गुणातीतभाव का दर्शन हमें इन सब गुणातीत स्वरूपों में दिखाई पड़ता है। अलग – अलग रूप से दिखाई पड़ता है। प्रभु हमको ऐसी दृष्टि दें कि उनमें और सभी भक्तों में वे प्रभु ही हैं – ऐसे भाव से सबके साथ मिलते रहें, ऐसे भाव से सब के साथ काम करते रहें – सत्संग करते रहें, सेवा करते रहें, भजन करते रहें। जय स्वामिनारायण।

❀ ❀ ❀

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

...भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में बहुत-सी बातें बताई हैं। गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों में भी सब कुछ लिखा है। वो हम पढ़ते हैं, लेकिन हमारी समझ में आता नहीं है। मगर, ऐसे जो संत पुरुष हैं, जिनके साथ हमारा लगाव है उनकी बात अनुभवसिद्ध है। वह हमारी समझ में आ सकती है और उनकी आज्ञा का पालन करने से जो प्रगति होती है-उन्नति होती है, उससे जो प्रेक्टीकल नॉलेज होता है, जिसको काकाजी कहते – 'एप्लाईड ब्रह्मज्ञान'! – वो हमारे दिमाग़ में बैठ जाता है। हमें जो जीवन जीना है, वो जीने के लिए जो सत्य चाहिए, वो इन्हीं के पास से हमें मिल सकता है। काकाजी कहते थे कि जितने साधक हैं, इतनी अलग-अलग फॉर्म्यूलाज़ हैं। सब के लिए अलग-अलग फॉर्म्यूलाज़ होती हैं। **एक ही फॉर्म्यूला सब के लिए नहीं होती। जैसा वो भक्त, जैसा उनका समर्पण, जैसा उनका उनके गुरु के प्रति विश्वास, जितनी उनकी निष्ठा दृढ़ हो – ऐसी उनके लिए फॉर्म्यूला होती है।** सत्पुरुष के पास वो सब फॉर्म्यूलाज़ होती है और वो हमें ऐसा मार्गदर्शन देते हैं, जिससे हमारा दिन-प्रतिदिन उनके प्रति विश्वास बढ़ता है, उनके प्रति अपना लगाव बढ़ता है और अपनी आध्यात्मिक उन्नति उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। यहाँ पर जो भजन सुना था, उसमें बताया था कि काकाजी का जो कार्य था, वो कार्य आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने जो ठान लिया, उसका दर्शन – परिणाम आज हम देखते हैं। परिणाम देख कर हमें लगता है कि **गुरुजी ने बहुत अच्छा काम किया है** और हमें तो बहुत खुशी हुई। अभी-अभी साहेबजी ने बताया कि **उनका सर्वदेशीय उठाव जो है – संप, सुहृद्भाव, एकता का जो सर्वदेशीय उठाव है, वो बहुत अच्छी बात है – बहुत बड़ी बात है।** काकाजी तो थे ही, मगर आज उन्होंने पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करके काकाजी के प्रति जो भक्ति थी, वो ही भक्ति आज पप्पाजी के प्रति भी अदा करने के लिए उन्होंने ये कार्य उठाया है – उनकी कल मूर्तिप्रतिष्ठा करने जा रहे हैं। साहेबजी ने बताया कि दोनों अखंडित हैं ही। पप्पाजी ने बताया था कि मैं आपके जन्मदिन के दिन

वहाँ पर आऊँगा। तो कल मूर्तिप्रतिष्ठा होगी और **पप्पाजी यहाँ पर हाज़राहज़ूर रहेंगे ही।** अभी भी **काकाजी के द्वारा तो यहाँ हैं ही।** मगर पप्पाजी ने जो वचन दिया था, वो वचन सिद्ध होगा और **पप्पाजी मूर्तिप्रतिष्ठा के बाद यहाँ अखंडित रहेंगे और उनका कार्य ये गुरुजी के द्वारा वो दोनों अच्छी तरह से करेंगे, जिसका हम लोगों को लाभ मिलेगा।** हम बहुत भाग्यशाली हैं कि ऐसी दोनों की कृपा जो गुरुजी पर है, उनकी कृपा हमें मिले और उनके सान्निध्य में ऐसे ही प्रत्यक्ष के भाव में हम जीवन जीकर सुख, शांति, आनंद – जिसे अक्षरधाम का सुख बोलते हैं, वो प्राप्त कर सकें ऐसी सुविधा यहाँ पर हो गई है...

पप्पाजी के दो संकल्प थे। उसमें एक संकल्प था कि **जो भी भगवान भजते हैं, उनके जीवन में प्रभु के सिवा कुछ भी ना रहे;** अखंड प्रभु में उनका जीवन व्यतीत हो। ऐसी उनकी स्थिति हो जाए और दूसरा संकल्प था – किसी भी कीमत पर – जिसको बोलते हैं **कितना भी हमको सहन करना पड़े, पर सारे गुणातीत समाज के अंदर संप, सुहृद्‌भाव, एकता बनाए रखें।** ये जो दो संकल्प पप्पाजी के थे, वो अभी साकार होंगे और हम सब इनका लाभ लेंगे। तो ऐसे पप्पाजी - काकाजी का जो संकल्प है, उनकी भावना है, उनका जो कार्य है, वो कार्य गुरुजी के द्वारा अभी आगे चल रहा है और उसकी पूर्णाहुति हो – हम सब उसका लाभ लें – ऐसी हम स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करते हैं। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

२५ मार्च, २००७ प्रातः – गुरुहरि पप्पाजी मूर्तिप्रतिष्ठा उत्सव

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

...**समग्र मानव जाति के साधकों के लिए काकाजी और पप्पाजी आदर्श समान हैं।** पप्पाजी आफ्रिका की धरती पर मोम्बासा में सेवा कर रहे थे। काकाजी मुंबई में थे - ताड़देव में रहते थे। भारत का फर्स्ट इलॅक्शन १९५२ में आया। योगीजी महाराज - बापा ने काकाजी को पत्र लिखा–

'इलॅक्शन आ रहा है; नंदाजी शास्त्रीजी महाराज का कृपापात्र भक्त है। साबरकांठा की धरती पर उन्हें कोई पहचानता नहीं है। सब काम छोड़कर के आपको नंदाजी के इलॅक्शन में अवश्य जाना है।'

योगीजी महाराज ने एक अद्‌भुत आशीर्वाद भी लिख दिया –

'नंदाजी की इलॅक्शन में विजय होगी।'

नंदाजी ने सारा समय अमदावाद में गुजारा था। साबरकांठा एक डिस्ट्रिक्ट है, वहां नंदाजी को कोई पहचानता नहीं था। मगर, काकाजी को बापा ने आज्ञा दी। **काकाजी – अप्रतिम संबंध से जीने वाले सेवक!** बापा की आज्ञा से काकाजी साबरकांठा की धरती पर पहुंच गए। नंदाजी के सामने 'इडर' का महाराजा खड़ा हुआ था। नंदाजी के लिए कोई-कोई-कोई आशा ही नहीं थी कि वो जीत सके। काकाजी वो इडर की धरती पर पहुँच गए। बड़ा इतिहास है... भयंकर विरोध था। उस वक्त की गुजरात की सारी जनता राजाओं के नीचे पली - पोषित थी। राजाओं की ओर खूब मान-भक्ति से सब जुड़े हुए थे। वहाँ वो सारा डिस्ट्रिक्ट में जो सत्रह छोटे - छोटे राजा थे, वो सब एक होकर के इलॅक्शन में हेल्प करने के लिए हिम्मतनगर के महाराजा के साथ जुड़ गए थे। जहाँ नंदाजी जाएं, वहाँ अपमान! हिम्मतनगर की धरती पर जब नंदाजी प्रवचन करने के लिए खड़े हुए, काकाजी भी बगल में बैठे थे; एक व्यक्ति वहां

आ करके नंदाजी की कुर्सी को ले गया। काकाजी देख रहे थे। बहुत कम आदमी – १५०-२०० व्यक्ति आते; इन्हें सुनने के लिए भी पब्लिक आने को तैयार नहीं थी। मगर बापा ने काकाजी को लिखा था कि नंदाजी की जीत होगी। और... **काकाजी को बापा के वचन में अप्रतिम दृढ़ विश्वास था।**

मानव के जीवन में एक ही साधना है; भगवान के पवित्र संत मिल जाएं, तो ऐसे संत के वचन में अटूट विश्वास रख कर जुट जाना चाहिए – आज्ञा में वर्तावं करना शुरू कर देना चाहिए। वचन में अटूट विश्वास! नंदाजी ने तो तीन बार काकाजी को कह दिया था कि मैं जीतने वाला तो हूँ नहीं। तब काकाजी एक ही बात बोलते थे कि बापा ने आशीर्वाद दिया है, आप ठहरो। मगर अविश्वास के कारण वो चले जाते थे। तीन बार वे इलॅक्शन में से अमदावाद चले गए थे। तीन बार अहमदाबाद से काकाजी ने फिर बुलाया। पर, बापा ने जो लिखा था कि नंदाजी की जीत होने वाली है – वो विश्वास रख कर **काकाजी फॉर्टी टु डॅईज़ इलॅक्शन में खूब घूमे - खूब घूमे।** काकाजी को एक सेकण्ड के लिए कोई विचार नहीं उठा था कि इलॅक्शन में होगा क्या? काकाजी को योगीजी महाराज में - बापा में दृढ़ विश्वास था।

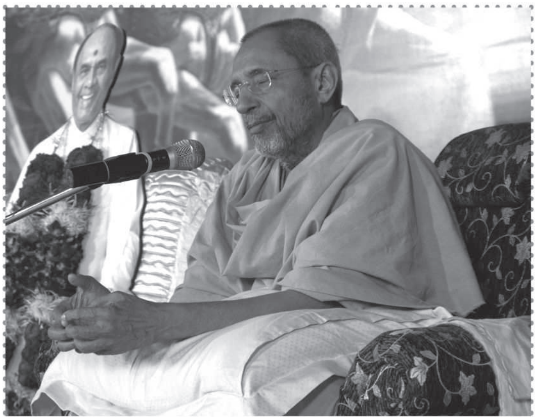

साधु का एक स्वधर्म है – चाहे कितना ही भयंकर बुरा प्रारब्ध हो – कितना ही विरोध हो मगर हम अटूट विश्वास से आज्ञा में डूब जाएं। हर जगह भारी इन्सल्ट, इतना अपमान। एक महीने में ऐसा एक दिन नहीं गुजरा होगा, जहाँ काकाजी और नंदाजी का इन्सल्ट न हुआ हो। मगर काकाजी ने अपनी सेवा चालू रखी। गुरुवचन में अप्रतिम श्रद्धा!

साधकों के लिए काकाजी और पप्पाजी की लाइफ अद्भुत, अद्भुत मार्गदर्शनीय है। दोनों भाईयों ने गृहस्थ होते हुए अपने गुरु को कैसे राजी करना है, उसका एक अद्भुत दर्शन मानवजाति को कराया है। अप्रतिम विश्वास – **प्रभु कभी भी हमारा किंचित अहित करने वाले नहीं हैं, ऐसा विश्वास!** काकाजी ने नंदाजी को कहा था कि आप मेरे साथ रहो बस। चिंता मत करना, योगीजी महाराज ने पत्र में मुझे आशीर्वाद दे दिया है। किंचित-किंचित दिखता नहीं था कि वे जीतेंगे। **मगर काकाजी को अद्भुत श्रद्धा और विश्वास।** काकाजी की सेवा के फलस्वरूप, योगीजी महाराज की कृपा से नंदाजी जीत गए...

इतने अद्भुत योगीजी महाराज – माँ जैसे साधु, गरीब साधु। शास्त्रीजी महाराज के पास ४० साल तक एकदम गरीब बन कर रहे, अस्तित्व रहित! मेरा मुझ में कुछ नहीं है – मैं केवल प्रभु का, शास्त्रीजी महाराज का और भक्तों का! बापा ने दादुकाका को पत्र लिखा–मैं गोंडल में हूँ, आप दोनों गोंडल आ जाओ, आशीर्वाद देने हैं, सुखी-सुखी कर देना है। काकाजी ने नंदाजी को बहुत समझाया – एक दिन स्वामिजी का दर्शन करके वापिस आ जाना। मगर इतनी निष्ठा नहीं थी, वचन में इतना विश्वास नहीं था। नंदाजी को बहुत कहा – जिसके आशीर्वाद से जीते हो, उन्हें पहले मिलना चाहिए। काकाजी को तो अप्रतिम श्रद्धा, अप्रतिम दृढ़ विश्वास, जबकि नंदाजी तो अहमदाबाद में जम गए और काकाजी ने गोंडल जाकर बापा के आशीर्वाद लिए।

जब काकाजी गोंडल पहुंचे तो योगीजी महाराज सभामंडप में बैठे हुए थे। काकाजी को दूर से देखते ही **अपने आसन से उठ कर सभामंडप से नीचे उतर कर दादुकाका को अद्‌भुत आलिंगन दे दिया।** इतने राजी हो गए, इतने राजी हो गए। मगर दूसरा प्रश्न पूछा – नंदाजी कहां है? काकाजी ने बताया कि – वे तो अहमदाबाद में हैं, वहां सबको मिलने के लिए ठहरे हैं। काका को बापा ने अद्‌भुत आशीर्वाद दे दिए – **आप इडर का गढ़ जीत के आए हो, घनश्याम महाराज के पास चलो, दर्शन करो, आठ आवरण का वो गढ़ आप जीत जाओगे।** आठ आवरण के पार आत्मा है। गुरुजी ने सब बात समझाई होगी, मैं फिर समझाता हूँ। हृदय के चार विभाग में राइट साइड के नीचे के पोर्शन में माँस की फांक में आत्मा है। काकाजी को बापा घनश्याम महाराज के पास ले गए। कैसे ये अद्‌भुत पुरुष और कैसे ये दादुभाई? बात सुनना, एक बात करनी रह गई थी। जब इलॅक्शन का काउंटिंग शुरू हुआ, तो पहले दिन ट्वेन्टी थ्री थाउझन्ड वोट्स से इडर का महाराजा आगे था। नंदाजी तो चले ही गए, ठहरे ही नहीं। मगर काकाजी के विश्वास में किंचित-किंचित भाटा नहीं आया था। काकाजी ने नंदाजी को बहुत समझाया कि हम लोग जीतने वाले ही हैं। **योगीजी महाराज विज़नरी पारदर्शक सनातन पुरुष हैं। वो आत्मा के माँ-बाप हैं।** अवश्य जीतने वाले ही हैं, मगर नंदाजी चले गए। काका को अप्रतिम श्रद्धा और विश्वास था। **मानव जीवन में ऑक्सीजन की जितनी अनिवार्यता है, इतनी ही साधक के जीवन में सत्पुरुष के वचन में अप्रतिम श्रद्धा और विश्वास की अनिवार्यता है।** वचन में अप्रतिम श्रद्धा और विश्वास बहुत कठिन चीज है। मगर काकाजी को अप्रतिम श्रद्धा और विश्वास था। आज **गुरुजी जैसे संत यहाँ हैं, इस प्रकार से श्रद्धा-विश्वास के साथ मैत्री रख कर आज्ञा में टुक-टुक रहना।**

योगीजी महाराज काकाजी को घनश्याम महाराज की मूर्ति के पास ले गए और घनश्याम महाराज की मूर्ति के सामने बापा ने प्रार्थना करी – दादुभाई इडर का गढ़ जीतकर आ गए हैं; हे महाराज! आठ आवरण का गढ़ आप जीताओ। यहां हमारी आत्मा पर आठ आवरण हैं – पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश और सूक्ष्म शरीर का मन, बुद्धि और अहम्। संत नहीं मिलेगा तो होगा क्या आत्मा का? देह में हम इस प्रकार से डूबे हुए हैं कि – 'मैं बोलता हूँ, मैं खाता हूँ, मैं व्यवस्थित हूँ।' अहंकार से पर हम निकले नहीं हैं। जिस शरीर में हम बैठे हैं, वहां आत्मा है और वह आत्मा का ओरीजिनल स्वरूप जो 'अक्षरब्रह्म' है, वह सब में व्यापक है और अंतर्यामी कर्म फलदाता स्वरूप में परब्रह्म भगवान की सुखमय मूर्ति – भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति अंतर्यामी स्वरूप में आत्मा में निरंतर बिराजमान है। **बापा ने घनश्याम महाराज को जब प्रार्थना करी, तो महाराज की आँखों से ज्योति निकली और सीधी (काकाजी के) हृदयाकाश में चली गई। काकाजी ने एक स्थूल इलॅक्शन का काम किया, मगर अद्‌भुत दिव्य सनातन सुख, शांति के आनंद में – अक्षरधाम की वो दिव्य समाधि में वे ले गए! संत के वचन में जितनी श्रद्धा और विश्वास, इतना ही संबंध कहा जाए।** इसमें मन-बुद्धि से संबंध टूट जाए, शंका-आशंका जब आ जाए – जैसे नंदाजी ने बहुत शंका की और... ठहर गए अहमदाबाद – सब लोगों को राजी करने के लिए। गोंडल से स्वामिजी ने कहा था कि आ जाओ, पर नहीं पहुंचे। श्रद्धा और विश्वास जितना काकाजी को था, इतना नंदाजी को नहीं था। तो, वो सुख से वंचित हो गए – दिव्य सुख-समाधि से वंचित हो गए; वो पहुंच जाते, तो उनको भी लाभ मिल जाता।

आज पप्पाजी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा का उत्सव हुआ। जब काकाजी को समाधि में अद्‌भुत दर्शन हुआ। तो पप्पाजी ने अफ्रीका – मोम्बासा में सोचा कि चलो मैं भाई को मिलने के लिये पहुँच जाऊँ। दिव्य अनुभूति के बाद

काकाजी तो ताड़देव ही रहते थे, सो पप्पाजी मोम्बासा से आए। काकाजी ने पप्पाजी को कहा मेरी बात में विश्वास रखो, योगीजी महाराज कोई सामान्य साधु नहीं हैं, कोई सिद्ध साधु भी नहीं है; ये सनातन दिव्य पुरुष हैं। मैंने राजी करने के लिए प्रयत्न शुरू किया, आप भी शुरू करो। काकाजी की बात पप्पाजी ने सुनी-भाई के वचन में विश्वास रखा। पप्पाजी ने भी अद्भुत दृढ़ संकल्प कर लिया और... केवल योगीजी महाराज राजी हो जाएं, ऐसी एक मंगलकारी भावना से पप्पाजी ने भजन, श्रद्धा और विश्वास से सेवा करनी शुरू कर दी। पप्पाजी भी बापा की मूर्ति में डूब जाने के लिये निरंतर प्रयत्न करते रहे; भजन शुरू कर दिया। पप्पाजी के जीवन में एक अद्भुत ध्येय था। एक बात सुनना–उसी समय में मैं पप्पाजी काकाजी का समागम का लाभ लेने के लिये मुंबई–ताड़देव गए थे। मैं गया, महंतस्वामी गए थे-डॉक्टरस्वामी गए थे। हम लोग चार-पांच दिन ताड़देव ठहरे थे। सुबह के समय हम काकाजी की अद्भुत परावाणी का लाभ लेते थे। दोपहर एक बजे तक पप्पाजी भी वहां कुर्सी पर बैठे रहते थे। भोजन करने के बाद एक वचनामृत का पाठ करा के काकाजी सोने के लिए गए। मैं पप्पाजी के पास पहुंच गया। पप्पाजी को दो हाथ जोड़ कर मैंने कहा कि आप पांच-सात मिनिट बात करो। पप्पाजी ने मुझे कह दिया–घर भुल्या छो (घर भूले हो)। मीन्स, इनडायरॅक्ट्ली पप्पाजी ने बोल दिया कि मैं बात नहीं करूंगा, काकाजी का लाभ लेते रहो। मुझे पप्पाजी का यह वचन बहुत जँचा। पप्पाजी की सिन्सियारिटी देखकर इतना आनंद आ गया–इतना आनंद आ गया। बापा की इच्छा नहीं होगी–एक, बापा की प्रेरणा नहीं होगी–दो; मगर मेरे को आनंद ये आया कि पप्पाजी अपने आप में कितने डूबे हुए हैं? इतना आनंद आ गया कि मैं तो सामने बैठ गया... मैंने सोचा–वो भी भजनीक हैं, वो भी ध्यानी हैं, वो बोलते हैं तो आई मस्ट एक्सेप्ट! मैंने पप्पाजी के ये तीन गुण ले लिए। आई मस्ट बी सिन्सियर लाइक पप्पाजी। **अगर हमने थोड़ा पढ़ा-करा हो, थोड़ा ज्ञान प्राप्त किया होगा, हम में थोड़ा आनंद आना शुरू हुआ हो–प्रभु ने कुछ आनंद दे दिया हो; हम दूसरों को बताने लग जाएंगे।** पप्पाजी ने तो बहनों को अद्भुत सूत्र दिया था–'अपना कर लेना'! **जब तक अपनी आत्मा, सुख, शांति और आनंद की भोक्ता ना बनें, तब तक दूसरी आत्माओं की सेवा की चेष्टा करने का आपको कोई अधिकार नहीं है।** उस समय चार-पांच सालों में मैं तीन-चार बार ताड़देव गया था। पर पप्पाजी का अपना वही स्वाध्याय, भजन, वांचन, ध्यान! श्री अरविंदो कहते–'रिड्यूस यॉरसेल्फ टु ज़ीरो, एट धी फीट ऑफ सुप्रीम'–प्रभु की शरण में जब जाओ, तब ज़ीरो होकर काम करना। पप्पाजी ने इस प्रकार से ज़ीरो होकर अपनी साधना शुरू कर दी। पप्पाजी ने मुझे यह बहुत अद्भुत दर्शन करवाया। जब हम आणंद लौट रहे थे, तो पप्पाजी को हमने 'जय स्वामिनारायण' किया; खूब हँसा, आनंद में हँस कर मेरे कंधे-सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया कि जाओ! मुझे भी आनंद हो गया। पप्पाजी का 'गुणातीत ज्ञान के नवनीत' का सूत्र– 'माईन्ड यॉर ओन'–जब तक हम सुविचार में, आत्मीय विचार में, पराभक्ति की लाइफ में ना पहुंचे हो, तब तक खूब ध्यान रखना है। **दूसरों को गोष्ठी करने का अधिकार हमें है ही नहीं।** गुरुजी कोई आज्ञा दें तो करनी चाहिए–ये भी ठीक है। मगर जाग्रत ऐसा रहना कि पप्पाजी कितने जाग्रत? पप्पाजी ने ३-४ साल अद्भुत साधना करी।

पप्पाजी का दूसरा सूत्र अच्छी तरह से समझना–**'धाम, धामी और मुक्त के सिवा धरती पर कोई सगे-संबंधी हैं ही नहीं।'** भगवान व भगवान स्वरूप संत के संबंध वाले ही मेरे रिश्तेदार हैं। बहुत कठिन बात है यह, पर वचनामृत अंत्य. ७ और ११ से पप्पाजी ने अपनी साधना शुरू कर दी। **जो प्रीति देह से, रिश्तेदारों के साथ, अपने नज़दीक के सगे वालों से हो–मधर, फाधर, सिस्टर, ब्रधर से हो–इससे विशेष प्रीति भगवान और भगवदी भक्तों के साथ होनी चाहिए। ये सूत्र लेकर पप्पाजी ने साधना शुरू कर दी।** अंत्य. ६, ७ और ११

अवश्य पढ़ लेना। उसमें आशीर्वाद दिए हैं कि फलस्वरूप – काम, क्रोधादि, दोष कभी हावी नहीं होंगे, दूसरा – **'अष्टांग योग'** – जो गोपाळानंदस्वामी ने सिद्ध किया, भगवान श्रीकृष्ण ने सिद्ध किया, वो **'अष्टांग योग'** ऐसी आत्मबुद्धि और प्रीति से सिद्ध हो जाएगा। इतना सुख, शांति और आनंद गृहस्थ को देने के लिए भगवान स्वामिनारायण ने दो वचनामृत में अद्‌भुत आशीर्वाद दे दिया है। **पप्पाजी का जीवन मंत्र था – भगवान का अल्प संबंध वाला कहाँ से ?** वो ताड़देव की चौथी मंजिल पर कोई भी हरिभक्त – कैसे भी स्वभाव के साथ, प्रकृति के साथ वहां पहुंच जाए; मगर पप्पाजी ने दृढ़ ठहराव कर दिया था – 'वह भक्त ब्रह्म की मूर्ति है।' कितना अद्‌भुत जीवन का दर्शन उन्होंने कराया ? बापा के समय में समग्र समाज में किसी को यह ख्याल भी नहीं था, मगर इन दोनों भाईयों ने एक अद्‌भुत दर्शन कराया। **अक्षरपुरुषोत्तम संस्था में हजारों लाखों हरिभक्त थे, मगर ये दोनों भाईयों ने गुणातीत पुरुष के साथ किस प्रकार से संबंध होना चाहिए, उसका एक अद्‌भुत दर्शन कराया है। काकाजी ने इलॅक्शन के द्वारा, पप्पाजी ने अपनी आत्मा की ओर नज़र रख कर – भक्तों को अपने शरीर से, अपने मन से, अपने स्वभाव से ज्यादा प्यारा रख कर, भगवद्‌भाव से सेवा करी और करते ही रहे... जितनी आत्मबुद्धि और प्रीति गुरुजी के साथ और गुरुजी के संबंध वालों में – इतना उनसे संबंध कहा जाए और... इतनी प्रभु की निरंतर कृपा रहेगी।** ये देह के सिवा हम चलते नहीं, खाते नहीं-पीते नहीं, देह तो प्राण जैसा है। ताड़देव में पप्पाजी एक सोफे पर बैठे रहते थे, मैंने बहुत देखा है। पर तीनों देह से अलग होकर अद्‌भुत सेवन किया, जिसके फलस्वरूप बापा ने पप्पाजी को निर्विकल्प समाधि में निरंतर रख दिया।

तो, पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का आज उत्सव तो हम सब संतों ने किया, पर आप पप्पाजी के जीवन की ओर नज़र रखना, काकाजी के जीवन की ओर नज़र रखना। दोनों गृहस्थ, आप भी गृहस्थ। कैसा वो संबंध कर गए, जिसके फलस्वरूप आठ आवरण के पार, दिव्य समाधि में वे अखंड रहे।

(एक बार) उनके बहनोई वहां पहुंचे थे, पप्पाजी ने काका को कह दिया गाड़ी मत भेजना। गाड़ी तो योगीजी महाराज की है। ये भगत तो है नहीं। कितना दृढ़ ठहराव होगा ? ऐसा कोई विरल पुरुष हो सकता है ? आप संसार में रहते हो, सोचना – ये शरीर, साधन, ये कार, जो भी पदार्थ हो – ये भक्तों के लिए उपयोग होना चाहिए। ये गाड़ी कोई दूसरी जगत की व्यक्ति के लिए नहीं जाएं – ऐसे फर्म थे पप्पाजी। **धाम, धामी और मुक्त ही मेरा प्राण – मेरे लिए सब कुछ। दोनों भाईयों ने देह से ज्यादा, मन से ज्यादा, स्वभाव से ज्यादा प्यार-प्रीति वो भक्तों में किया। चाहे कैसे ही बुरे स्वभाव का व्यक्ति ताड़देव में आ जाए, पप्पाजी यही मानते कि 'योगी' के सिवा कोई नहीं आ रहा है।** सब योगी के स्वरूप हैं – इस प्रकार से वे देखते रहे और सबकी सेवा करते रहे।

पप्पाजी बात नहीं करते थे ऐसा नहीं था, बहनों को वो थोड़ी-थोड़ी बात करते थे। मगर ज्यादा काकाजी उस वक्त बात करते थे।

दोनों भाईयों ने अद्‌भुत आत्मबुद्धि का, प्रीति का संदेश हरिभक्तों के लिए, संबंध वालों के लिए दिया है। संसार में होते हुए भी आप सहज निर्विकल्प समाधि से भगवान का अद्‌भुत संबंध अच्छी तरह से प्राप्त कर सको, ऐसा एक दिव्य दर्शन दोनों ने कराया है। **दोनों हम सबके लिये प्राण समान हैं, आदर्श समान हैं। हमारे निरंतर 'तू ही तू ही' पुकार में दो भाई – सिर्फ काकाजी और पप्पाजी होने चाहिएं।**

गुरुजी आज यहां काकाजी की एक अद्‌भुत सेवा कर रहे हैं। मैं कम आता हूँ। मुझे उनके प्रति बहुत प्रीति है। उन्हें काकाजी - पप्पाजी के वचन में किंचित अविश्वास नहीं – इस प्रकार उन्होंने सेवन भी किया है। इसके फलस्वरूप

आज **काकाजी और पप्पाजी की अद्‌भुत भक्ति का, सेवा–समागम का और निर्दोषबुद्धि का गुणगान गाकर के गुरुजी आप सबका एक अद्‌भुत संबंध दृढ़ कराने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं।**

तो आज का मंगलकारी शुभ दिन भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिवशक्ति, भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, महंतस्वामिजी, डॉक्टरस्वामिजी, गुरुजी, साहेब सबके चरणों में एक ही प्रार्थना है कि आप सबको इस प्रकार से साहेब, दिनकरभाई, गुरुजी बल दें। आप सब काकाजी और पप्पाजी के सामने नज़र रख कर, देह जैसी, सगे-संबंधी जैसी प्रीति गुरुजी जैसे संत के साथ संबंध करने के लिये प्रयत्न करना; गुरुजी का वचन में अटूट विश्वास रखना, अपना मन बुद्धि तर्क-वितर्क करे तो भी उसको हटा करके उनके वचन के लिए प्रार्थना करते रहना-करते रहना। तो जिस प्रकार से दोनों भाई अद्‌भुत जीवन जिया है, इस प्रकार काकाजी, पप्पाजी गुरुजी के साथ अद्‌भुत संबंध कराएं और आपका जीवन सर्वांगी धन्य हो–कृतार्थ हो... ऐसी काकाजी-पप्पाजी के चरणों में प्रार्थना।

प.पू. साहेबजी

स्वामिजी ने बहुत प्रेम से आशीर्वाद दिया। हम सब पर बहुत कृपा हुई। आज बहुत बड़ा प्रसंग है। अपने मंदिर में काकाजी के साथ पप्पाजी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा हुई। इसके लिये दिल्ली के सब वासियों को बहुत अभिनंदन हैं। स्वामिजी ने काकाजी-पप्पाजी का योगीजी महाराज के प्रति जो भक्तिभाव और काकाजी ने योगीजी महाराज में श्रद्धा-विश्वास से जो काम किया, इसके बारे में हम सबको दृष्टान्त देकर बहुत डीप में बात करी। १९५२ में काकाजी ने नंदाजी के इलॅक्शन में जो काम किया और योगीजी महाराज ने काकाजी को रियलाइज़ेशन करवाया, तब से **योगीजी महाराज के प्रति समग्र समाज की दृष्टि बदलने का काम 'काका' ने किया।** ऐसे **योगीजी महाराज छुपे साधु थे।** सबके दास होकर सबकी सेवा करते थे-सबको अच्छे लगते, **लेकिन वे स्वयं प्रभु के स्वरूप हैं; ऐसे भाव से उनके साथ जुड़ जाना, ऐसे भाव से उनका दर्शन करना, ऐसे भाव से उनकी आज्ञा का पालन करना–वो बात फर्स्ट टाइम दादुकाका ने १९५२ में सबके सामने रखी।** काकाजी के प्रति भाववाले–प्रेम वाले जो भक्त लोग थे, वे उनकी बात मान कर जीवन जीने लगे। सबको इसका आनंद आने लगा।

पहले हम पी.के. में पप्पाजी के साथ भोजन करते। पप्पाजी के सान्निध्य में–बा के सान्निध्य में हमारी साधना चल रही थी। १९६८ में पप्पाजी ने मुझे बुलाया और पूछा कि आज क्या कार्यक्रम है? मैंने कहा–आज गुरुवार की सभा है... तो बोले–आज मुकुंदजीवनस्वामी–'गुरुजी' आ रहे हैं। वो दिल्ली जा रहे हैं, उसकी विदाई सभा हम करें, तो युवकों को बोल देना सब आ जाएँ। श्रीजी कॉलोनी के ब्लॉक में हम रहते थे–वहाँ टॅरेस पर सभा रखी और पप्पाजी दो मंजिल ऊपर चढ़ के गुरुजी को लेकर वहाँ आए। मुझे याद है, तब गुरुजी बोले थे–मुझे कुछ मालूम नहीं है, दिल्ली में कोई पहचान नहीं है! वहाँ दिल्ली में कोई हरिभक्त भी नहीं है; तब दिल्ली में कोई भक्त नहीं थे। सिर्फ शर्माजी थे जिन्होंने हमारे पवई के मंदिर के लिए जमीन दी है। उन्होंने 'भारत साधु समाज' की बिल्डिंग में संतों के रहने का तय कर लिया था और काकाजी बोले थे–हमें दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर बनाना है, आप जाओ वहाँ। आमतौर पर साधु-संत कब जाते हैं? दो-तीन हरिभक्त होने चाहिएं। रहने का, खाने का, पीने का इंतजाम होना चाहिए–पर वहाँ तो कुछ नहीं था। तब **स्वामिजी ने जो बात बताई कि अपने गुरु में पूर्ण श्रद्धा...**

विश्वास... वो गुरुजी ने रखा। गुरुजी कोई सत्संग कराने के लिए, दिल्ली में मंदिर बनाने के लिए, सबका कल्याण करने के लिए नहीं आए थे; वो सिर्फ आये थे – काकाजी की आज्ञा का पालन करने के लिए। उनको यही भाव था कि काकाजी की आज्ञा का पालन करना वही कर्त्तव्य है, मेरी ड्यूटी है। दिल्ली में चाहे सत्संग हो या ना हो, कोई हो या ना हो, उसके बारे में उन्होंने कोई झंझट नहीं करी। काकाजी ने बोला था – दिल्ली जाना है और वहाँ आपको शर्माजी मिलेंगे। 'भारत साधु समाज' में रहना है। वो काकाजी ने जो बोला, वो आज्ञा को फॉलो करके वो दिल्ली आए।

तो, स्वामिनारायण भगवान कारियाणी ११ वचनामृत में बोले हैं कि **सत्पुरुष की आज्ञा से जब आप काम करते हो, तो आपके साथ भगवान की मूर्ति आती है – वही काम करती है।** तो उनकी भेजी भगवान की मूर्ति भी आई और हमने देखा कि अक्षरपुरुषोत्तम महाराज बैठ गए, शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज जिन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया, वो बैठ गए और गुणातीत समाज के स्थापक काकाजी बैठे, आज पप्पाजी भी बैठ गए! और... हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामिजी खुद प्रगट रूप में हमारे सामने बैठे हैं।

याद रखो! गुरुजी इधर काकाजी की आज्ञा में परम श्रद्धा-परम विश्वास रख कर आए, तो उन्हें कुछ नहीं करना पड़ा। पर, उन्होंने जो किया वो हमको अब करना है। मैं ये बता रहा हूँ। दादुकाका एक बात बहुत करते थे कि **कोलम्बस ने अमेरिका को ढूंढ निकाला और पृथ्वी की हिस्ट्री में सब जगह लिखा है – कोलम्बस ने अमेरिका ढूंढा। आज लाखों लोग अमेरिका जाकर आते हैं, मगर किसी का नाम हिस्ट्री में आता है क्या?** इधर बैठे हुए कई लोग अमेरिका गए होंगे, पर मेरा-तुम्हारा नाम हिस्ट्री में नहीं आएगा। कोलम्बस जब अमेरिका में गया, तो कोई सुविधा नहीं थी। वो एक छोटी नाव में गया और नाव में साथीदार भी ऐसे थे कि मुश्किल आने पर अलग हो गए। उन्हें – कहाँ जाना है? क्या करना है? कहाँ पहुँचना है? वो कुछ नहीं सोचा; बस निकल पड़ा और जाते-जाते अमेरिका पहुंच गया। सबको ज्ञान दिया कि ऐसा देश भी इस पृथ्वी पर है। उसका पूरा लाइफ समर्पण कर दिया और उसका नाम लिखा गया। तो **अब हमारे जैसे दिल्ली में बहुत आएंगे, लेकिन गुरुजी जो आए उनका नाम अमर हो गया; क्योंकि काकाजी की आज्ञा थी कि दिल्ली जाओ और बस आ गए।** क्या करना है? कहाँ जाना है? किसको मिलना है? – वो भगवान जाने और आप जानो; मैं तो पहुँच गया। वो जब विदाई हो रही थी तब गुरुजी बोले कि – मुझे मालूम नहीं वहाँ क्या है? लेकिन काकाजी की आज्ञा है – काकाजी ने बोला है इसलिये दिल्ली जा रहा हूँ। तो हम देखते हैं कि – हरिप्रसादस्वामिजी ने जैसे बताया कि योगीजी महाराज की आज्ञा में दादुकाका पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रख कर काम करते रहे, तो योगी रूप बन गए और वही **काकाजी की आज्ञा में गुरुजी पूर्ण रूप से - पूर्ण श्रद्धा से काम करते रहे तो गुरुजी काकाजी रूप, योगीजी रूप बन गए, स्वामिजी रूप बन गए।**

हमें अब उनका रूप बनना है, तो उन्होंने जो किया है वैसे हमें उनकी आज्ञा में रह कर जीवन व्यतीत करना है। कुछ बिगड़ नहीं जाएगा। वो बोलेंगे कि ऊपर से छलांग लगाओ। कैसे लगाएँगे? ये तो मरने का धंधा है। लेकिन आप लगा देंगे तो भगवान आपको जीवन देंगे। आपको कुछ नहीं होगा। ऐसी परम श्रद्धा से गुरुजी ने काकाजी की आज्ञा में जीवन व्यतीत किया, तो गुरुजी पूर्ण रूप से उनके स्वरूप बन गए और हमारे हृदय में वही स्वरूप स्थापित करने के लिए योगीजी महाराज, स्वामिनारायण भगवान, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी ने हमें वो भेंट दिये हैं।

...सच में, केवल कहने के लिए नहीं – पर हृदय में बहुत आनंद हो रहा है। हम गुजरात में – इंग्लैण्ड-अमेरिका में काम करते हैं, लेकिन हम गुजरातियों में काम करते हैं; पर **आपने इधर आकर बिन गुजराती के साथ काम किया...** ये भगवान का एक संकल्प था, वही आपके द्वारा काम हो रहा है। स्पीरिच्युअल जीवन जीने वाले लोगों के लिए बहुत सुविधा बन गई है। मैं कई बार कहता हूँ, सायन्टिस्टों ने हमें कितनी सुविधा दी? हम पहले पैदल चलते थे, फिर साइकिल आई, फिर कार आई। फिर कार में भी देखो – कितनी कारें आईं? आप बैठो तो १००, २००, ३०० एवं ४०० माइल का सफ़र करो, फिर भी थकावट नहीं लगती। पहले तो योगीजी महाराज बैलगाड़ी में तीन-तीन माइल सफ़र करते थे; योगीजी महाराज की नाभि खिसक जाती थी। महीने में दो-चार बार डायरिया हो जाता बापा को। ऐसी परिस्थिति में सायन्स ने हमें सुविधा दी। एरोप्लेन वगैरह देखो।

तो क्या स्पीरिच्युअल सायन्स कोई सुविधा नहीं देगा? एक पैर पर खड़े रहो, सब खाना छोड़ दो, समाज छोड़ दो, जंगल में चले जाओ, हिमालय में चले जाओ – तो ही भगवान प्राप्त होगा। ये सब पुरानी बात हो गई। **स्पीरिच्युअल सायन्स भी डॅवलप हुआ है।** खाओ-पीओ आनंद करो, फिर भी प्रभु के रूप बन सकते हो। **अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना ने भगवान जिसमें प्रगट हैं ऐसे गुणातीत साधु के द्वारा ऐसा सायन्स दिया है। ऐसे गुणातीत साधु मिल जाएं, तो उनके आगे दो हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा के मुताबिक जीवन जीते रहेंगे और सबको निर्दोष मानते रहेंगे, तो कुछ छोड़े बिना सब छूट जाएगा।**

यही सिद्धांत योगीजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज ने हमें दिया। अब आनंद से प्रगति करनी हो, तो ऐसा करना है। योगीजी महाराज बोलते थे – हमारे लिए 'इज़ी' बना दिया। आसक्तिरहित बनना, स्वामिजी ने जो बताया – जीरोनॅस पर चले जाना है, यह कितना आनंद से लहेज़त से कर सकते हैं। **ये करने के लिए गुरुजी की आज्ञा में रहना और सब भक्तों को निर्दोष मानना।**

ऐसा मानने में भी यदि तकलीफ होती है, तो हमें योगी बापा बताते कि – पैसे वाला एक सेठ था। उसके पास कार थी, अच्छी कोठी थी। कार में घर आए और १० स्टेप्स चल कर उसका डाइनिंग टेबल आ जाता, वहां खाना खाने बैठ जाता। नौकर पंखा चलाता और उसकी वाइफ भोजन की थाली लेकर आती। सेठ तो बैठा रहता और उसकी वाइफ उसके मुंह में भोजन देती, तो भी उस सेठ को पसीना आता रहता। वाइफ पूछती है कि भोजन मैं बनाती हूँ, यहाँ परोस देती हूँ, आपको मुँह में देती भी हूँ और ऊपर पंखा चलता है, तब भी आपको पसीना होता है? तो सेठ बोला – चबाता कौन है – तेरा बाप? मैं चबाता हूँ, उसका पसीना आता है। आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए – आनंदपूर्वक भगवान के रूप बन जाने के लिए इस प्रकार इतनी सुविधा हमारे लिए कर दी है। गुरुजी की आज्ञा में रहो, गुरुजी के संबंध वाले को निर्दोष मानो। जो सेवा उनकी ओर से आई हो, वो सेवा पूरी लगन-पूरे विश्वास व श्रद्धा से करो और सबके गुणगान और महिमा गाते रहो तो हरिद्वार-ऋषिकेष या हिमालय की चट्टान पर जाए बिना हम यहीं साधुरूप बन जाएँगे। स्वामिनारायण भगवान की कृपा से ऐसा बनने का मौका मिला है।

तो आज गुरुजी के प्राकट्य पर ऐसी प्रार्थना करते हैं कि आपने अक्षरपुरुषोत्तम, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और प्रगट रूप में हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी के सामने हम सबको बिठाया है, तो ये रूप हम सब बन जाएं – ऐसा आज पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर इन प्रत्यक्ष स्वरूपों के चरणों में हम सब की ओर से प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी

परसों यहाँ वैभव आया था, उसने एक 'टीशर्ट' पहना था। उस पर लिखा था– **'आई एम एक्साईटॅड ऑफ बीइंग हियर'।** मैंने वो पढ़ा तो मुझे लगा इसमें मेरे लिए थोड़ा चेईन्ज करना है– **'आई एम एक्साईटॅड ऑफ 'यू' बीइंग हियर'।** कहने के लिए यह बात नहीं कह रहा हूँ। आप में से कईयों को ख्याल आया भी होगा कि हर साल मेरा जन्म दिन मनाते हैं–आनंद करते हैं। तुम्हें कार्ड बेशक जाता होगा, लेकिन फोर्स कर-कर के कि– 'आप आओ, आप आओ' यूं मैंने आज तक कभी आग्रह नहीं करा। पर इस बार मैं चाहता था कि सब आएं और खास करके ये विद्यानगर से, हरिधाम से जो बहनें आई हैं, सो **'आई एम एक्साईटॅड ऑफ यू ऑल बीइंग हियर'।**

आपको लगता होगा कि यूं क्यों? जब से मैं सत्संग में आया, काकाजी मेरा आकर्षण का केन्द्र थे। योगीजी महाराज तो थे ही, पर शुरुआत में ज्यादातर मुझे आकर्षण काकाजी का रहता। जिसको जैसी जरूरत, वैसे ढंग से प्रभु वो चेतना में बैठ जाते हैं। मुझे पहले से खूबसूरत लोग खूब पसंद। ये 'साहेब' भी मुझे इसलिये पसंद हैं। काकाजी के बारे में तो कुछ कहना है ही नहीं–यूरोपियन जैसे! और... जिस-जिसको काकाजी के प्रति ऐसा भाव, वो मुझे खूब पसंद आ जाते थे। हंसादीदी ने पू. काकाजी का एक भजन भी बनाया था–**'रूडो रूपाळो फांकडो, जीवमां बेसी जाय रे टपोटप...'** जब मैंने यह भजन सुना था, तो मैंने पूछा था कि– ये बनाया किसने? तो बताया था कि हंसादीदी ने। फट् से मेरे मन में हो गया कि–'आ आपणी बेन सारी छे'।

पप्पाजी के साथ–वो थोड़े कड़े भी लगते थे, सो मुझे इनके साथ एकदम सॅट नहीं होता था। काकाजी को मैंने कहा भी था–'मने पप्पा नथी गमता'। काकाजी एकदम पूछते– केम? काळा छे एटले? फिर कहते भी – तारी मा बी काळी छे! ये सारी घर की कहानी जैसी बनी हुई है। फिर मैं साधु हुआ, अक्षरभुवन में रहने आए-करे। स्वामिजी के बारे में मुझे ज्यादा ख्याल नहीं था। इतना ही जानता था कि प्रभुदास योगीजी महाराज के सेक्रेटरी हैं। पर, एक बार मुझे कुछ बात करनी थी, सो मैंने स्वामिजी को कहा था कि 'मारे तमारी साथे बेसवुं छे'। नीचे एक्साइज़ की ऑफिस थी और वहां एक बेंच था, तो रात को स्वामिजी के साथ बैठने गया। तब मुझे पता लगा कि ये तो काकाजी का निजी है। तब से स्वामिजी भी मेरे लिये बदल गए थे। अक्षरविहारीस्वामिजी–उसमें तो मुझे कुछ सोचना था ही नहीं। सो, **आज मुझे सबसे ज्यादा खुशी यह है कि हमारे 'योगी परिवार' के सभी वडील यहाँ इकट्ठे हो गए हैं। अपने लोग और अपना एक फॅमिली!**

आप दो दिन से जो मेरे बारे बातें करते हो – भक्ति है, ये है, वो है। वो तो ये स्वामिजी जानते हैं कि मेरे में कितनी भक्ति है? हाँ, एक बात मेरे में है कि **ये जो मेरे अपने हैं, इनका मैं टोटल हूँ। उनसे मैं लडूँगा, झगडूँगा, कुछ**

भी करुंगा; लेकिन, आख़िर आप मेरे हो और मैं आपका हूँ – ये कभी बदल नहीं सकता। सो आप जो आए हो, इसलिए थँक्स, थँक्स, थँक्स, थँक्स, थँक्स, थँक्स एण्ड थँक्स टेन्ड्स टु इनफिनीटी और ऐसे हमेशा आते रहना।

पप्पाजी की मूर्ति बारे की जो बात है वो ऐसी है कि आप लोगों ने भी **काकाजी** को **कहते** सुना होगा कि – 'धन्यवाद हो! मेरे साथीदारों को! और... **शुद्ध गुरुपंरपरा को तनिक भी आँच लाए बिना एक विकास हुआ है।**' काकाजी के कई प्रवचनों में ये सॅन्टेन्स हमेशा आते थे। **ये मंदिर हुए, अपने अलग-अलग सेन्टर्स हुए – इसे काकाजी विकास कहें, ये तो आप भी नहीं मानोगे। पर एक आध्यात्मिक समाज का जो सर्जन हुआ – कुटुंबभाव से जीता हुआ जो समाज तैयार हो गया, वो इनके कहने का मतलब था।** तो मुझे भी हमेशा ये रहा है कि ये शुद्ध गुरु परंपरा में कभी भी हम कोई गड़बड़ ना करें। काकाजी की अकेली मूर्ति थी, उस दिन से मुझे था कि अपने लिए ये शुद्ध गुरु परंपरा का मतलब – महाराज, स्वामी, भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदाश्री, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी! जो स्वरूप 'प्रत्यक्ष' हैं, इनकी अभी ऐसी मूर्ति रखना-करना बेमतलब की बात जैसी है। पर, मुझे हमेशा ऐसा रहा और हम जानते हैं कि काकाजी और पप्पाजी ने गुणातीत समाज का सर्जन किया है और उसमें स्वामिजी ने खूब साथ दिया। आप लोगों को ख्याल होगा 'रीयल इसॅन्स ऑफ तंत्र' और 'सहृदयी' का पुस्तक – उसमें अंदर बिलीपत्र के रूप में तीनों मूर्तियों का प्रिंट रखवाया था।

तो, इस हेतू कि हमारा विकास रुक ना जाए, जिसको कहते हैं जकड़ ना जाए, यूं मेरी गरज से कि मेरा आध्यात्मिक विकास रुक ना जाए, जकड़ ना जाए, इसलिए इस प्रिंसिपल को पकड़ कर मैंने **पप्पाजी की मूर्ति** की प्रतिष्ठा करवाई है। **पूरी गुरु परंपरा में, 'गुणातीत समाज के आद्य सर्जक' के रूप में आज इनको यहाँ बिठाए हैं।** दूसरी एक मुझे पसर्नल लालच है कि २००३ में जब काकाजी की स्टेम्प रीलीज़ करी, तब वे बीमार थे और पप्पाजी का लॅटर आया था कि – मैं आना चाहूँ, तो भी मैं आ सकूँ ऐसा है नहीं। फिर आख़िर में लिखा था – लेकिन **मैं हमेशा के लिए वहाँ आ जाऊँगा, तब सोने पे सुहागा होगा (सुगंध होगी)।** आज मैं आप लोगों के पास ये बात खोल कर इसलिए करता हूँ कि पप्पाजी की मूर्ति यहाँ विराजमान हो गई है, अब वे हमेशा यहीं रहें ऐसे साहेब, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामी आशीर्वाद दें ताकि हमारी परवरिश चालू रहे...

एक और बात – ही वॉज़ नेवर पज़ेसिव ऑफ अस! यह मेरा ही (बन कर) रहे, इस हेतू उन्होंने कभी प्रयत्न नहीं करा। बट, ही वॉज़ ऑलवेज़ एट अवर डिस्पोज़ल एण्ड ऑलवेज़ फॉर अस, इर्‌रिस्पेक्टिव ऑफ हूम सो एवर वी बीलॉंग! हमने उन्हें स्वीकारा हो या नहीं; जैसे कि मैंने उन्हें कहा था कि आप मुझे अच्छे नहीं लगते। पर, उन्होंने मुझे कह दिया था कि भले मैं तुझे अच्छा नहीं लगता, पर तू मुझे अच्छा लगता है। मुझे उनका वह लहज़ा वगैरह आज भी याद है।

सो, अब हमारी यह फर्ज़ है कि – कुछ भी हो, हम सभी को उनके 'एट डिस्पोज़ल' रहना है। **जिन-जिन को काकाजी का – पप्पाजी का संबंध है, उनके हम बने रहें। यह हक़ आपका हम पर रहे, हमारा आप पर रहे-इतनी प्रार्थना...**

२५ मार्च, २००७ सायं – प.पू. गुरुजी का ७०वाँ प्राकट्योत्सव

प.भ. दिलीपभाई भोजाणी (लंदन)

आज हमारे प्यारे गुरुजी का प्रागट्य दिन है। सत्संग में हम बोलते हैं कि आपके गुरु को, आपके गुरुहरि को–उसके स्वरूप को पहचानो। जहाँ जुड़े हुए हो, उसको पहचानो। मैं इतना कह सकता हूँ कि मैं धीरे-धीरे अभी गुरुजी को पहचानने लगा हूँ।

१९९२ में पप्पाजी यहाँ– दिल्ली में थे, तभी मैं पप्पाजी के पास यहाँ दिल्ली आया था। तो मुझे एयरपोर्ट पर लेने गुरुजी रात को तीन बजे आए! नहीं मैं उनको जानता था, ना ही वो मुझे जानते थे। पप्पाजी को एयरपोर्ट पर आना था। गुरुजी, पप्पाजी को बोलते हैं कि नहीं पप्पाजी इस टाइम पर आप ना जाओ; मैं जाऊंगा, आप आराम करो। तभी **गुरुजी की महानता का थोड़ा ख्याल आया।** लास्ट इयर मैं सालों के बाद फिर दिल्ली आया। मैं अंकल के घर पर रात को डिनर लेने को गया था। गुरुजी कुल्लू-मनाली से बारह घंटे का सफ़र करके रात को बारह बजे मुझे वहाँ मिलने आए। पप्पाजी ने मुझे उनके 'मानस पुत्र' का खिताब दिया हुआ था कि तू मेरा मानस पुत्र है। तो, गुरुजी बोलते हैं कि मुझे **'पप्पाजी के मानस पुत्र'** को मिलने जाना ही चाहिए। मैंने बोला गुरुजी मुझे आपको मिलने आना चाहिए, आपके मंदिर आना चाहिए था; लेकिन आप यहाँ थे नहीं। गुरुजी बोले– वो तो अभी मैं आ गया, मुझे आपको मिलना है।

एक मास पहले शाश्वत् स्मृति यात्रा में जब हम आए तभी, हम हरिद्वार गए उससे पहले, गुरुजी का दर्शन करने दिल्ली आए। सभा चल रही थी, तो गुरुजी ने बोला कि हम मंदिर में पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठित कर रहे हैं; **आपको लंदन से आना ही है, आना ही है, आना ही है, आना ही है, आना ही है।** पांच बार गुरुजी ने बताया। मैंने बोला गुरुजी मैं तो आऊँगा ही, लेकिन **आपको मुझे इनवाईट तो नहीं करना चाहिए, सिर्फ आज्ञा करनी चाहिए। इसलिए मुझे गुरुजी को एक विनती करनी है कि आज के बाद सिर्फ आज्ञा दो, पूछो नहीं।**

कल रात को मैं गेट के पास ऑफिस के बाजू में खड़ा था। गुरुजी ने मुझे रात को ११-११.३० बजे देख लिया। पूछते हैं जाना है ना 'होटल' पर? मैंने बोला– हाँ। मैंने यह भी बोला कि ट्रांसपोर्ट फिक्स हो गया है। वो उनकी कार में कहीं जा रहे थे। उतरने लगे और बोलते हैं ये गाड़ी ले जाओ। **इस दुनिया में हमने किसी ने ऐसा नहीं देखा कि इतने बड़े स्वरूप खुद कार से उतर कर अपनी कार ऑफर करते हैं! ऐसा तो कोई नहीं करता।** इंग्लिश में हम बोलते हैं कि– **'धिस इज़ धी एपीटॉम ऑफ मॉडेस्टी'।** फिर बाहर उन्होंने अरुणा को देखा, वो राह देखती थी। ट्रांसपोर्ट फिक्स हो गया था, सिर्फ कार आने में देर थी। गुरुजी वहाँ उतर गए और गाड़ी गेट पर भेजी। बोले ये गाड़ी दिलीप और अरुणा को छोड़ कर आए। ही इनसिस्टेड – उन्होंने इनसिस्ट किया कि नहीं, आप इसमें ही जाओ। मैंने बोला गुरुजी सब तय हो गया है, कार आ रही है। बोलते हैं – नहीं। आज दोपहर को भी मैं वहां खड़ा था, वे बोले – 'होटल' पर जाना है ना! तो ऐसा क्यों नहीं करते, मेरी गाड़ी ले जाओ। आप तो चलाते हो, शाम को ले आना वापिस। मैं बोला गुरुजी मुझे दिल्ली में गाड़ी नहीं चलानी है, क्योंकि मैं मानता हूँ कि गाड़ी चलाना एक प्लेज़र होना चाहिए, हार्डवर्क नहीं। इंडिया में गाड़ी चलाना हार्डवर्क है, प्लेज़र नहीं। तो बोलते हैं कि अरुणा को बोलो चलाए। मेरे

मन में एक ही ख्याल आया कि **माहात्म्य क्या होता है, वो तो कोई गुरुजी से सीखे**! हम सब तो पप्पाजी के मामूली सेवक हैं, लेकिन गुरुजी के साथ बैठने का, बात करने का, एक ही प्लेटफॉर्म पर साथ होने का जो मौका – जो अवसर उन्होंने हमें दिया, उसके लिये तो हम गुरुजी के शुक्रगुजार हैं। गुजराती में हम बोलते हैं–**'गुरुजीना माहात्म्यथी मस्तक नमी जाय छे'**।

पप्पाजी कई बार बोलते थे–भगवान यदि जीवन में नहीं होते, तो हम क्या करते? जन्मे-जीवे-मरे, जन्मे-जीवे-मरे – वो सायकल चलता ही रहता है। उसका एक चुटकुला मैं सुनाता हूँ।

'एक सेठ था – बीमार हो गया, लास्ट घड़ियाँ थी; डॉक्टर ने बोल दिया कि अभी कुछ नहीं हो सकता। आप सब फॅमिली उसको मिल लो, कोई भी टाईम उसकी आँखें बंद हो जाएंगी। वो सोया हुआ था, आँखें बंद थी। उसके बाल-बच्चे सब वहां खड़े थे।

वो धीरे से पूछता है – *राजू कहां है?*

तो राजू ने बोला – *पापा मैं यहीं हूँ – यहीं हूँ, आपके पास ही हूँ।*

थोड़ी देर के बाद पूछता है – *वो छोटा कहां है?*

छोटा पैर के पास खड़ा था, वो बोलता है – *मैं यहीं हूँ, यहीं हूँ।*

फिर थोड़ी देर हुई, तो पूछता है – *चक्की कहां है?*

वो बोलती है और रोने लगी – *पापा मैं यहीं हूँ, आप मत जाओ – मत जाओ।*

उसकी वाइफ उसको बोलती है कि – *आप अभी बात ना करो, डॉक्टर ने आपको बोलने के लिए मना किया है।*

थोड़ी देर के बाद वो पूछता है – *बड़ा कहां है?*

बड़ा बोलता है – *मैं यहीं हूँ, यहीं हूँ।*

तो, वो सेठ बोलता है – *(तुम) सब यहाँ हो तो (फिर) दुकान पर कौन है?'*

ऐसा हमारा जीवन होता, यदि सत्पुरुष हमारे जीवन में नहीं आते। पप्पाजी एक सॅन्टेन्स बहुत बार बोलते थे–**वी आर धी वाइज़ेस्ट इन धी वर्ल्ड।** 'वाइज़' – क्योंकि हम भगवान भजते हैं। लेकिन कृपा तो उन्होंने की – ये अक्षरधाम की कैबिनेट जो बैठी है उसने की। सब भगवान भजते हैं, सारा देश धार्मिक है। जिसको जिस भगवान में – जहाँ आस्था होती है वहाँ मंदिर पर जाते हैं, माथा टेकते हैं, प्रसाद लेते हैं, प्रार्थना करते हैं। लेकिन इस पल धाम रूप जो रहना है, इस घड़ी – इस पल भगवान का सुख लेना है, उसके लिये साधना करनी पड़ती है। और वो साधना कैसे करनी है वो हमारे स्वरूप हमें सिखाते हैं। और वो कैसे सिखाते हैं? हमें कुछ कहते नहीं हैं; खुद ऐसा जी कर दिखाते हैं।

गुरुजी का जीवन मैं देखता ही जा रहा हूँ, देखता ही जा रहा हूँ। उन्होंने काकाजी को तो अमर रखा है; लेकिन खास करके दिल्ली वाले बहुत नसीब वाले हैं कि गुरुजी जैसे की प्राप्ति हुई है, ऐसा माहात्म्य सम्राट स्वरूप की प्राप्ति हुई है। वो काकाजी को अमर रखेंगे, वो पप्पाजी को भी अमर रखेंगे – दोनों को। हमारे लिए तो गर्व की बात है। अभी मैं भी बोल सकता हूँ कि **हमारी दिल्ली तक पहचान है, दिल्ली तक पहुँच है; क्योंकि गुरुजी यहाँ विराजमान हैं, काकाजी यहाँ विराजमान हैं और आज से पप्पाजी भी यहाँ विराजमान हैं।** ऐसे मौके पर शब्द नहीं मिलते।

दो दिन से हम आध्यात्मिक आनंद कर रहे हैं। जल्दी उठकर यहाँ आ जाते हैं; गुरुजी ने सब प्रॉवाइड कर रखा

है। आओ – नाश्ता करो, बैठो, जूस पीओ, प्रवचन सुनो, खाओ, सब कार्यक्रम में शामिल हो। किसी को कोई तकलीफ ना पहुँचे ऐसा बंदोबस्त उन्होंने किया है। कौन किसी के लिये इतना करता है? **घर की शादी होती है, उसमें भी हमें काम करना पड़ता है। फिर भी दस रिश्तेदारों को बुरा लगता है – वो तो अलग। कोई बोलता है मेरा ये नहीं किया, कोई बोलता है मेरा मान नहीं किया, कोई बोलता है खाना अच्छा नहीं था। यहाँ तो सब पॉज़ीटीव – पॉज़ीटीव – पॉज़ीटीव – पॉज़ीटीव।** सुख-शांति और आनंद की एनर्जी की वॅव्ज़ चल रही है।

पप्पाजी ने हम सबके लिए बहुत किया। पृथ्वी पर हमारे लिये ही पधारे थे। **काकाजी-पप्पाजी दोनों भाई जो बोलते थे कि 'अक्षरधाम' नीचे लाना है, उन्होंने खड़ा करके दिखाया।** वैसे बोलना तो बहुत कुछ चाहता हूँ, लेकिन पप्पाजी हमेशा बोलते हैं – पुट थीयरी इन टु प्रॅक्टिस। 'जी' के दिखाओ-बोलो नहीं। तो आज के मंगलमय दिन पर प.पू. गुरुजी और यहाँ हाज़िर हुए हमारी अक्षरधाम की कैबिनेट – सब स्वरूपों के चरणों में एक ही प्रार्थना है कि **गुरुजी जैसे जी रहे हैं, जैसे उनकी आंख में ना मान, ना ईगो – कुछ दिखाई नहीं देता है। बस मैं क्या करूं – सबके लिये क्या करूं, सब कैसे खुश हों – वही उनकी एक भावना है।** वो हमें सीखनी है। तो यही प्रार्थना करनी है कि हम यहाँ से जब जाएँ – आज सब फंक्शन्स खतम होंगे; तो, ये गुरुजी के गुण कहो, उनका माहात्म्य कहो, वो लेकर हम जाएँ। सब दूर-दूर से आये हैं। सबके लिए मैं ये प्रार्थना करता हूँ कि **हम गुरुजी से लेकर जाएँ, सीख कर जाएँ। सेवा कैसे करते हैं? माहात्म्य कैसे रखना है?** उनसे हमें बहुत कुछ सीखना है। अभी तो स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी सबके आशीर्वाद मिलेंगे। आशीर्वाद तो हमें बहुत मिलते ही रहते हैं। लेकिन ऐसा जीना, ऐसा सुख पाना, स्वरूपों को राजी करना – यही यज्ञ हमारे जीवन में होना चाहिए और उसके लिए हम शक्ति माँगते हैं। प्रार्थना तो करेंगे ही, लेकिन ये सब ऊपर बैठे हुए हैं, धे ऑर क्वाईट जनरस। सबका दिल बड़ा है, इधर-उधर का कुछ देखते नहीं हैं। 'सब सुखी होओ, सुखी होओ' – ऐसी प्रार्थना करते रहते हैं हमारे लिए। तो हमारे जीवन में भी ऐसे सारे गुण आएं। हम भी डिवॉशन में, लॉयल्टी में कोई कसर नहीं छोड़ें और उसके लिए वे शक्ति दें। प.पू. पप्पाजी, प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी सब स्वरूपों के चरणों में यह प्रार्थना। जय स्वामिनारायण!

प.भ. नरेन्द्रजी (जगरांव)

आज अक्षरधाम पृथ्वी पर उतर आया है और इस दिव्य मंच पर प्रभु दिव्य विभूतियों का रूप धारण करके हमारे सामने विराजमान हैं... जैसे मैं आज इन दिव्य विभूतियों को देख रहा हूँ, उसी तरह मैंने काकाजी के दर्शन किये हैं... बार-बार काकाजी की स्मृति जो मेरे माइन्ड में उछल रही है, इसका एक कारण है। इतना बड़ा दिव्य समाज, इतना एरेंजमेंट, इतना प्रबंध! समाज कहाँ से कहाँ पहुँच चुका है? यहाँ गुजरात से, महाराष्ट्र से, बॉम्बे से – ना जाने कहाँ-कहाँ से, पंजाब से, हरियाणा से, यू.पी. से सभी हरिभक्त आए हुए हैं। मैं कोई प्रवचन नहीं कर सकता। मैं कोई ज्ञान की बात नहीं कर सकता, लेकिन जिस बात का साक्षी हूँ, वो कहने से कभी नहीं डरता। **काकाजी का जो भी सेवक होगा वो निर्भीक होगा, वो अपने अंदर कोई विचार कभी भी दबाता नहीं है, ये काकाजी ने हमें सिखाया है। काकाजी कहा करते थे तुम किसके पुत्र हो? तुम सम्राट के राजकुमार हो। भक्ति भी करनी है, तो भिक्षा नहीं माँगनी। तुम राजकुमार हो। राजकुमार का पुत्र – सम्राट के पुत्र को अगर कोई चीज भी चाहिएगी, वह हाथ नहीं फैलायेगा। वो अपने आप उसको मिलेगी... वो मोती चुनेगा – तो काकाजी की**

भक्ति तो ऐसी भक्ति है।

मैं देख रहा हूँ , पंजाब से ९९ परसेन्ट हरिभक्त यहाँ पहुंचे हुए हैं। इसका कारण दो ही विभूतियाँ हैं। सर्वप्रथम मेरे आदरणीय, मेरे ईष्ट, मेरे प्रातः स्मरणीय प.पू. काकाजी महाराज और दूजे प.पू. गुरुजी महाराज जिनमें – जिनकी आंखों में मैं आज काकाजी को देखता हूँ। जब काकाजी हमें छोड़ कर गए तो दिल को बड़ा दुःख हुआ। अंदर से मन घबरा गया। बड़ा शोक - सा लगा, अब क्या होगा ? अब हमें कौन संभालेगा ? उस समय काकाजी की बातें याद आयीं, क्योंकि काकाजी ने उस समय तक हमारी पूर्ण व्यवस्था कर दी थी। आपको पता होगा कि **जब काकाजी की देह को अग्नि दी गई**, तो मैंने पढ़ा है – **पप्पाजी महाराज उसके साक्षी रहे हैं** और उन्होंने कहा कि **गुरुजी ने चीत्कार की और काकाजी गुरुजी की देह में प्रवेश कर गए!** देखो, **हमारे संदेह को मिटाने के लिए कि हम कहीं कोई संदेह ना कर बैठें – कहीं हम कोई भूल ना कर बैठें, इन्होंने बिल्कुल स्पष्ट कह दिया।** तो महापुरुष – परोपकारी पुरुष हमेशा ही पात्रता को देखे बिना भी कल्याण कर देते हैं। महापुरुष तरुवर की तरह होते हैं। वृक्ष अपना 'फल' खुद कभी नहीं खाते, दूसरों के लिए उनके 'फल' होते हैं और वृक्ष कभी ये नहीं देखता कि जो मुझ से फल लेने आया है, उसको मैं दूँ या ना दूँ। ये परोपकार की बात है। काकाजी ने वो बातें की, जो धरातल से शुरू होती हैं; ऊपर से नहीं – धरातल से। मैं उस पृष्ठभूमि को याद करता हूँ।

आज ही बात की गई कि गुरुजी जब यहाँ आये तो वो किसी 'साधु समाज' में ठहरे थे और यहां कोई भक्त नहीं था। काकाजी भी जब पंजाब में आए तो वहाँ 'स्वामिनारायण भगवान' के नाम को जानने वाला कोई नहीं था। हमें पता ही नहीं था – स्वामिनारायण भगवान कहाँ हैं, कौन हैं ? अगर कभी नाम सुनते भी तो एक लिमिट में वो बात रह जाती कि वो गुजरात के हैं! पर, भगवान तो सर्वव्यापी हैं। ऐसी परिस्थितियों में काकाजी हमारे पास स्वयं चल कर आए, दर्शन दिए और भगवान स्वामिनारायण का हमें जाप करवाया। हम नहीं जानते (थे) कि 'धुन' क्या होती है ? अगर हमें कोई 'धुन' करने को कहता, तो हम म्युजिक की धुन को ही 'धुन' कहते थे। मैं अभी तक सोचता हूँ कि कितनी भाग्यवान है वो धरती, कितने भाग्यशाली हैं वो लोग, कितने भाग्यशाली हैं हम ? **आप जगरांव आओ, उन संकरी गलियों को देखो और उस बाबा संतासिंह की धर्मशाला को देखो। एक छोटी - सी जगह है, जहाँ उस समय इलेक्ट्रीसिटी का कोई प्रबन्ध नहीं था। कोई सिलिंग फॅन भी नहीं लगे हुए थे। काकाजी आए, तो कुछ टाट बिछा दिए गए, कहीं से तख्तपोश मांग कर ले आए, ऊपर चादर बिछा दी और दो-तीन तकिए इकट्ठे करके रख दिए। यूं शुरू हो गया स्वामिनारायण भगवान के आगमन का सिलसिला।** काकाजी गली-गली में घूमे, प्रत्येक घर में गये। आज वहाँ एक समाज बन चुका है, नई आबादी बन चुकी है और हमारे हरिभक्तों की नई-नई कोठियाँ बन चुकी हैं। वहाँ सभाएँ होती हैं और काफी अच्छा वातावरण होता है... **हम ऋणी हैं काकाजी महाराज के – हम ऋणी हैं गुरुजी के जिन्होंने हमें एक रास्ता दिया – स्वामिनारायण भगवान का रास्ता दिया।** उस समय तो आम आदमी की तरह कभी सोमवार का व्रत, कभी मंगलवार का व्रत, कभी बुधवार का व्रत रखते थे – कोई लक्ष्य नहीं था। **अब एक लक्ष्य मिल गया है, एक भगवान मिल गया है, जिसकी हम श्रद्धा से आराधना करते हैं।** काकाजी ने – गुरुजी ने हम पर बहुत स्नेह बरसाया है।

एक और बात बहुत ही रहस्यमयी है। जैसे आज गुरुजी ने अपने प्रवचन में कहा कि जो काकाजी को ध्याते हैं – जो काकाजी से जुड़े हुए हैं, मुझे वो अच्छे लगते हैं। हम जगरांव वाले कई हरिभक्त बीच में इस लहर में से टूट गये थे। लेकिन जब कभी भी कोई उत्सव हुआ – जब कभी भी कोई सभा हुई , चाहे दिल्ली में – चाहे जगरांव में, तो

गुरुजी ने उन हरिभक्तों को चुन-चुन कर बुलवाया – जैसे **काकाजी कहा करते थे, आप बेशक हमें छोड़ दोगे, हम आपको कभी नहीं छोड़ेंगे।** तो उनकी ये बात आज भी पूर्ण तरह सच हो गई है। आज बातें तो करने को बहुत हैं। काकाजी की बात करी जाए, मैं तो घंटों लगा दूँगा। पढ़ कर नहीं, अंतर की बात है। भावना की ही बात है – ज्ञान की बात नहीं है...

तो गुरुजी का आज ७०वां प्रागट्य दिन है, हम सब ये उत्सव मना रहे हैं। मेरे मन में एक बात आ रही है। ये अब 'उत्सव' नहीं रह गया, आज का दिन 'पर्व' बन गया है। उत्सव और पर्व में थोड़ा-सा फर्क है। आप कहेंगे कि पर्व कैसे बन गया, उत्सव से ? तो **आज हमारे पप्पाजी महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा हुई है और ये 'उत्सव' से 'पर्व' बन गया है** – जैसे दीवाली का पर्व। उत्सव तो हम कभी भी मना सकते हैं।

गुरुजी की दिनचर्या देख कर हम हैरान हो जाते हैं... इनका 'प्रेम' वो ही प्रेम है। इन्होंने हमसे क्या लेना है ? प्रेम के भूखे, प्रेम का सौदा – और कोई सौदा नहीं किया। **काकाजी वहाँ आए तो हमसे क्या लेने आए और हमने उनको अभी तक भी क्या दिया ? उन्होंने तो हमें अनमोल दर्शन, अनमोल स्वामिनारायण की भेंट दी और वो भी कैसे दे दी ? बिना मोल के ! अगर हम अब भी उसे ना संभाल पाएं, तो हमारी कसर है।** लेकिन ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि **काकाजी अब गुरुजी में विराजमान हैं।** जब भी हम डगमगाएँगे, हम गुरुजी को जरूर पुकारेंगे और वे हमें संभाल लेंगे। हमें दृढ़ विश्वास है; ज्यादा भक्ति की बात तो नहीं जानते हैं, लेकिन हमें पूरी निष्ठा है। गुरुजी और यहाँ बैठी हुई विराजमान **आनंदी दीदी** जगरांव के लिये तो ऐसे बन गए हैं – मानो व्यक्तिगत। जगरांव से कभी भी किसी भी वक्त किसी भी बात के लिए कोई भी इनसे फोन कर लेता है। ज़रा-सी कोई बात हो, ज़रा-सी कोई अड़चन हो तो भाभियाँ और बहनें आनंदी दीदी को फोन कर लेती हैं, हम गुरुजी से बात कर लेते हैं।

यह बात हम कहीं दूसरी जगह करते हैं, तो वे (दंग होकर) पूछते हैं कि क्या आप अपने गुरुजी से बात कर लेते हो ? क्योंकि **आजकल 'स्टेटस सिम्बल' के बड़े-बड़े गुरु हैं, जिसके पास जाने की कोई एप्रोच नहीं है। पंडाल दूर-दूर तक लग जाते हैं। घरों में मूर्तियाँ रखी हुई हैं। लेकिन वर्षों बीत जाते हैं, उनके सामने नहीं जा पाते हैं – उनसे बात नहीं कर सकते।** कितने सौभाग्यशाली हैं हम ! आने की बात तो दूसरी है, **हम घर बैठे गुरुजी से बात कर लेते हैं। इतनी महानता, इतनी दिव्यता, इतनी सरलता कहाँ मिलेगी ? ये जो लक्षण हैं, ये भगवान के लक्षण हैं।** लेकिन इसमें भी मुझे थोड़ी-सी कमी लगती है। **ये तो सर्वोपरि भगवान हैं, साकार भगवान हैं – सर्वनियंता, सर्वोपरि !**

...मैं क्षमा चाहता हूँ कि मैं भावनाओं के आवेग में बह जाता हूँ और मुझे समय का ध्यान नहीं रहता है। आप मुझे क्षमा करें, मैं गुरुजी से क्षमा माँगता हूं। अंत में एक बार फिर मैं गुरुजी के प्राकट्य दिवस पर उनको बधाई देता हूँ और उसके साथ, आप सबको भी बधाई है क्योंकि हमें ऐसे गुरुजी मिले हैं। तभी ऐसे 'पर्व' मनाये जा रहे हैं और अंत में सभी महान विभूतियों से विनती करूँगा – प्रार्थना करूँगा कि आज के दिन वो हमें आशीर्वाद दें कि **हम काकाजी के दिखाए हुए मार्ग पर सदा चलते रहें,** हमारी जो कोई कसर रह जाए, हमारी जो कोई त्रुटि रह जाए उसको क्षमा कर दिया जाए... सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. शांतिभाई साहेब

...संत की जो डॅफिनेशन होती है, उनका अभी भजन गाया – संत निःस्पृही होता है, संत सब को प्रेम देता है। जो **गुणातीत संत** हैं, वो **प्रेम देकर स्वभाव का परिवर्तन करते हैं।** भगवान स्वामिनारायण-अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना में जो कोई संबंध में आते हैं, उनका अंतिम ध्येय क्या होता है? भगवान की प्राप्ति! जीवन में भगवान मुख्य हैं। भगवान एक ही हैं जो हमारे हृदय में – हमारे सारे जीवन में हैं। दरअसल, हम नहीं हैं – हम झीरो हैं।

४०-४५ साल से गुरुजी का जीवन देखा है। उन्हें पहले जब संबंध हुआ – काकाजी से प्रेम हुआ; सोनाबा से प्रेम हुआ तो पूर्ण रूप से हुआ। काकाजी अच्छे लगे और उसी समय समर्पण हो गया। **समर्पण किया नहीं जाता है – हो जाता है। गुरुजी ने जो समर्पण किया, वह समर्पण 'पूर्ण रूप से' इसलिए कि काकाजी की आज्ञा हुई, ऐसा वर्तन किया; इसमें से काकाजी की 'अनुवृत्ति' और काकाजी का 'अभिप्राय' उनका जीवन बना।**

योगीजी महाराज ने उन्हें दीक्षा दी... गुरुजी को बापा के प्रति, काकाजी के प्रति, पप्पाजी के प्रति, सोनाबा के प्रति जो लगाव था, वो लगाव इतना दृढ़ था जिसे योगीबापा जानते थे कि – सच्चे साधक हैं; साधना करने के लिए उनका तंत्र-शरीर, शायद आज नहीं मानेगा, पर जो आत्मा है वो बहुत बड़ी है। योगीजी महाराज वो देखते थे, काकाजी वो देखते थे, पप्पाजी वो देखते थे। तो **गुरुजी के जीवन को देखते हुए हम साधकों में उत्साह – उमंग – हौंसला बढ़ जाता है। उनमें गुणातीत स्वरुप उभर आया – साधना करके।**

आज दो दिन से गुरुजी के बारे बात हो रही है, तो कोई ऐसा नहीं बोला कि जब प्रगट हुए – जब छोटे थे तब से वो ध्यानी थे, वो बहुत ज्ञान की बातें किया करते थे। किसी ने ऐसा नहीं बताया। लेकिन जब बड़े पुरुषों की बात होती है, तो कहते हैं – वो तो पहले से ही ऐसा है, वो तो साधु होने वाला था। गुरुजी के बारे किसी ने ऐसा नहीं बताया और मैं ऐसा समझता हूँ कि ऐसा था ही नहीं, तो बताएँ कैसे? लेकिन **गुरुजी के पास जो था, उसकी सब साधकों में जरुरत है।** वो है – ऐसे दिव्य पुरुष के साथ ऊपर से नहीं - पूर्ण रूप से संबंध करने की। तो रूपांतर होता है। काकाजी ने बोला दिल्ली जाओ, तो आए - रहो, तो रहे। जो कुछ कहा – योगीजी महाराज ने कहा साधु बन जाओ, बन गए। **आज एक छोटा-सा कोई भक्त भी गुरुजी को बोले कि ऐसा करो। 'जी, करते हैं।' ऐसी सरलता वो गुणातीत अवस्था है – स्थिति है।** वो प्राप्ति जो उन्होंने करी है, वो साधना से करी है। वो बोले कि मैंने कुछ साधना नहीं करी, लेकिन काकाजी - पप्पाजी, योगीजी महाराज के साथ जो संबंध करा और बाद में हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, महंतस्वामिजी, साहेबजी - ये सब के साथ उनका ऐसा संबंध रहा है। सब को बहुत बड़े माने और आज जैसे स्वामिजी को मानते हैं, साहेबजी को मानते हैं, अक्षरविहारीस्वामिजी को मानते हैं - वैसे सब संतों को मानते हैं और छोटे से छोटे हरिभक्तों को भी वो ऐसे बड़े मानते हैं - काकाजी का स्वरूप मानते हैं, इसलिए वो बड़े हैं। यह अनिवार्य है। **साधना के लिए भक्तों में खो जाना अनिवार्य है।**

ये जो आध्यात्मिक साधना पथ पर वो चले, ऐसी प्रार्थना करके जो कोई भी चलेंगे, वो जरुर प्राप्ति करेंगे। ऐसे

हम को फॉर्स मिलता है – गुरुजी के जीवन से। आज जन्म दिन पर गुरुजी को प्रार्थना करते हैं – मैं जरुर मानता हूँ, आप बुद्धिशाली हो; आज्ञा काकाजी की, पप्पाजी की, योगीबापा की आज्ञा का अनुसरण करने के लिए इन स्वरूपों के साथ गाढ़ प्रीति के कारण आपने बुद्धि को बाजू पर रख कर प्रार्थना - भजन करा है। हम सब साधक भी ऐसे सोचते तो हैं कि हम सब का उनके साथ ऐसा संबंध हो जाए। लेकिन **हमारी जो बुद्धि है, हमारा स्वभाव है, हमारी जो प्रकृति है, वो उनसे पूर्ण रूप से जुड़ने में बाधक बनती है।** सो यही प्रार्थना करनी है कि आपने साधना करी और गुणातीत स्थिति प्राप्त करी है। वैसे हम सब साधक जो ये मार्ग पर चले हैं – गृहस्थ हों या त्यागी हों, बहन हो या भाई हों, छोटे हो या बड़े हों – उन्हें आज आशीर्वाद देना कि समझ आ जाए। अपना छोड़ने की समझ आ जाए। सब को स्वीकारने की समझ आ जाए। **संबंध देख कर स्वीकारने की समझ आ जाए। सब भक्तों का स्वभाव - प्रकृति नहीं देखना है, केवल उनका संबंध देखना है – जो आपने किया...** ऐसा सब को बल मिल जाए और सब आत्मा से ऐसे सुखी हो जाएं। जय स्वामिनारायण!

पू. वशीभाई

कंठी, तिलक, माला ये सब स्वामिनारायण भगवान के विशिष्ट प्रतीक हैं। गुरुजी का ७०वां प्रागट्य दिन है, तो ७० कंठी का हार बहनों ने और हमारे हेमंतभाई मर्चंट की वाईफ नयना बहन ने खूब भाव से बनाया है। गुरुजी को अर्पण करते हैं और उसमें प्रार्थना[×] लिखी है–

स्वामिश्रीजी तारीख २५-३-०७

गुरुहरि प.पू. काकाजी स्वरूप प.पू. गुरुजी के चरणों में –
प्राकट्य पर्व पर प्रणामसहित जय स्वामिनारायण!

कंठी, तिलक - टीका और माला – सभी भगवान स्वामिनारायण के प्रतीक!
सभी शरणागति के द्योतक, युगल उपासना के प्रेरक।
जो धारण करने हो भाग्यवान, वह बने श्रीजी का संदेशवाहक।
शरणागत वत्सल प्रभु का प्रतीक कैसा मर्मभरा।
सर्व मान्य और सर्व स्वीकृत, फिर भी सबसे निराला।
भले नाज़ुक है कंठी की काया, पर उसमें ऐश्वर्य है कैसा समाया।
काल, कर्म और माया, उसे अड़े नहीं पर - छाया।
कंठी वक्षस्थल के बीचोंबीच, मानो अभेद्य रक्षाकवच।
तिलक - टीका, उपासना और भजन का साधन है माला।
निष्ठा, आसरा, पवित्रता, भजन, दासत्व, स्वाधीनता,
अंतर तिमिर काट कर जोड़े देवत्व को,
दोष - अवगुण को छोड़ कर, बुराई दोष - विकृति को जलाए।

[×] *इस **प्रार्थना** की **ओरिजिनल 'गुजराती' स्क्रिप्ट** के लिए **पृष्ठ २४ - २५** पर पढ़िए।*

माहात्म्य को गुने, अहम्-ममत्व को छेदे।
आत्मीयता के प्रकाश से, उजाले आतम प्रकाशपुंज।
ऐसे कंठी, तिलक-टीका, माला, यदि संत हस्त धारण हो,
तो शमे कुकर्म काले, और जुड़े सत्कर्म सारे।
जिस संत में प्रभु समाए, मात-पिता से बढ़ कर हैं वे।
जिसने पाई शरण उनकी, उसने सवाँरे लोक और परलोक।

हे प्यारे गुरुजी,

कंठी रूपी हार स्वीकार के स्वीकारो हार हमारी।
सर्व क्षतियाँ विदारी, करना आत्मीयता का आकारी।
अंतरप्रेम का प्रतीक हमारा, ना कि नाज़ या नख़रे।
भले हवाईजहाज़ से आए हैं, पर मान लेना तुरके।
आत्मीयसखा सभी स्वरूपों के, और हैं आत्मबंधु हमारे।
हमारा दिल झूले, देकर कंठी की ये माला
प्रेम से यह पहन कर आशिष देकर धन्य कर दो प्यारे,
प्रेम से यह पहन कर आशिष देकर धन्य कर दो प्यारे,
लि. **आपके सभी भुलके**।

हेमंतभाई मर्चंट ने गुरुजी के प्रागट्य निमित्त एक भजन लिखा था–

'योगीजी की आस गुरुजी, काकाजी की प्यास हो, चाहो तुम जो हो सके ना ऐसी क्या कोई बात हो।'

ऐसी कोई बात नहीं है जो गुरुजी चाहें और वो ना हो सके। चाहे कॉफी होवे या परछाई का किडनी ट्रांसप्लांट का आप्रेशन हो। ये दोनों घटनाएं १८० डिग्री की हैं; पर सब भक्तों ने समझाया कि **गुरुजी ऐसे माहात्म्य में– ऐसे भगवान को रख कर जीते हैं कि नथींग इज़ इम्पॉसिबल इन हीज़ लाइफ।**

सुबह साहेब ने बहुत अच्छा बताया कि कोलम्बस ने अमेरिका को ढूंढा और अब सब जो जाते-करते हैं, वो अब ऑर्डीनरी बात है। यह भी ऐसी ही बात है कि काकाजी के संकल्प से गुरुजी की १९६७ से जो यात्रा शुरू हुई, उसे ४० साल हुए। बहुत बड़ी कठिन, परिश्रम वाली यात्रा है-इज़ी नहीं है। दिल्ली इज़ ए लॅन्ड ऑफ एक्सट्रीमिटी–एक्सट्रीम वॅधर। मई–जून में यहाँ गर्मी भी इतनी पड़ती है और सर्दी में ठंड भी इतनी होती है। और... ऐसी अभिप्राय की भक्ति करनी–भक्त ऐसे तैयार करने–इज़ ए बिग जॉब। पर, ऐसी कोई भी डिफिकल्टी गिने बिना गुरुजी ने सचमुच अपना खून-पसीना बहा कर ये काम किया है। एक भक्त को तैयार करना बहुत डिफिकल्ट है... गुरुजी ने कैसे–कैसे भक्त तैयार किये हैं! आप सब देखते हो ये समाज। यहां लगभग ४००-५०० परिवार हैं जो गुरुजी के साथ जुड़े हैं। उनको तैयार करने के लिए गुरुजी को कितना श्रम-परिश्रम करना पड़ा होगा? उसके दो-तीन एक्ज़ाम्पल्स आपको देता हूँ:

पहला है–हमारा समीर। पहले वो मुंबई रहता था। एक दिन रात को बारह बजे वो आया, हाथ में शिवलिंग था और बोला कि अभी तो मुझे 'गृह त्याग' करना है। मैं तो घबरा गया कि क्या हो गया एकदम? फिर, काकाजी के

रूम में ले जाकर धुन किया और... बोला ठहरो, एक काम करो – हम गुरुजी को फोन करते हैं, बाद में बात करते हैं – तुम अभी संभलो। और... उसके बाद आज उसका एक लड़का है-नंदीश! वो भी कैसा? हम लोग महापूजा करने ऑपेरा हाऊस जाते थे। तो रास्ते में उसकी मम्मी और वो मिल गए! छोटे से नंदीश को पता चला कि हम महापूजा के लिये जाते हैं। तो वो बोला कि चलो मैं भी आता हूँ और उसकी मम्मी को वो बोला कि दो घंटे के बाद मुझे लेने के लिये आना। उसकी मम्मी भी कैसी कि वो बोली कि मैं तुझे छोड़ जाती हूँ और लेने आ जाऊंगी। दो घंटे वो लड़का हमारे साथ महापूजा में बैठा और... महापूजा के बाद उसकी मम्मी उसे ले गई। अभी कोई छोटे बच्चे में भगवान के लिए, सत्संग के लिए अंदर इतना जगाना वो बहुत बड़ी बात है। साहेब ने सुबह विजयपाल का एग्ज़ाम्पल दिया। विजयपालजी कॉन्ट्रेक्टर हैं-गर्वन्मेंट एम्प्लॉई हैं। उसके अंदर ऐसी भक्ति डालना वो बहुत मुश्किल है। **गुरुजी ने क्या करा है कि हम लोग सत्संग की बातें करते हैं – महिमा बोलते हैं, लेकिन 'इन एक्शन' नहीं आता है। गुरुजी ने खुद तो किया है, लेकिन भक्तों के भी अंदर महिमा डाल कर सत्संग की ऐसी चिकास (चिकनाई) – ऐसी आत्मीयता डाली है कि कभी-कभी आँख में आंसू आ जाते हैं।**

परछाईं की पोस्ट आप्रेशन ट्रीटमेंट बहुत कठिन थी, तब विजयपाल ने घर में मानो हॉस्पिटल जैसा कर दिया था। 'महिमा' की बात करना बहुत आसान है... लेकिन अपना कारोबार, अपने सगे, अपने संबंधी को छोड़ कर भगवान भजती ऐसी बहन के लिए यह सब करना – अपने रूटीन को साइड लाईन करके इनमें इन्वॉल्व हो जाना मुश्किल है और वह भी उस हद तक कि एक महीने के बाद जब वह अच्छी हो गई, तब संयोगवश मैं इधर था – उसने उसका विदाई समारोह करा; जैसे कि घर से मेरी लड़की मंदिर वापिस जा रही है। लड़की को विदा करते हुए माँ-बाप के आँख में आंसू आ जाते हैं, ऐसे उन दोनों की आँख में आंसू आ गए – लिटरली धे वर क्राईंग। इतनी सेवा करना, इतनी भावना होनी – कोई आदमी ऐसे रो नहीं सकता है... ऐसे तो कितने-कितने भक्त तैयार किये हैं – गुरुजी ने। इधर ओ.पी. अग्रवाल है, वैसे तो ही इज़ ए चार्टर्ड एकाउंटन्ट एण्ड कंपनी सेक्रेटरी – वेरी इन्टेलीजेन्ट। लेकिन गुरुजी ने उसके अंदर भी ऐसी भक्ति डाली है। एक बार वो नरिमान पॉईन्ट पर थे। यहां से गुरुजी ने फोन किया कि ओ.पी. कहाँ हो? वो बोले नरिमान पॉईन्ट पर हूँ। गुरुजी ने कहा – अरे! तुमको तो इधर आना है। तो, आप मानोगे नहीं, वो घर नहीं गए, नरिमान पॉईन्ट से सीधे एयरपोर्ट गए और दस बजे दिल्ली आ गए!

ये सब छोटे-छोटे बच्चे को मैंने देखा है। आज जो अभिषेक को देख रहे हो, उसको कितना भजनिक बनाया है... गुरुजी ने इन युवकों का सारा ट्रांसफॉरमेशन किया है। आशीष और सब मंडल की तो एक गाथा लिखी जा सकती है... **गुरुजी खुद भी, मस्ट बी एटेन्डिंग हाईएस्ट फोन कॉल्स इन ए डे। मैं देखता हूँ, सुबह से रात तक ही इज़ ऑल्वेज अवेलेबल।** अभी किसी ने अच्छा बताया कि **बड़े पुरुष का अवेलेबल होना 'इट इज़ ए बिग डील।'**... यहां तो आप फोन उठाओ – **गुरुजी अवेलेबल हैं, इन यॉर एक्स्ट्रीम नीड – इन यॉर एक्स्ट्रीम प्रॉब्लम ही इज़ धॅर टु हेल्प।** यह सुहृद्स्वामी को भी प्रेक्टीस करा-करा कर आज रसोई के एक्स्पर्ट बना दिया। **गुरुजी का स्टाइल है कि जो करो उसको 'टोटल' करो। काकाजी भी कहते कि – 'डू यॉर बेस्ट'। गिव धी बेस्ट परफॉर्मन्स।** वेफर्स, इडली, आईसक्रीम जैसी चीजें यहां के सब भक्तों को ऐसे भाव से खिलाना – ये अद्‌भुत भक्ति का दर्शन गुरुजी ने अपने और अपने संतों द्वारा, अपने भक्तों द्वारा, बहनों द्वारा एकदम लाईटली कराया है... तभी तो ऐसे चरित्र से ऐसा समाज तैयार होता है – भक्तों में ऐसे जीने की भावना आती है।

दूसरा **गुरुजी इज़ 'पर्सोनिफाइड कॅयर'**। शब्द तीन अक्षरों का है, लेकिन किसी की कॅयर करना बहुत ही

मुश्किल है। रीसेन्टली, पुनीत – मंदिर का ही सेवक है। उसके फाधर-मधर जर्मनी रहते थे। अभी - अभी इधर आए, तो पुनीत की 'रोका' विधि होनी थी। और... गुरुजी की भावना ऐसी थी कि आप मंदिर में आए हो, तो विधि - रीति - रिवाज में क्यों जाना ? आज ही – इधर ही मॅरेज कर लो। श्वेता के फाधर - मधर भी सब एकदम मान गए। यूं गुरुजी का प्यार – उनके प्रति कॅयर इतना था कि 'रोके' में से सीधा मॅरेज और ३ फरवरी, काकाजी के साक्षात्कार का ही दिन था; फिर भी मॅरेज का सब एरेंजमेंट भी करके शाम को इतने व्यस्त प्रोग्राम में फटाफट शादी करा ली। ये मॅरेज तो करा; फिर गुरुजी को याद आया कि ये फेमीली अभी - अभी जर्मनी से आया है और बेग - सामान भी नहीं खोला है - सो घर में सामान तो इधर - उधर बिखरा पड़ा होगा। तो गुरुजी ने राकेशभाई को बुलवा कर उनका कुल्लू-मनाली जाने का बुकिंग भी करवा लिया ! किसी के व्यवहार में इतनी हद तक जाना, इतनी कॅयर करना ये बहुत बड़ी बात है। परछाईं का जब ऑप्रेशन का हुआ तब भी माइन्युटली जो देखते होंगे, उन्हें पता चलता होगा कि इतना डीप में जाकर सभी ने कॅयर करी थी। **'महिमा' बोलना आसान है, जब महिमा एक्शन में आती है तब पता चलता है।**

दूसरी यह एक बहुत बड़ी घटना हुई है कि ये **मूर्ति प्रतिष्ठा** हो गई। एक्च्युअली बात थोड़ी गहरी है और डिफिकल्ट भी है। फिर भी **गुरुजी ने जो करा है, ये जो प्रिंसिपल रखा है वो महान है...** जैसे विधाऊट गुणातीत आप महाराज को नहीं जान सकते... ऐसे ही काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी जैसी विभूतियों के बिना आप योगीजी महाराज को – उनके मूल स्वरुप में, जैसा है – वैसे स्वरूप में उनको पहचानना बहुत मुश्किल बात है... **काकाजी बोलते थे कि सीक्रेट को ढूंढना पड़ता है। ५० साल के बाद, १०० साल के बाद जब हम नहीं भी होंगे, लेकिन ये मूर्तियाँ होंगी तो लोग पूछेंगे – ये कौन हैं ? काका-पप्पा कौन हैं - किसकी मूर्ति है - क्या है ? पूरा इतिहास लोगों के सामने आएगा। तो ये जो बात हुई है, वो आध्यात्मिक इतिहास में बहुत जबरदस्त बात हुई है।**

...बोलते हैं ना कि गुरुजी कुछ भी कर सकते हैं... तो ये सब बहनों को बुलाया - संतों को बुलाया। **१९७८ में काकाजी का ६०वां बर्थ - डे मुंबई में मनाया जा रहा था।** तभी काकाजी बोले थे कि अहो हो ! पप्पाजी बहन लोग को लेकर आये, स्वामिजी संतों को लेकर आये, हरिधाम की बहनों को – सबको लेकर आए... **आज ऐसा ही माहौल जो वो था, वो लौटा है और यहां सारा गुणातीत समाज इकट्‌ठा हुआ है।** तो आज हम जो भी संकल्प करेंगे, काकाजी सिद्ध करेंगे; क्योंकि काकाजी ने लिखा है कि **गुणातीत समाज कल्पवृक्ष है। कल्पवृक्ष के नीचे बैठ कर आप जो भी संकल्प करोगे वो सिद्ध होता है।** तो इन स्वरूपों को खूब-खूब प्रार्थना है कि लॅटरल ग्रोथ तो होता ही रहता है; १९६६ में संस्था ने हमको विमुख किया, आज २००७ है – हॉउ मेनी टेम्पल्स हेव बीन बिल्ट बाय अस ? हॉउ मेनी सेन्टर्स वी हेव, हॉउ मच लॅन्ड ? – गॉड नोझ। बट् ये लेटरल ग्रोथ है। **हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमारे पास अश्विनभाई, शांतिभाई, कोठारीस्वामी, प्रेमस्वामी, माधवस्वामी, निर्मलस्वामी, गुरुजी जैसे संत, स्वामिजी, साहेब, पप्पाजी, दिनकरभाई जैसी विभूतियाँ और बहनों भी कितनी एकांतिक हैं ! इट्स ए ट्रीमेन्डस एचीवमेन्ट – उसमें हम बैठे हैं। तो जो आप कराना चाहते हो, वो सब स्वरूपों सिद्ध कराएं और हम सब सुखी - सुखी बनें – वही प्रार्थना !** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. इलेशभाई

सचमुच दो दिन से हम सब खूब सुंदर लाभ ले रहे हैं। यूं कहें कि दिव्य स्वरूपों के आशीर्वाद हम सब झेल रहे हैं। महाराज के समय से ही, महाराज खुद ही उत्सव – पर्व इसीलिए योजित करते होंगे। वो अब समझ में आता है। किस प्रकार से जीव को भगवान का संबंध हो, किस प्रकार जीव जहाँ अटके हैं, वहां से आध्यात्मिक मार्ग में आगे जाए, उनसे जुड़ता जाए – इस हेतु से ही बार-बार ऐसे छोटे उत्सव या पर्व महाराज के समय से मनाए जा रहे हैं।

एक बड़ी **ऐतिहासिक घटनाओं में, ऐतिहासिक पन्नों पर आज का यह दिन लिखा जाएगा कि गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति भारत की राजधानी - दिल्ली में श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर - ताड़देव में पधराई गई।**

गुरुजी का आज ७०वां प्रागट्य दिन! क्या बोलूँगा वो कुछ विचार नहीं किया था। अचानक ही राकेशभाई ने बताया। पर प्रभु ने मुझे अपने एक मुक्त द्वारा सीधी एक चिट्ठी भेजी। हम जितने भी यहां बैठे हैं, उनमें से बहुत लोगों को यह विचार आता होगा – जैसा उस भक्त को आया कि **गुरुजी ऐसा ड्रेस क्यों पहनते हैं?**

गुणातीत स्वरूपों के प्रति ऐसा विचार अस्थानीय माना जाता है। फिर भी, १९९७ में जब प.पू.गुरुजी की 'बाय-पास' सर्जरी हुई थी, तब गुरुहरि पप्पाजी ने अपने वस्त्र दिये और उसे - भगवा रंग करवा कर प्रसादी के करके वहां भेजे थे – जिससे कि उन्हें बीमारी में खूब कम्फर्ट रहे और बाय-पास के बाद भी अनुकूलता रहे – इस हेतु से पप्पाजी ने इस प्रकार ये वस्त्र गुरुजी को धारण करवाए। इससे हमें ख्याल आता है कि **गुरुजी जैसे पुरुष की एक भी क्रिया मनमुखी नहीं होती है। सत्पुरुष की मर्जी – सत्पुरुष की प्रसन्नता के सिवा कोई हेतु उनके जीवन में दिखाई देता नहीं है।** आज भी पृष्ठभूमि में जो डॅकोरेशन किया है, उसमें लिखा है - **'कृष्ण को राजी किया अभिप्राय की भक्ति से, बना पार्थ नारायणस्वरूप नर से।'** एक ऑर्डीनरी नर ही था, लेकिन नारायणस्वरूप बन गया! क्योंकि उसने प्रभु की जिस समय जो मर्जी थी उस समय वो करा। हम सबने प्रवचनों में सुना। मैंने भी गुरुजी को पर्सनली इस प्रकार खूब नज़दीक से निहारा है। एक-दो प्रसंग कहूँगा, हाल ही का।

'तू तीन-चार दिन पहले आ जा' – ऐसी गुरुजी ने आज्ञा करी और मैं जल्दी आ गया। तो मुझे यहाँ के पूरे समाज का – भक्तों का दर्शन, जो माहात्म्य **'यज्ञ' के समय ज्योतिबहन ने कहा कि यहाँ ताड़देव खड़ा कर दिया – सचमुच वो यहाँ दृष्टिमान हुआ।** जो सेवक या जो हेड जिस जगह खड़ा हो, जो सेवा सौंपी हो, उस जगह पर वो उस समय पर होता ही है! गुरुजी खुद ऐसा वर्ते हैं और इसीलिए इन भक्तों में धीरे - धीरे - धीरे इस चीज का दर्शन होता जाता है।

मंदिर के आँगन में जो झूला रखा है, वहाँ पर सुबह-शाम या दोपहर को गुरुजी विराजमान होते हैं। गुरुजी मुझे कहते हैं कि – *'यह बहुत अच्छा ढूँढ निकाला है, नहीं! अच्छा विचार आया। मुझे यह जगह खूब पसंद है। पर मैं तीन या चार महीने ही यहां बैठ सकता हूँ, बाकी फिर नहीं।'* मतलब कि – बाय-पास कराने के बाद गुरुजी गर्मी सहन नहीं कर पाते। मुझे तुरंत एक विचार आया जो कि मैंने डायरेक्ट गुरुजी को तो नहीं कहा, पर बहनों को कहा कि वहाँ ट्रान्सपॅरन्ट ए.सी. केबिन में उनके पूरे आसन का आईडिया यहाँ सोच सकते हैं जिससे कि कोई भी ऋतु हो – गुरुजी हमेशा सुबह, दोपहर और शाम को यहाँ विराजमान हो सकते हैं... तो बोले – *इलेशभाई, अंदर जो सिटींग हॉल है,*

उसके साथ में गुरुजी की रूम है; भक्तों ने उस रूम में ए.सी. लगवाने का निश्चय किया था। तो गुरुजी ने कहा कि पहले बाहर का हॉल है वहाँ ए.सी. लगाओ। कोई भी भक्त आए उनके लिए ए.सी. रखो, फिर मेरी रूम में ए.सी. फिट करना!

पप्पाजी का जो सूत्र है - 'संबंध से स्वरूप मानो', वो इनके जीवन में अक्षरशः साकार दिखता है। दिलीपभाई ने भी अपने प्रवचन में गुरुहरि पप्पाजी की प्रसादी की अपनी गाड़ी – 'प्रसादी' के बारे बताया। मैं वहीं साथ में ही खड़ा था। गुरुजी एकदम उतरने ही लगे कि आप इसमें बैठ कर होटल जाओ। कैसा माहात्म्य ? अभी हम सब ने देखा कि कैसा एक छोटा प्रसंग कि मैं कॉफी पीऊं – मुझे कॉफी पसंद है, तो इन भक्तों को भी कोल्ड कॉफी सर्व करी जाए। साहेब यहीं बैठे थे, बैठे - बैठे बोल रहे थे कि ऐसा कहीं – किसी उत्सव में नहीं होगा। उनको जब हमें स्टेशन पर रीसीव करने आए देखते हैं, तब सचमुच गद्‌गद् हो जाते हैं। हमारे जैसे छोटे सेवक आने वाले हों, तो भी गुरुजी वहाँ लेने के लिए आ जाते हैं। उनकी रग-रग में, उनके खून के कण-कण में, यह महिमा ना हो तो यह बात शक्य नहीं हैं। जो उनके जीवन में अभी सहज है।

यहाँ **हम सब आए हैं, काकाजी भी कहते थे कि हमारा इस बार का यह फेरा निष्फल ना हो। जब जो उत्सव में आएं - जो पर्व में आएं, तब वहाँ से कुछ लेकर हम उठें।** तो आज, लाभ मिल ही रहा है। किस तरह इन बड़े पुरुषों को राजी करना – वो मार्गदर्शन दिया ही जा रहा है। महाराज, स्वामी और सभी स्वरूप हम सब भक्तों को ऐसा खूब - खूब बल दें कि हमें जब भी आप ऐसा मौका दो, तब उसमें से कुछ ग्रहण करके जहाँ हैं वहाँ से आगे – **काकाजी के शब्दों में छलाँग लगाते ही जाएं;** उस ओर – जहाँ हम सबको अक्षरधामरूप रहते करने हैं – अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद भोगते करने हैं। ऐसे सुंदर आशीर्वाद आज के दिन हम सब को दो, ऐसी ही सब के चरणों में प्रार्थना। जय स्वामिनारायण।

प.पू. दिनकरभाई

पिछले कई दिनों से हम – जैसे हमारे नरेन्द्रजी ने बताया वैसे 'पर्व' मना रहे हैं। उनकी वाणी में उत्तर भारत के शेर की आवाज़ दिखाई पड़ती थी। आज सबको ऐसी भावना होगी कि गुरुजी के प्रागट्य दिन पर और पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा दिन पर, हम भी गुरुजी के चरणों में – गुणातीत स्वरूपों के चरणों में हमारी वाणी रूप पुष्प धरें। मगर टाइम इतना नहीं है और हर एक की भावना इतनी बड़ी है, तो आप जो भावना अंतर से अर्पण करोगे वो सब पहुंचेगा। दूसरा, जैसे नरेन्द्रजी ने बताया कि दस मिनिट में ये सब बात नहीं हो सकती। मगर मैं पांच मिनिट में मेरी बात करूंगा और मेरे दिल में ऐसा होता है कि मेरी पांच मिनिट मैं बापु को दूंगा। **आज गुरुजी का प्रागट्य दिन एक अनोखा 'पर्व' दिखाई पड़ता है। हरिभक्तों के अंतर में और बाहर जो भावना दिखाई पड़ती है, वो एक अक्षरधाम की अनुभूति है। इधर हम सब ऐसे ही अक्षरधाम में बैठे हैं।**

एक बार मैंने सुना था कि अमेरिका में किसी ने भगवान को कुछ पत्र लिखा था। उसने भगवान के एड्रेस में लिखा कि – 'टू जीसस क्राइस्ट, एट - हेवन! और पत्र में लिखा कि प्रभु आई नीड मनी, आइ एम शार्ट आफ ५०० डॉलर्स। प्लीझ सेन्ड मी। जो पोस्टमेन था, उसने वो पत्र को पढ़ा और... उसको लगा कि एड्रेस तो हेवन का दिया है;' वो कैसे भेजेंगे ? मगर उसका रिर्टन एड्रेस तो है उसके अंदर। सब पोस्टमेन्स ने इकट्ठा होकर, वे ५०० डॉलर तो

नहीं बना सके, मगर ३०० डॉलर तक बना कर दिया और उसे ड्राफ्ट बना कर भेज दिया। तो वो खुश हो गया। लेकिन, थोड़े दिनों के बाद दूसरा पत्र गया। उसमें लिखा कि – ओ गॉड, थँक्यू वेरी मच फॉर सेंडींग मी मनी, बट आई डिड नॉट नो धॅट पोस्टल डिपार्टमेन्ट इज़ सो करप्ट, धेट आऊट ऑफ ५०० डॉलर्स धे हॅड सेन्ट मी ओन्ली ३०० डॉलर्स! वो अमेरिका की बात थी।

मगर, **आपको इधर काकाजी को, पप्पाजी को, स्वामिनारायण प्रभु को पत्र लिखना है, तो पूरा एड्रेस मिलेगा।**

एड्रॅस है –

स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन, ताड़देव'। जय स्वामिनारायण!

पू. महेन्द्रबापु

...मैं एक बुक पढ़ता था **'एम्पटी बोट'**। पप्पाजी के जीवन को देखता हूँ – ये गुणातीत स्वरूपों के जीवन को भी देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि धे जस्ट लीव्ड एज़ एन एम्पटी बोट।

मैंने काकाजी के साथ का गुरुजी का संबंध देखा हुआ है... काकाजी ने गुरुजी को अपनापन दे दिया। डिर्वाइन रिलेशनशिप विथ धी मास्टर! धी इनएवीटेबल क्वॅालिटी ऑफ धी डिसाईपल इज़ टु हेव धी डिवाईन रिलेशनशिप विथ मास्टर। गुरु अपने शिष्य को फ्रीडम भी देते हैं; **ऐसे काकाजी ने गुरुजी को फ्रीडम भी दिया था।** गुरुजी आर्ग्युमेन्ट भी करते थे, **लेकिन यदि काकाजी दो बार कहें तो, 'नो थॉट' – इतने वो सरल थे।** ऐसी उसने भक्ति करी है। आज हम भी ऐसा माँगे कि – हे महाराज! हम कन्टेन्टलेस कॉन्सियसनेस में जिएं। बोट भरी हुई होती है, उसके डूबने का ज्यादा भय होता है। 'एम्पटी बोट' क्या है कि आई एम नो बडी!

हरिप्रसादस्वामिजी अभी अफ्रीका जाकर आए, उनसे एक प्रसंग सुना था, जो मुझे बहुत जँच गया कि एक लड़के से स्वामिजी ने पूछा कि आपका नाम क्या? तो उसने बताया 'निमित्त'। और...स्वामिजी एकदम खुश हो गए। वाह! 'निमित्त'... मुझे यह नाम बहुत अच्छा लगता है। जो गुणातीत स्वरूप हैं, वो ऐसा समझते हैं कि मैं केवल 'निमित्त' मात्र हूं। उसकी अस्मिता को प्रभु के चरणों में डिझोल्व करके प्रभु में रह कर वे जीते हैं। 'व्हॅन यू बीकम नो बडी, धेन यू बीकम एवरी बडी'। तो आज हम प्रार्थना करते हैं कि गुरुजी ने जैसे काकाजी के साथ डिवाईन रिलेशनशिप करा, ऐसा हमारा रिलेशनशिप उनके साथ हो जाए। हम यदि आत्मबंधु हैं, तो हमारा मैत्रीभाव हो जाए। हम चोईसलॅस अवेरनेस में सर्वोपरि व्यापकभाव स्वीकार कर भगवान के चरणों में एक निमित्त मात्र बन कर जीएं – ऐसी हमारी अंतर की प्रार्थना है।

प.पू. गुरुजी

सभी ने बहुत बातें करी, मतलब खूब महिमा गाई; भक्तिभरा दिल... माहात्म्य...! आप खूब विश्वास से मानना कि मैं झूठ नहीं बोलता। मुझे इन सब चीजों का सच में पता नहीं है। माहात्म्य क्या होता है – भक्ति क्या करनी है? लेकिन, **ताड़देव – ६/डी और ८/सी, सोनावाला बिल्डिंग्स की मेरे दिमाग़ पर एक इन्फ्लूयन्स रही है कि गजब के कुटुंबभाव से ये लोग जिए हैं और जैसे कि स्वामिजी कहते हैं – वो 'गंगोत्री' से ये समाज का डॅवलपमेन्ट हुआ है – कुटुंबभाव से।** 'कॉफी' के बारे भी, भले ही आपने इसको कलर दिया – महिमा का, भक्ति का। पर, मेरे मन में सच में ऐसा कुछ नहीं कि भक्ति कर लूं, मुझे ऐसी कोई महिमा भी नहीं है। ऐसी महिमा हो तो ऊंची आवाज़ में बोला ही ना जाए। गल्ती से मैं कई बार स्वामिजी के पास भी बोल जाता हूँ। लेकिन वहाँ एक ही चीज है कि ये स्वामी मेरे हैं, तो मेरी बात क्यों नहीं मानते? इसी तरह ये बहनें आई हैं। **कई मेरी बड़ी बहनें हैं, कई मावड़ियाँ (माँ) हैं, कई लड़कियाँ जैसी हैं।** तो जो अपने आए हैं, इन्हें अच्छी ट्रीट तो दी जाए। इसके सिवा मुझे कोई भावना कि – भक्ति कर लूं, पप्पा की मूर्ति लूट लूं... जो आप बोलते हो – ऐसा कुछ नहीं है – हक़ीक़त में नहीं है। अपने ही आएं हैं, तो बस आनंद करें।

दूसरी एक बात – दो दिन से जब ये बातें सब चल रही थी, तो मैं विचार में था कि मुझे भी कोई ऐसा सूत्र मिल जाए – ऐसा काकाजी कर दें। **प्रतिष्ठा भले नहीं हुई थी, लेकिन हमें वो मूर्ति भा जाए वही प्रतिष्ठा है - भावना बोलती है। सिर्फ राइट्स से प्रतिष्ठा नहीं होती।** सो, पप्पाजी की मूर्ति को जब-जब देखने गया, तब मैं पप्पाजी से भी यही कहता रहा कि इन दो दिनों में मुझे एक अच्छा सूत्र देना और... कल ही साहेब ने बहुत अच्छी बात करी - सुन कर मैं तो हैरान हो गया। अमेरिका में बिल ग्रीट्स किसी और मल्टीमिलियॉनर से मिले... और आपस में बातचीत हुई कि – 'टु बॉर्न पुवर इज़ नॉट ए क्राइम, बट टु डाइ पुवर इज ए क्राईम'। इसमें से फिर हमारे **चटवानीजी ने बहुत अच्छी बात करी** – मुझे वो बहुत पसंद आई कि वाकई बहुत अक्ल वाला व्यक्ति है। वो बोले - इस तरह **मनुष्य देह मिलने पर यदि हम 'गुणातीतभाव' को नहीं पाए, तो हम भगवान के गुनाहगार हैं।** कितनी अच्छी बात उन्होंने करी! पर, **मैं इसमें यह मानता हूँ कि मनुष्य देह मिला और हम गुणातीतभाव को नहीं पाए, तो हम गुनाहगार नहीं – 'इट इज अवर हेल्पलेसनेस'। पर, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे संत मिले और हम 'गुणातीत' नहीं हुए, तो हम जरूर गुनाहगार हैं। भले कोई कितना ही साधन करे; अपने प्रयत्न से - साधन से तो कोई 'गुणातीत' हो ही नहीं सकता। गुणातीतभाव को पाना यानि?** चटवानी की यह बात के साथ स्वामी की वह बात टॅली होती है कि **सोने की बड़ी-बड़ी तुम्हारी कोठियाँ हों – अभी तो सीमेन्ट की हैं, ईंटों की हैं; वो जला करके भी ऐसे संत का संग कर लेना।** चटवानी ने अलग ढंग से ये बात करी कि वर्ना गुनाहगार हैं।

और... अभी मैं यह बात कर रहा हूँ, तब मुझे फिल्मस्टार अशोक कुमार की एक बात याद आई। अभी तो अशोक कुमार है नहीं, लेकिन उसका ७०वां जन्मदिन मना रहे थे; तब उसको मीडिया वालों ने पूछा कि आप फिल्म इण्डस्ट्री में कब आए और आज आपको कैसा लगता है? उसने कहा कि मैं फिल्म इन्डस्ट्री में १७ साल की उम्र में आया था और आज ७० साल का हूँ। मेरी तरह ही... मैं भी १७ साल की उम्र में सत्संग में आया था – जब छोटा लड़का था और अशोक कुमार की तरह आज ७० साल का बुजुर्ग हो गया हूँ। लेकिन, फिर वो ऐसा बोला था – **'धॉझ**

डेईझ आर नो मोर!' जैसे चटवानीजी की बात में मैंने बदलाव करा, वैसे यहाँ भी एक बदलाव है कि मैं उसकी तरह आज ७० साल का बुजुर्ग तो हो गया हूँ, लेकिन स्वामिजी मुझे माफ करें, मुझे एक गाना याद आ गया – ***'लौट आया है गुज़रा जमाना...'।*** यह गाना मुझे अच्छी तरह से याद है, पर औरंगजेब जो ठहरा सो गा नहीं सकता। और वो इसलिए याद आ रहा है कि मैंने सुना कि **ज्योतिफोई ने** कल **कहा** कि– ***हम दो-तीन दिन से देखते हैं, तो '५२ में जो ताड़देव का माहौल-एटमॉसफियर था, वो यहां लग रहा है।*** और... **इसके सिवा मेरी कोई चाहना है ही नहीं। जो ताड़देव से कुटुंबभाव की हमारी शुरुआत हुई है उसे बस पकड़े रखना है।** जैसे मैंने कहा कि– 'ये मेरे हैं-मैं उनका हूँ।' फिर वो यहाँ रहता हो, हरिधाम रहता हो, सांकरदा रहता हो, ज्योत में रहता हो, मुंबई रहता हो। ताड़देव के दो फ्लैट्स से ये डॅवलपमेन्ट हुई। **ऊपर सारा दिन काम करने वो ललिता काकी जाती थी। अगर दो फ्लैट एक होकर रहे हैं, तो अपने अलग-अलग सेंटर्स क्यों नहीं रह सकते?**

ये पप्पाजी की मूर्ति के पीछे भी भीतर में मुझे यही बात है। वशी ने इसे 'माईथोलॉजिकल वॅ' में समझाने की कुछ कोशिश करी। हो सकता है महाराज ने मुझे इस तरह से यूज़ कर लिया हो। लेकिन मुझे तो ऐसा ही था कि **यहाँ मेरे बाप की मूर्ति है, तो भले ही मेरे ताऊजी दूर विद्यानगर रहते थे, पर मेरे ताऊजी की भी ऐसी मूर्ति यहाँ साथ में होनी चाहिए। ये बात पकड़े रख कर, जो बॅईज़ पर–जो खड़ा करने के लिए–गुणातीत समाज का–एक आध्यात्मिक समाज का–एक दिव्य कुटुंब का सर्जन करने के लिए बापा ने हमें अलग किया, इसी लाइन पर हमें चलते रहना है। और... ये कोई नई चीज नहीं है; महाराज ने लिखा है कि ऐसे जो सत्संगी वैष्णव हैं–ये ही हमारी नात, ये ही हमारी जात और ये ही हमारा कुटुंब है। हमारे स्वभाव कैसे भी होंगे–दोष कैसे भी होंगे, कहाँ चले जायेंगे पता भी नहीं चलेगा। लेकिन इन सारी बातों के लिए ऐसे संत के साथ का संबंध अनिवार्य है। इसके बिना यह हो ही नहीं सकता;** जैसे कि मैंने कहा कि **गुणातीतभाव की कोई कितनी ही बातें करे, साधना करे, तपस्या करे, व्रत करे, दान करे, योग करे, यज्ञ करे – वो कुछ काम में नहीं आएगा। प्रभु के साथ का संबंध–ऐसे संत जिन्होंने प्रभु अखंड रखे हों उनसे संबंध ही काम करेगा।** लेकिन ऐसे संत की पहचान हमें होनी चाहिए।

पप्पाजी ने मेरे जीवन में ये भी करा है। समझूं तो–काकाजी का परिचय मुझे इन्होंने कराया है। हक़ीक़त में यह कहता हूँ; हाँ काकाजी के साथ लगाव तो था, पर अभी भी ऐसा तो नहीं कह सकता कि मैं इनको पूरा समझा हुआ हूँ, इनकी पूरी बात को मानता हूँ। हाँ, पता नहीं पहले से मुझे ये–बा, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी वगैरह के प्रति इतना जरुर है कि कुछ भी कह दो, ये कोई अलग चीज है। भले मेरी थींकिंग वेवलेंथ उनसे नहीं मिलती होगी, लेकिन मेरे मन में पहले से ऐसा है कि कुछ भी डिफरन्सीस पड़ेंगे, उसमें महाराज पहले तो इनका ही मानेंगे – बाद में मेरा मानेंगे। ये चीज मैं हमेशा समझता था। मेरी बातें भले रखूं – करूं, लडूं भी कि ये मेरी बात क्यों नहीं मानते हैं, पर करना तो मुझे वही है जो ये लोग कहें। यह मेरी लाइफ स्टाइल पहले से रखी है।

हाँ, एक बार क्या हुआ कि बापा मेरे पीछे पड़े थे कि साधु हो जाओ। मैं मानने तैयार नहीं था, काकाजी भी लगे हुए थे। एक दिन सुबह-सुबह काकाजी ने कहा कि बापा कह रहे हैं, तो झूठी-झूठी 'हां' करने में क्या जाता है? हमें कहाँ (साधु) हो जाना है? झूठ-मूठ तो 'हाँ' कर! झूठ-मूठ कहने में क्या जाता है? काकाजी की रीत आप जानते हो। पहले तो मैंने सोचा कि क्या करूं? काकाजी ने कहा आज तू पक्का कर कि झूठी-झूठी तो 'हाँ' कर दूं – पीछे ही पड़ गए। तो मैंने कहा–ठीक है, हो जाऊँगा। तो बोले-अहो शाबाश! कह कर काकाजी तो स्नान करने चले गए।

और... पप्पाजी तो ताड़देव में कुर्सी पर टांगे लंबी करके जैसे बैठते थे - वैसे बैठे थे। मेरा पप्पाजी के साथ भी वैसे खुलेभाव का संबंध!

तो, पप्पाजी ने मुझे कहा कि – मूर्ख है ना तू?

मैंने कहा – क्यों मूर्ख?

काका ने तुझे झूठी-झूठी 'हाँ' करने क्या कहा और तू मूर्ख ने 'हाँ' भर दी।

मैंने कहा – झूठी -झूठी भरी है ना?

तो बोले – अरे! एक पुलिस कमिश्नर जितना तो मान उन्हें। पुलिस कमिश्नर के सामने कह दिया हो कि मैं यह पेनल्टी भर दूँगा, फिर ऐसे छटकने से काम चलेगा क्या कि मैं तो झूठ - मूठ कह रहा था?

मुझे लगा कि ये पप्पा, काका को ठीक से जानते हैं। दूसरी बात – मुझे यह बात पक्की थी कि पप्पाजी कभी झूठ नहीं बोलते थे। काकाजी कहते थे ना कि मेरा भाई बहुत प्रमाणिक, बहुत सिन्सियर, वो जो माने वही वर्ते और फिर बोले। काकाजी के बारे पप्पाजी का अगर ये स्टेटमेन्ट है, तो जरूर सावधान रहना चाहिए। पप्पाजी की सिन्सियारिटी मैंने रियली देखी है।

सालों पहले, जब मैं 'युवक' था – एक बार क्या हुआ था कि सुबह-सुबह १०-१०:३० बजे की बात है। संस्था के दो - तीन बड़े कहे जाते जने आए थे। काकाजी कहीं गए होंगे। पप्पाजी वहीं थे, उन्होंने पप्पाजी के पास बात छेड़ी। उन्हें ठीक - सा पप्पाजी के बारे ख्याल नहीं होगा। सो, घर में फूट डालने की इन्टेन्शन उनकी होगी। उन्होंने बात छेड़ी कि बाकी तो सब ठीक है, पर यूं सब (काकाजी के) पाँव छुएं – करें... भगवान की तरह पुजवाना है उसे – खुद को...। पप्पाजी थोड़ी देर तक तो सुनते रहे; फिर बोले – देखो, सुबह से पाँव को साबुन लगा कर – धोकर लंबे करके मैं यहाँ बैठा रहता हूँ। मेरे पाँव कोई नहीं छूता, उसमें दैवत्व होगा तभी सब पैर छूते होंगे ना? वो लोग तो चले ही गये कि यहां दाल गले ऐसा नहीं है। देखिये, ये थी पप्पाजी की सिन्सियारिटी। दूसरी ओर ये विचार आता है कि **पप्पाजी कोई कम विभूति तो थी नहीं।** हम आज उनकी महिमा समझे हैं, तो बोलते हैं कि पप्पाजी ऐसे हैं। बाकी हम नहीं कहते थे, तब भी वे तो ऐसे ही थे। **फिर भी,** वे ऐसा बोले – तो **कितने अहम् शून्य बन के वे रहे होंगे?** वर्ना, तो ऐसा बोला नहीं जा सकता।

मेरा कहना यही है कि बस इनकी बातों का सच में हम भरोसा करें। **वचनामृत है, लोया का 'दस' कि – जो ज्ञानी है, वो सुखी है या तो वो सुखी है जो यह मानता है कि भगवान और संत जो बात करते हैं वो सच ही है।** लेकिन, अपने यहां एक ज्ञान चलता है कि बड़े पुरुष तो कहें; पर हमें तो ऐसा ही करना है। उनको तो कहना ही पड़े। इसकी बजाय हम सच में यही समझें कि वो जो कह रहे हैं, वो सच है और मुझे वही करना है, तो हम सुखी हो जाएंगे।

ताड़देव से हमने एक ही चीज सीखी है कि यह धाम का समाज है, संबंध वाले सभी मुक्त भी दिव्य हैं। काकाजी और पप्पाजी बात करते थे – **अक्षर और पुरुषोत्तम की तो अपनी निष्ठा है ही, पर हमने 'भगवदी' का – 'मुक्त' का तीसरा तत्त्व नया जोड़ा है। पप्पाजी ने उसे धाम, धामी, मुक्तों की जय करके – मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय करके नवाज़ा।** हम भी तोते की तरह वह बोलते तो हैं – 'मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय!' पर यह तीसरा तत्त्व जो एड करा, वो विज्ञान में जैसे एड्वांसमेंट हुई है, वैसी अध्यात्म में एक एड्वांसमेंट करी है।

अक्षर और पुरुषोत्तम की उपासना तो है। और हम बोलते भी हैं कि – भगवान और संत धरती पर आते हैं **जीव को सुखी करने**। बराबर?

स्वामिनारायण ने आशीर्वाद दिया है कि ऐसे संत द्वारा वे अखंडित रहेंगे – **जीव को सदा सुखी करने** के लिए। एक ज्योति चमकी और बाद में अंधेरा – ऐसा इन्होंने नहीं होने दिया। ज्योत से ज्योत चालू रही; वो स्वामिनारायण की देन है। उसमें काकाजी – पप्पाजी ने **नई एडवांसमेंट** में **'मुक्त' की – 'भगवदी' की** भी इतनी ही महिमा समझने का एड करके (जोड़ कर) **सदा सुखी होने के लिए आसानी** कर दी है।

यह कोई नई बात नहीं है, पहला प्रकरण की पहली बात यही है। इससे भी ज्यादा, 'भक्त चिन्तामणि' प्रकरण – ६८ में लिखा है – 'दासना दास थईने वळी जे रहे सत्संगमां, भक्ति एनी भली मानीश, **राचीश एना रंगमां!**' दासना दास थई मतलब – मुक्त का दास बन कर जो रहेगा। हम बोलते हैं भले कुछ भी, लेकिन मुक्तों से बराबरी ही करते हैं।

स्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी के चरणों में आज यही प्रार्थना कि ये चटवानी ने जो बात करी, वह मुझे बहुत पसंद आई। आप लोगों के संबंध में हम रहे हैं और गुणातीत भाव को नहीं पाये तो सच में भगवान के गुनाहगार बन जायेंगे।

तो, नई कुछ बात नहीं करनी है। हमें तो ये लोग जो कहते हैं, वह सच ही है, यही बात पकड़ कर रखनी है। समझ लो, ये लोग कुछ कमजोर भी हैं। लेकिन हम इनको क्यों मानते हैं? इनके अंदर महाराज हैं इसलिए ना? महाराज अति समर्थ हैं, इसलिए हमारे लिये इनको ताकतवर बना कर महाराज हमारा डॅवलपमेन्ट करेंगे ही। ये बात मुझे काकाजी ने करी थी; जब मैंने काकाजी को कहा था कि – आपको तो अक्षरविहारीस्वामी का ही पक्ष रहने वाला है। एक बार खूब बहस हुई थी; काकाजी ने मुझे समझाने की भरसक कोशिश करी। मैंने कहा – नहीं-नहीं काकाजी आप कितनी भी बात करो, 'ब्लड इज़ थिकर धॅन वॉटर'। तब ए-१०३ में मुझे कहते हैं कि चलो मान लो, मुझे अक्षरविहारी का पक्ष है। मैंने कहा – हाँ, अब एग्री हुए ना? मुझे ऐसा हुआ कि इन्होंने एग्री कर लिया। पर, फिर उन्होंने पूछा कि – तू मुझे क्यों मानता है? मेरे में योगी हैं इसलिए ना! या तू मने इंडीविज्युअली माने छे? व्यक्तिगत मुझसे एटेचमेन्ट है? मैंने कहा नहीं; यह बात तो पक्की है। शुरुआत में ऐसा होगा, लेकिन बाद में तो इसलिए रहा है कि योगीजी महाराज आपने अखंड रखे हैं। तब उन्होंने कहा – मैं भले अक्षरविहारी का पक्ष रखूं, लेकिन योगीजी महाराज तो तेरे पक्ष में रहेंगे ना। **ये असल में काकाजी ने हमें अक्षरपुरुषोत्तम की फिलॉसॉफी बता दी। गुणातीतभाव को पाया हुआ संत श्रीजी नहीं है, श्रीजी का अखंड धारक है।** अगर वो संत से भले ही तुम्हारा सेटिंग नहीं होता होगा, पर महाराज तो तुम्हारे साथ रहेंगे ही। बस इसी प्रिंसिपल को लेकर और ये महाराज के संबंध वाले ये सब मुक्त – जैसे मैंने कहा ना कि **ये बहनें आईं... 'आई केन नॉट एक्सप्लेईन'!** जिसे कहते हैं ना कि **मैं खूब एक्साइटेड हूँ।** ये मदनगोपाल वगैरह को मैंने हॉलॅण्ड दो-तीन बार फोन करे, तो मदनगोपाल ने मुझे कहा कि – *गुरुजी मैं जरुर आऊंगा।*

मैंने जब उन्हें कहा था कि आप आओगे तो मुझे खुशी होगी, तब वो बोले – *अरे, गुरुजी! आप मुझे इतना बुलाते हो, तो मेरे दिल में बड़ी खुशी होती है कि हमें ऐसे बुलाते हैं।* **यूं इस बार मैंने खूब दबाव डाल कर सबको बुलाया है। एक परिवार है, अपना कुटुंब है, अगर आप नहीं आते, तो मुझे किसे बुलाना था?**

तो, सच में मानना – आज जो सब को ये कॉफी पिलाई है, वो इस खुशी की कॉफी है और ये कॉफी याद रखते-रखते जाना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

...मुझे एक ही बात कहनी कि आज पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करके उन्हें बिराजमान किया; अब जैसे उन्होंने स्वयं कहा था, पप्पाजी यहाँ हाज़राहज़ूर रहेंगे। इसलिए हम सबको सच में लाभ मिलेगा। उनके वचन में विश्वास रख कर हम उनके पास प्रार्थना करेंगे, तो हम उत्तरोत्तर अपनी प्रगति कर सकेंगे।

गुरुजी का सबसे बड़े से बड़ा गुण हो तो वो यह कि उन्होंने पप्पाजी का सूत्र आत्मसात किया हुआ है। पप्पाजी कहते थे– **स्पीक लेस, वर्क मॉर; लॅट यॉर रिज़ल्ट्स स्पीक फॉर यु।** उनकी मूर्तिप्रतिष्ठा के दिन यह आज हम को पूरे समाज को तादृश्य यहाँ दिखाई दे रहा है और... सबने जो यहाँ बातचीत करी और दो दिन से जो उत्सव हुआ, वो **उन्होंने उस सूत्र का सचमुच साक्षात्कार जो किया है, उसका यहाँ हम सबको दर्शन हुआ। उस सूत्र का साक्षात्कार यानि– पप्पाजी का साक्षात्कार उन्होंने किया है...**

मैं तो मित्रभाव से कह रहा हूँ – तो बुरा मत मानना, पर वो जो कहते हैं कि मुझ में कोई महिमा नहीं - मुझ में यह नहीं है वगैरह, यह बात सौ प्रतिशत सच्ची है। पर, **भगवान रखे हुए पुरुष हैं, उनको भगवान में से जो भी प्रेरणा आती है, उस तरह सहज स्वभाव से वो वर्तते हैं।** उन्हें स्वयं ऐसा नहीं है कि मैं ऐसे करुं – वैसे करुं। **उसका नाम ही गुणातीत संत!** जिस गुणातीत संत के अंदर रह कर महाराज काम करते हों, उसको विचार करना नहीं पड़ता; सो वे कहते हैं कि मुझे यह विचार आया ही नहीं। उनकी बात सच्ची है। पर, हक़ीक़त में वह गुणातीतभाव कहा जाता है और गुणातीतभाव में रह कर, अखंड भगवान को धार कर जीवन जीने वाला जो व्यक्ति हो, वो भगवान में से आए – भगवान में से जो प्रेरणा हो, उसके मुताबिक सहज स्वभाव से वर्तते हैं। इसलिए वे कहते हैं कि मुझे कोई महिमा है ही नहीं। पर महिमा का सवाल ही नहीं आता, जब भगवान ही काम करते हैं, भगवान की प्रेरणा ही काम करती है। **अखंड उनमें रहकर भगवान काम करते हैं, अखंड उनमें रहकर पप्पाजी काम करते हैं, काकाजी काम करते हैं और...**

काकाजी व पप्पाजी को हम काकाजी और पप्पाजी रूप में देखते हैं, परंतु वे काकाजी और पप्पाजी नहीं हैं– अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप हैं – योगीजी महाराज का स्वरूप हैं। वही अक्षरपुरुषोत्तम का परमतत्त्व आज गुरुजी में रह कर काम कर रहा है। इसीलिए वे सहज स्वभाव से प्रभु में से जो भी कुछ आता है, उसी के मुताबिक हर एक मुक्त के साथ – जो भी मुक्त - चैतन्य सामने आता है, उससे बातचीत करते हैं - जवाब देते हैं और उसका अंतर भेद देते हैं; उसके संकल्प पूरे होते हैं और उससे उन्हीं का सुख मिलता है। **तभी यह पूरा समाज तैयार होता है, वर्ना समाज तैयार होता नहीं।**

तो आज हम **इतनी चीज पक्की करें कि गुरुजी कुछ भी कहें, हम भूलभुलैया में ना रहें।** कोई भी व्यक्ति अपनी महिमा की बात करता ही नहीं। यह रहस्य की बात है। महाराज ने मना करी है कि स्वयं अपनी महिमा की बात ना करो। इसलिए गुरुजी ऐसा कहेंगे नहीं कि यह मेरी महिमा है। नहीं ही कहेंगे, क्योंकि वह उनका दासत्वभाव है - सेवकभाव है। पर हक़ीक़त यह है कि उनमें रहकर भगवान काम कर रहे हैं। काकाजी – पप्पाजी में रह कर साक्षात् अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप – परमतत्त्व काम करता था। वैसे के वैसा ही परमतत्त्व आज उनमें रह कर काम कर रहा है। इसलिए हम इस भूलभूलैया में ना रहें और **प्रत्यक्ष स्वरूप में हमें जो भी अनुभव हुआ है, वो अपना अनुभव सच्चा है; वो पकड़ रखें।**

उन्होंने खुद ने ही कहा है कि ये स्वामिजी और हम सब जो कहें, वो बात सच्ची ही है ऐसा मानना। इसलिए हम जो कह रहे हैं, वो बात सच्ची है यह मान्य रखें और उनमें रह कर **काकाजी, पप्पाजी, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, बापा - योगीजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज – ये सारी जो मूर्तियाँ पधराई हैं – ये सभी स्वरूप, अभी स्टेज पर बैठे सभी स्वरूप उनमें रहकर काम करते हैं – ऐसा मान कर हम अपनी प्रगति को पाएं!** सबको ऐसा खूब-खूब बल दें, यही अंतर की प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

योगीजी महाराज ने ईक्यावन युवकों को साधु बनाने का जो संकल्प किया, उस पूरे आयोजन में काकाजी ने अद्‌भुत परिश्रम उठा कर बापा को खूब राजी कर लिए। १९५३, ५४, ५५, ५६ के सालों तक स्वामिनारायण संप्रदाय में पढ़ा-लिखा कोई साधु होता ही नहीं था। '५२ का काकाजी का वो साक्षात्कार – अद्‌भुत दर्शन कि अक्षरधाम में महाराज जो हैं, वो बापा के द्वारा धरती पर अखंडित विराजमान हैं – ऐसी बापा ने सहज दृढ़ अनुभूति कराई और काकाजी ने तीन अद्‌भुत कामों से बापा को राजी-राजी कर लिया।

पहला काम यह कि – समाधि के बाद काकाजी ने समग्र समाज में यह बात बहती कर दी कि – **यह जोगी सामान्य साधु नहीं है, बल्कि शास्त्रीजी महाराज का- भगवान स्वामिनारायण का अद्‌भुत स्वरूप है!** तब तक समग्र गुजरात का ९० प्रतिशत समाज बापा को **'अच्छा साधु'** ही मानता था। धीरे-धीरे-धीरे काकाजी ने स्वरूपनिष्ठा और महिमा की बातें जो शुरू करी, उसके बाद बापा के प्रति हजारों की निष्ठा दृढ़ हुई। वर्ना सब यूं ही मानते थे कि शास्त्रीजी महाराज का यह साधु – भला साधु है, सब की सेवा करता है। काकाजी ने बिगुल बजाया कि – यह कोई सिर्फ 'गरीब', मातृहृदय साधु नहीं हैं, बल्कि उनके दस इन्द्रियों और चारों अंतःकरण एवं रोम-रोम में सांगोपांग भगवान स्वामिनारायण ही काम कर रहे हैं। ऐसी हजारों हरिभक्तों के हृदय में पक्की निष्ठा हो गई।

दूसरी – काकाजी ने प्रकाशन की अद्‌भुत सेवा करी। काकाजी-पप्पाजी द्वारा ताड़देव से अद्‌भुत महिमा की शुरुआत हुई। १९५३-५४ में हम आणंद में पढ़ते थे तब बापा ने कहा था कि – हमें युवक मंडल की स्थापना करनी है और १९५४ में ही काकाजी वहाँ आए थे; तो उन्हें बापा ने कहा कि - हमें पत्रिका निकालनी है, आप पत्रिका निकालो। तब से एक सत्संग समाज में, गाँव-गाँव में एक प्रकाशन ऐसा पहुँचता हो गया, जिसके फलस्वरूप युवकों का थोड़ा-थोड़ा विकास होने लगा।

तीसरा काम – बापा ने अद्‌भुत किया और काकाजी ने उसमें खूब-खूब साथ दिया। *'१९६१ में जब गढड़ा का मंदिर पूरा होगा तब ५१ संत बनाने हैं'* – १९५७ की साल में योगीजी महाराज ने यह बात रखी; बहुत मुश्किल थी। काकाजी के प्रवचनों और पुष्टि के फलस्वरूप योगीजी महाराज की महिमा थोड़ी स्थिर हुई थी। लेकिन, अपना बेटा देने के लिए किसी का मन तैयार नहीं था। काकाजी ने खूब मेहनत करके, परिश्रम करके, डे एण्ड नाईट जग कर ५१ युवकों में से ३८ युवकों के मधर – फाधर को तैयार किया। काकाजी ने एक ही बात कही - ***यह जोगी सामान्य साधु नहीं है। तुम्हारे लड़के को अपने जैसा बना देंगे और तुम्हारी ७१ पीढ़ी को तार देंगे।*** बापा काकाजी को गाँव – गाँव साथ में रखते और गाँव-गाँव में महिमा अधिक व्यापक हो गई। उस वक्त पूरी संस्था में ६० संत थे; उन्होंने जब ५१ संत बनाने का बापा का संकल्प सुना, तो ६० में से ५५ को संकल्प उठा कि एक भी होने वाला नहीं

है। ऐसे कलियुग में कहाँ युवक (साधु) होने वाले हैं? पर, काकाजी निमित्त बनें। खूब अपमान सहन करे, खूब गालियां खाईं। जब-जब आते, तब बापा के सामने काकाजी हाथ जोड़कर इतना ही कहते – बापा आपको साथ देना पड़ेगा, वर्ना कोई लड़का देगा नहीं। बापा हंसते – हंसते कहते – शास्त्रीजी महाराज का संकल्प है, तुम्हें परिश्रम करना है। धीरे-धीरे-धीरे १९६१ के उत्सव के लिए तैयारी हुई; चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन बोचासण में जब हम इकट्ठे हुए थे, तब काकाजी के निरंतर परिश्रम के फलस्वरूप ३५ युवक तैयार थे। बापा ने काकाजी को बुलाया और कहा कि १६ कम पड़ रहे हैं, सवा महीना ही बाकी है, परिश्रम करो।

एक – अप्रतिम श्रद्धा,

दो – साक्षात् प्रभु का स्वरूप हैं यूं मान कर जीते,

तीन – मुझे निमित्त बनना है,

और... चार – बापा कराने वाले हैं।

यूं – वे फिर लग पड़े!

बैसाख कृष्ण १२ को उत्सव था; बैसाख कृष्ण १० को हम गढड़ा पहुँचे और काकाजी को दशम की रात को ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे बापा ने बुलाया था, तो वे बापा के पास बैठे थे। बापा ने काका को पूछा-कितने युवक तैयार हुए? काकाजी ने कहा – बापा, आपके आशीर्वाद से ५० तक आंकड़ा पहुँचा है, एक और बनाना है। बापा इतने राजी हुए, इतना हँसे, इतना गले लगाया और ऊपर से धब्बा मारा; मैं तो देखता ही रहा। बापा की वो अद्भुत योजना थी और काकाजी पूर्ण निमित्त बने।

यदि काकाजी बापा में डूबे हुए 'व्यक्तित्व' नहीं होते –

तो, एक तो बापा की महिमा नहीं थी,

दूसरी तरफ – अपरम्पार महिमा गाकर उसे स्थिर करना था।

तीसरी बात – कोई युवक मंदिर में आने तक को तैयार नहीं था – ऐसी एक विचित्र परिस्थिति थी।

पर, अप्रतिम विश्वास के फलस्वरूप काकाजी ने खूब परिश्रम किया...

फिर दादुभाई को दूसरे दिन सुबह बुलाया – एकादशी की सुबह। एक कम है, अब परिश्रम कर लो। काकाजी मेरे पास आए। मैं पत्र लिख रहा था। काकाजी बोले लाओ, पत्र लिख दें। मुझे बोले-अब एक कम है, भावनगर में से कोई युवक मिलेगा? बुला लो ना दो-चार! पूछने लगे – बोटाद में से मिलेंगे? मैंने कहा – जितने आने वाले थे, उतना परिश्रम कर लिया है। पर, एक है – ४६ साल की उम्र है। उसको हम बनाएं? काका एकदम हँसते-हँसते बापा के पास पहुँचे। एकादशी की शाम को। काका ने कहा-बापा, ईक्यावन का आंकड़ा पूरा हो गया।

कौन?

तो बोले, वो वाघजी भगत है ना! उसको हम पार्षद बना देते हैं।

हाँ, चलो ईक्यावन हो गए। बापा की योजना में काकाजी ने जो परिश्रम किया – अद्भुत! कई मधर-फाधर की खूब उपेक्षा सहन करी। फिर भी हँसते ही रहे – हँसते ही रहे और माँ-बाप को समझाते जाएं कि **इस साधु की महिमा हमें नहीं है, पर एक दिन रोओगे। ये साधु नहीं है, भगवान स्वामिनारायण साक्षात् विचरण कर रहे हैं। तुम्हारी आत्मा का खूब भला करेंगे, गोद में बिठायेंगे।** यूं काकाजी ने तीन काम अद्भुत करे—

एक तो बापा के प्रति की प्रीति सबको दृढ़ करा दी।

युवक मंडल स्थापित करने के लिए खूब प्रयत्न किया।

और –

५१ साधु बनाने के लिए परिश्रम!

बापा को इतने राजी कर लिए, इतने राजी कर लिए। काकाजी को देख कर बापा हँसते ही रहते, हँसते ही रहते।

दादुभाई, शास्त्रीजी महाराज का संकल्प पूरा हुआ!

दूसरी ओर, पप्पाजी को कोटि धन्यवाद! सगी दो बहनें, सगे दो भाईयों के साथ ब्याही हों, ऊपर-नीचे होता ही है; कब अलग हो जाएँ पता भी न चले! शॅक्सपियर ने बहुत गहन लिखा है- *'जॅलसी' धाई नेइम ईज़ वूमन। स्त्री तेरा दूसरा नाम 'ईर्ष्या'।* वर्ड्सवर्थ ने कहा- *'फ्रेल्टी' धाई नेइम ईज़ वूमन।* 'बेवफाई' तेरा दूसरा नाम स्त्री। कब स्त्री सयानी हो – कब स्त्री पागल हो, पता ही न चले। 'एडेमेन्सी' धाय नेइम ईज़ वूमन। अपनी जिद पकड़ कर बैठ जाए, तो छोड़े ही नहीं। गुणातीतानंदस्वामी ने चौदहवाँ प्रकरण में तीन जगह लिखा है - स्त्री कभी 'एकांतिक' नहीं हो सकती। पप्पाजी ने ५३,५४,५५ से बहनों को बिठा कर, गोष्ठी करके धीरे-धीरे-धीरे बापा की महिमा समझाई। पाँच में से दस हुए, दस में से... जय स्वामिनारायण!

पप्पाजी ने बापा को कहा- बहनें तैयार हो रही हैं।

कितनी हुईं?

आप कहो उतनी संख्या तैयार होगी।

बापा को खूब आनंद हो गया। बोले थे – अपनी जमीन पर मकान बांधो और हम खातमुहूर्त करेगें। विद्यानगर में उत्सव था – बापा के प्रागट्य दिन का। साहेब और सब मना रहे थे और उस दिन विद्यानगर की धरती पर खुद इतनी उमंग से नीचे उतरे, खुद ईंट रखी और मसाला डाला। काकाजी, पप्पाजी, हम सब देखते रहे। मुझे इतना आनंद था कि हाश! बापा को भी इस प्रवृत्ति में कितनी उमंग है।

शरद्पूर्णिमा का मंगलकारी दिन था और मैं भी साथ में खड़ा था। ५४-५५ की साल होगी, पप्पाजी आए थे। बापा स्टेज से नीचे उतर रहे थे; पप्पाजी का हाथ पकड़ा। बापा ने काकाजी और पप्पाजी को कहा - बहनों को बातें करनी चाहिए। मैं बहुत विचार में पड़ गया था, **शून्यमनस्क** हो गया था। पप्पाजी के साथ एक प्रीति थी। इसलिए मुझे पप्पाजी के लिए ये विचार आया कि बहुत लायक होंगे, वर्ना बहनों की प्रवृत्ति तो... 'जय स्वामिनारायण'! आग में हाथ डालने जैसी। पप्पाजी निमित्त बने। एक भाई युवकों के लिए निमित्त बना, दूसरा भाई बहनों के लिए...

पप्पाजी को कोटि-कोटि धन्यवाद! बापा की आज्ञा के मुताबिक धीरे-धीरे पप्पाजी ने खूब परिश्रम करके बहनों का एक अद्भुत सर्जन करा... काकाजी को कोटि कोटि धन्यवाद! खूब निष्ठा के बल से वे जिए। अग्नि में हाथ डालने के लिए पप्पाजी को बापा ने आशीर्वाद दे दिए – बहनों को गोष्ठी करो; हमारा एक संकल्प पूरा हो।

तो, **काकाजी और पप्पाजी का हम पर ऋण है। युवकों और बहनों की योजना में दोनों को बापा ने जो निमित्त बनाए हैं, वो 'पूर्व' के हुए सिवा शक्य नहीं है। इस लोक के वे पात्र ही नहीं कहे जाएं, अक्षरधाम के ही पात्र कहे जाएं**; तभी यह शक्य है। बाकी तो 'अहम्' रहता ही है... **उनके हृदय में जोगी के सिवा किसी का तनिक भी स्थान नहीं था। किसी समझ का नहीं, किसी बुद्धि का नहीं, किसी अच्छाई का नहीं, किसी मान्यता का नहीं, किसी सत्य का नहीं, अपनी रीति का नहीं। बापा ने भी कैसा विश्वास रखा होगा?**

हम बहुत नसीबदार हैं, दोनों अद्भुत पुरुषों के जोग में रहने को मिला, दोनों अद्भुत पुरुषों की सेवा में रहने का मौका मिल गया, दोनों अद्भुत पुरुषों की दृष्टि में हम आ गए। दोनों अद्भुत पुरुष हमें याद करें, दोनों अद्भुत पुरुष हम पर हक करें, हम कितने नसीबदार! खूब भाग्यशाली हैं, खूब भाग्यशाली!

आप सब यहाँ आए हो, बहुत समय के बाद इस तरफ आया हूँ। गुरुजी के परिश्रम के फलस्वरूप यह समाज इतना अद्भुत! कब से सबको देखा करता हूँ, कब से! उनमें से मैं ८० प्रतिशत लोगों को जानता नहीं हूँ। दो बार यहाँ से गया, तो यूँ नज़र करी।

गुरुजी का शरीर (ताकतवर) नहीं -

एक, डॅलीकॅसी बहुत – शरीर और मन की,

दो – फिर भी बापा और काकाजी को राजी करने की भावना,

तीन – काकाजी के साथ की प्रीति के फलस्वरूप लग पड़े,

चार – फलस्वरूप 'किसी भी कीमत पर राजी करना है' – वह उसकी वो भावना मैं देखता ही रहता था। काकाजी और पप्पाजी की दृष्टि के फलस्वरूप एक अद्भुत सर्जन हो गया। कल्पना से परे का सर्जन! गुरुजी निमित्त बने, साहेब निमित्त बने। अक्षरविहारीस्वामी – सब निमित्त बने। जिसके फलस्वरूप अपना सच्चा संबंध हो गया।

आज के शुभ मंगलकारी दिन पर भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिव-शक्ति, भगवान स्वामिनारायण, भगतजी महाराज, जागा स्वामी, अदाश्री, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, महंतस्वामीजी, सबके चरणों में एक ही प्रार्थना है - हमें ऐसा बुद्धियोग देना जिसके फलस्वरूप **गुरुजी के प्रति कभी भी, कभी भी, कभी भी 'भाव' में फर्क ना पड़े। हम से गुरुजी का सहज स्वीकार हो। अकेले हाथ धुनी जमाकर दिल्ली की धरती पर जो परिश्रम कर रहे हैं, उनका सहज स्वीकार हो।** (उसे) कोई स्वार्थ नहीं है–

एक – प्रीति छलकती है,

दो – जाग्रत हैं,

तीन – उनमें से बातें कितनी अच्छी निकलती हैं? खूब जाग्रत! जिसके **फलस्वरूप** आज **अद्भुत शिविर हो गई, उत्सव हो गया।**

फिर से प्रार्थना – गुणातीत पुरुषों के चरणों में तुम सबकी तरफ से – साहेब भी हैं, अक्षरविहारीस्वामिजी हैं, निर्मलस्वामिजी हैं, गुरुजी हैं। ऐसे संतों के प्रति हमें भूल कर भी, भूल कर भी, जाने-अनजाने में भावफेर का कोई संकल्प ना उठे। उठेगा ही, पर अपनी फर्ज़ है भजन प्रार्थना कर लेने की। खुल्ले दिल से बात कर लेनी। सात्विकता का प्रभाव ऐसा है, सात्विक अच्छाई इतनी बुरी है, सत्त्वगुण कहो – खुद की अच्छाई कहो, हमारी आत्मा के साथ ऐसे विचित्र तरीके से चिपकी हुई है कि बड़े पुरुष में अभाव आता ही है, संकल्प उठता ही है। फिर भी, **तुम जाग्रत हो और कभी जब नापास हो जाओ, तब रो-रो कर, दिल से प्रार्थना करना।** तुम ऐसा नहीं कह सकते कि गुरुजी की हर क्रिया मुझे जँचती है। **मरने की यह जंग तुमने खेली है**, अच्छी बात है। **अंतर टटोलते हैं, तब ख्याल आता है कि अभी सच्चा संबंध बढ़ाना है। वचनामृत प्रथम २७, ३७, ६२ के जैसा संबंध सब का ही बढ़ता जाए,** ऐसी आज के शुभ मंगलकारी दिन पर **गुणातीत पुरुषों के चरणार्विंद में प्रार्थना।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. मल्कानी अंकल *(२५ मार्च, २००७ रात्रि १२:०० बजे)*

...मुझे ऐसा मन में था कि ये अक्षरज्योति की बहनों और जो सेवक हैं, वो इतना लोड कैसे लेंगे? मगर अभी तक देख रहा हूँ कि १२ भी बज गये हैं; अभी सेवक लोग खिंचते ही जा रहे हैं और फिर भी रबड़बैंड टूटने वाला नहीं है – ये प्रभु की कृपा है।

कल की शाम जो थी, वो **पियूषभाई** जो सूरत से आए हैं उन्होंने लूट ली। उन्हों**ने कल जो गुरुजी के लिए बात की उसके आगे बोलने के लिए छोड़ा ही नहीं।** बहुत अच्छी भावना से वो बोल रहे थे। ऐसा भी महसूस हो रहा था कि उनके अंतर से ये आवाज़ निकल रही है। **आज** की शाम **वशीभाई ने** लूट ली। **सारा कार्य जितना भी गुरुजी ने किया है, वो उन्होंने सही रूप से सबके सामने रख दिया।**

मुझे गुरुजी की कई बातें बहुत जँचती हैं। उसमें एक टॉप ऑन धी लाइन बता रहा हूँ। **टॉप ऑफ धी लिस्ट** कि **गुरुजी सदा ही अवलेबल!** ऐसा कोई समय नहीं है जो गुरुजी टॅलीफोन पर या पसर्नली मिले नहीं। मैंने देखा है कि वैभव टॅलीफोन करे तो भी गुरुजी उठायेंगे, निश्चय करे तो भी उठायेंगे, रूपित करे तो भी उठायेंगे। बच्चों में से भी कोई गुरुजी से मिलने आ जाए, तो गुरुजी उसकी बात सुनेंगे। एक ये बड़ी खास बात है कि गुरुजी अवलेबल रहते हैं, एक्सेसॅबल रहते हैं। **कभी 'ना' का सवाल है ही नहीं।** मैं सुबह टॅलीफोन करता हूँ – 'ज्योति बहन जय स्वामिनारायण'; कभी वो टॅलीफोन पर ना आएं ऐसी बात नहीं है। **गुरुजी को टॅलीफोन** करता हूँ – 'गुड मॉर्निंग, जय स्वामिनारायण' और ज्यादा बात भी नहीं करते हैं; वो टॅलीफोन उठाते हैं - बात करते हैं। **मैं इस भावना से करता हूँ कि दिनभर में जितने गलत कदम हों, पर सुबह यह एक सही कदम हो जायेगा, तो बाकी का दिन 'स्वरूप' खुद संभाल लेंगे।** तो, मैं यह बात कर रहा था एक्सेसेबिलिटी की।

वैसे गुरुजी हँसमुख, दयालु स्वभाव हैं। (भजन में) जो वह लाईन थी ऐसे – साधक और सेवक की मदद के लिए वे अपना कोई कानून भी तोड़ दें - नियम तोड़ दें, मगर आगे रहते हैं।

एक और विशेषता बता रहा हूँ – **'नो सीक्रेट्स - ऑपेन बुक'! बैठे हुए हैं सबके सामने, रूम भी उनकी खुली। अंग्रेजी में कहा जाए तो 'ट्रांसपरन्सी'। ऐसे गुण कहीं ढूंढने भी जाओ तो मुश्किल से मिलेंगे। मेरे जीवन में कई फ्रॅन्डशिप्स टूट गईं - छूट गईं, मगर जो मिला वो उससे कई गुणा ज्यादा है। गुरुजी ने सब स्वरूपों की पहचान करवाई।** मैं कहता हूँ कि **मेरा लक्कीएस्ट डे ऑफ लाइफ वो रहा, जब गुरुजी का दर्शन करने वह छोटे मंदिर में गया था। गुरुजी ने प्रभु की, काकाजी महाराज की, पप्पाजी महाराज की, स्वामिजी की, साहेब की - सबकी पहचान करवाई और कभी भी कोई नेगेटिव बात नहीं करी, कभी भी रुकावट नहीं डाली; जिससे कि हमारे जैसे साधक – वो आगे फ्रीली बढ़ सकें। गुरुजी की ये विशालता के फलस्वरूप आज मैं कोई भी सेंटर में जाता हूँ, तो मैं एक फ्री माइन्ड से जाता हूँ। ये जितने भी स्वरूप हैं, सारे अपने हैं। भले ही मैं दिल्ली का हूँ। भले ही मेरे गुरुहरि पप्पाजी महाराज हैं। मगर गुरुजी ने क्या सिखाया? 'रिस्पॅक्ट ऑल – लव ऑल' सबसे प्रेम करो, 'फॉलो वन'!**

दिल्ली के सत्संगियों को मैं एक मॅसेज दूंगा, जो मुझे एक बार स्वामिजी ने बोला था। स्वामिजी फार्म पर पूजा कर रहे थे और मैं सामने बैठा था। स्वामिजी ने पूजा खत्म की और अचानक मुझे बोले – *'अंकल, आप पप्पाजी में डूब जाना।'*

तो, मैं दिल्ली के सत्संगियों को एक मॅसेज दूंगा– **गुरुजी इज़ धी वे ऑफ लाइफ, गुरुजी इज़ धी ट्रुथ... एण्ड हिज़ वर्ड्स वील टेक यू एक्रोस ओशन्स।**

वैसे भी स्वभाविक गुरुजी इज़ अनटायरिंग– वो थकते नहीं हैं। आराम में भी जाएंगे तो आधा-पौने घंटे में आ जाते हैं। **वी विल ऑल प्रे धेट गुरुजी हॅज़ ए गुड-गुड लाँग लाईफ, ए हेल्धी लाइफ। ही शुड रीमेईन यंग फॉर एवर।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

२६ मार्च, २००७ सायं–प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की विदाई की बेला पर

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

सहजानंदस्वामी महाराज की जय, मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय, गुणातीत समाज की जय, दिव्य पप्पाजी की, दिव्य काकाजी की जय जय जय जय जय।

दो दिन बहुत अच्छा लाभ मिला। सबसे उत्तम से उत्तम बात जो हमारे लिए बनी, वो **सचमुच गर्व की बात है कि गुरुजी ने खूब परिश्रम करके, मेहनत करके राजधानी में पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करी और पप्पाजी को बिराजमान किया।** सचमुच हम सब के लिए गर्व और आनंद की बात है। और... इसके लिए गुरुजी को और दिल्ली मंडल के सभी मुक्तों को-सबको कोटि कोटि धन्यवाद!

इससे भी विशेष, कल गुरुजी ने बात करी थी उसके मुताबिक कि बहनें, **खास ज्योति बेन ऐसा कह रहे थे कि जैसा ताड़देव में वातावरण था, वैसा ही वातावरण यहाँ, मुक्तों में, सभी में मेल-मिलाप–ऐसा सुन्दर वातावरण आज यहाँ पर देखने को मिलता है, उसका भी खूब आनंद है। क्योंकि वो ही काकाजी, पप्पाजी, बा और कांतिकाका का ध्येय था।** और... उसके मुताबिक–यहाँ जब देखते हैं, तब ऐसा होता है कि छोटे से छोटे मुक्त हैं, फिर भी उन सभी के अंदर सुहृद्‌भाव, आत्मीयता और हर एक के प्रति वैसा ही भाव है। इतना अच्छा दर्शन करके सचमुच मुझे तो खूब आनंद हुआ। ऐसे जबरदस्त सब मुक्त और उनका यहाँ पर एक सुंदर दर्शन हुआ। इसलिए उत्सव तो सर्वोपरि हुआ ही। पर्व मनाया गया, यह बात हक़ीक़त है।

लेकिन, उससे विशेष कि गुरुजी के समागम से, काकाजी के संकल्प से, पप्पाजी के आशीर्वाद से और सभी सुहृद् मुक्तों के परिश्रम से, यहाँ **दिल्ली में जो समाज तैयार हुआ है, वो सचमुच आदर्श है, दृष्टांत रूप है और उसे देख कर दिल में शांति-शांति, आनंद-आनंद, ठंडक हो जाती है।** तो, आज गुरुजी के चरणों में ऐसी प्रार्थना करें कि **ऐसा का ऐसा ही दिव्य समाज, अपना पूरा ही, जिसे 'गुणातीत समाज' हम कहते हैं, ऐसा गुणातीत समाज पूरा दिव्य और आत्मीयता वाला सारा समाज तैयार हो जाए।** सबसे ज्यादा मुझे आनंद इस बात का हुआ कि पप्पाजी के दो संकल्पों में से एक जो संकल्प कि **पूरे गुणातीत समाज के अंदर 'संप, सुहृद्‌भाव और एकता' प्रर्वते और वो संप, सुहृद्‌भाव और एकता रखने के लिए हमें किसी भी कीमत पर जो कुछ भी करना पड़े, वह करके भी समस्त गुणातीत समाज में ये संप, सुहृद्‌भाव और एकता करें।**

तो, उसका आज यहाँ बहुत अच्छा दर्शन हुआ और पप्पाजी महाराज बिराजमान हैं। गुरुजी का इतना अधिक परिश्रम है। सभी के साथ उनकी जबरदस्त आत्मीयता है और उनका भी ऐसा संकल्प है ही। तो, वो बात साकार हो

जाए। सारा गुणातीत समाज – **जो ताड़देव शुरुआत में था, तब हमारा 'ताड़देव मंडल' कहलाता था और ताड़देव मंडल संप, सुहृद्भाव और एकता से जो जीवन जीता था,** उससे धीरे - धीरे - धीरे हमारा पूरा गुणातीत समाज बना और **वो सारा गुणातीत समाज अब फिर से – जैसा ताड़देव में जो समाज था काकाजी, पप्पाजी, बा के सान्निध्य में, वैसा का वैसा ही आत्मीयता का समाज बने – ऐसा यहाँ से ही**... आज पप्पाजी और काकाजी बिराजमान हैं और योगीजी महाराज का ऐसा संकल्प था कि बापा आख़िर-आख़िर में ऐसा कहते थे, हरिभक्तों में यदि अंदर-अंदर ऐसा संप, सुहृद्भाव और एकता हो और ऐसे पच्चीस जने इकट्ठे हों तो मैं ज्यादा रहूँ। सो, उनकी भी यही रुचि, रहस्य और अभिप्राय था। उसका यहाँ हमें सच में ऐसा दर्शन हुआ और अब आज यहाँ इन दिव्य स्वरूपों के चरणों में, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी उनके सान्निध्य में, उनके चरणों में ऐसा संकल्प करें कि **जो दर्शन हमें यहाँ हुआ है, उसका व्याप्त हमारे समस्त समाज में प्रर्वते और सारे समाज में ऐसा वातावरण खड़ा हो,** ऐसी हम यहाँ प्रार्थना और संकल्प करें। और... **आज ऐसे दिव्य स्वरूप और मुकुंदजीवनस्वामी भी ऐसा संकल्प करें।** काकाजी की ख़ूब प्रसन्नता वाले हैं और उनकी अनहद् कृपा है। उनके ऊपर पप्पाजी की भी उतनी ही कृपा और प्रसन्नता है। स्वामिजी की भी उतनी ही प्रसन्नता है, साहेब की भी उतनी ही प्रसन्नता है। सभी गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता वाले ऐसे हमारे गुरुजी हम सबके लिए ऐसा संकल्प करें कि यह **जो दर्शन हमको यहाँ पर हुआ है – संप, सुहृदभाव और एकता का, वो सारे गुणातीत समाज में व्याप्त बने** – ऐसी मेरी तो अंतर से गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. इलेशभाई

गुरुजी आशीर्वाद दें उससे पहले; मेरे मन में एक बात थी – जो **अक्षरविहारीस्वामिजी ने कहा वह सच में सच्ची बात है।** एक-एक मुक्त को हुआ है कि जब काकाजी के साथ पप्पाजी की मूर्ति बिराजी और पप्पाजी के जो दो संकल्प हैं, उसमें से एक संकल्प के मुताबिक **'गुणातीत समाज एकाकार हो' – उसका प्रारंभ यहाँ से हो चुका है।**

गुरुजी ने बात करी थी कि (इस बात को लेकर) तीन-चार साल से मेरा सिर दुःखता था। मुझे लगता है कि पचास प्रतिशत तो उनके सिर का दर्द हल्का हो गया है। लेकिन **सारे गुणातीत समाज में (यह) व्यापक बने** तब उनके सिर का दर्द पूरा उतर जाएगा। इसलिए अभी भी उनका प्राकट्य दिन मना रहे हैं, कल महाराज का प्राकट्य दिन मनाया जाएगा और उसके साथ उनके प्राकट्य दिन की पूर्णाहुति होगी। तो, गुरुजी के चरणों में **प्रार्थना कि अभी भी आपका संकल्प बलवान बनाओ, जिससे कि गुणातीत समाज में वो साकार हो** और उसका दर्शन करके हम सभी अक्षरधाम का ख़ूब-ख़ूब सुख, शांति और आनंद के भोक्ता बनें। हम ऐसा जीवन जिएं और ऐसा हमारा विचार, वाणी और वर्तन बनाएं – ऐसा पियुषभाई कह रहे हैं। तो ऐसे आशीर्वाद दें, ऐसी गुरुजी के चरणों में प्रार्थना!

स्वामी की एक बात है। दूसरे तो अभागे लेकिन यादव तो निरंतर अभागे! कई बार वचनामृत या स्वामी की बातों में कई परमहंसों के – हरिभक्तों के नाम आते हैं कि ये ऐसे थे; जैसे मछियाव की फईबा! कहते हैं कि महाराज को वड़ताल का मंदिर मछियाव (गाँव) में करना था। लेकिन उसने जो जिद पकड़ी, उसे देख कर महाराज ने कह दिया कि मछियाव का पानी हराम है! हमारा नाम ऐसी लिस्टों में ना जाए। 'यादवों' वाली बात कैसी है कि – भई! दूसरे सब तो कृष्ण को नहीं पहचान सके, लेकिन जिस बिरादरी में कृष्ण जन्मे – वो लोग कैसे अभागे कि उन्हें कृष्ण की पहचान ही नहीं हुई? सो – निरंतर अभागे!

इसी प्रकार **काकाजी और पप्पाजी को दूसरे सब तो नहीं पहचाने, पर बापा ने एक्सक्ल्युझीवली उन्हें हमारे लिए स्पॅर कर दिया। फिर भी, जैसे चटवानी ने कहा कि हम गुणातीत भाव को ना पाएं, तो भयंकर गुनाहगार हो जाएंगे।**

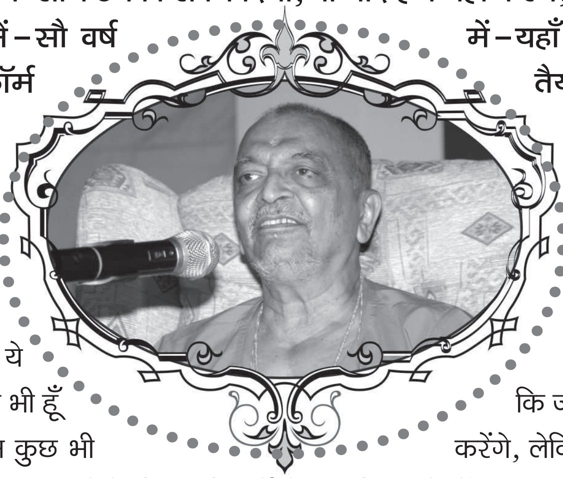

बापा ने जिस संकल्प के साथ उनका संबंध दिया, वो यदि हम नहीं करेंगे, तो कभी भी - दो वर्ष में- पाँच वर्ष में – दस वर्ष में – सौ वर्ष में – यहाँ तक कि दो सौ वर्ष में भी यदि हमारा ऐसा प्लॅटफॉर्म तैयार नहीं हुआ, तो नया प्लॅटफॉर्म तैयार करने में समय लगेगा, लेकिन महाराज को तो काल का फर्क पड़ता ही नहीं। विचार करना, बापा ने मुझे कहा था कि पाँच जन्म से तुम साधु होते आए हो; तो, ज्यादा नहीं – पचास वर्ष की एवरेज आयु गिनो तो ढाई सौ साल हुए! उन्हें कुछ फर्क ही नहीं पड़ा! हमें खाली ये साठ-सत्तर वर्ष दिखाई देते हैं। एक प्रकार से मैं निश्चिंत भी हूँ कि जो ढाई सौ साल से मेरे पीछे माथा फोड़ रहे हैं, सो – हम कुछ भी करेंगे, लेकिन वे हमें छोड़ेंगे नहीं। यह बात भी पक्की है। हम कोई चीज बनाने के लिए यदि वर्षों से रात-दिन लगे हों, वह ना बनती हो, तो कहते हैं ना कि इतने वर्ष लगाए हैं; अब कैसे भी इसका पार लाओ। इस प्रकार महाराज हमारा पार तो लाएंगे। लेकिन नुकसान हमें ही होना है कि जिस योजना के लिए हमें काकाजी और पप्पाजी का संबंध दिया – मुझे अभी भी याद है, पप्पाजी और काकाजी दोनों बोला ही करते कि अलौकिक भूमिका को चूर-चूर करने हमें कसनी में लिया है; एक आध्यात्मिक समाज का सर्जन हो रहा है। उसका अर्थ क्या? यह सब भेड़चाल! कई बार हमें टटोलने के लिए दूसरों में से महाराज बोल जाते हैं। पर – पता नहीं, शायद हमें वह करना ही नहीं है या अब की बार की पत्रिका में लिखा है वैसे हमें उनकी (इस बात का) भरोसा नहीं। **सनंद महेता बोले थे कि यह (चीला चालू) भेड़चाल का सत्संग दादुभाई को पसंद नहीं था।** भेड़चाल का सत्संग मतलब – वही जलूस, वही शोभायात्राएँ, वही संत सम्मेलन, वही मंदिरों का निर्माण, वही प्रदर्शन। चलो, इस दिशा में हमने कितना ही किया, पर दूसरों की अपेक्षा एक उंगली नीचे ही रहे! ये समझने जैसी बात है। महाराज हमें शायद बताना चाहते हैं कि यह तुम्हारी दिशा नहीं है। तुम्हें अलग काम करना है – चैतन्यों के विकास का, एक आध्यात्मिक समाज के सर्जन का, एक दिव्य समाज के सर्जन का–जो सुहृदभाव से – आत्मीयता से जीता दिखाई दे। दूसरा कुछ यदि हम करने भी जाएंगे तो महाराज सफल नहीं होने

देंगे, यह बात भी पक्की है। कम्पॅरिज़न में हमें ओछा रखेंगे ही। पर, आज सोचें कि भले सिद्धांत समझ आया हो या नहीं आया हो; हमें जो काकाजी और पप्पाजी कहा करते थे, उनकी तरफ ही यदि हमारी नज़र रखी होती, तो आज हमारा एक सारा समाज...! याद करें कि बापा आख़िर-आख़िर में बोलते थे – हमें कुछ नया करके दिखाना है। वो क्या कि ऐसा एक समाज पनपे (खड़ा हो)। तो अभी **सब भूल कर 'यू टर्न' लें और पप्पाजी ने जैसे लिखा है ना कि किसी भी कीमत पर** – कोई भी कीमत का **मतलब** क्या? मैं तो मानता हूँ कि **हमारे केन्द्रों की कीमत पर भी काकाजी व पप्पाजी को केन्द्र में रख कर जितनी डॅवलपमेन्ट करेंगे, उतना विकास होने वाला है।** हम खुद ही कान में रुई डाल कर बहरे बनें, वो बात अलग है, बाकी **समाज में से बहुत स्पष्ट सुनाई दे रहा है कि अलग-अलग प्रवाहों में समाज बंट गया है।** मुझे दुःख इतना ही है कि – काकाजी ने तो एक जगह लिखा भी है कि **हर एक ग्रुप के निजी मुक्त, निजी प्रकाशन, निजी भवन और निजी ज्ञान...! सेन्ट्रलाईज़ तो कुछ नहीं रहा ना?** तो खूब विचार करें और वापिस मुड़ जाएं। **सब कुछ छोड़ कर काकाजी और पप्पाजी को पकड़े रखेंगे, तो यह बात शक्य बनेगी।** शक्य बनेगी का मतलब – हमें वो सेवा के अधिकारी बनने का लाभ मिलेगा। वर्ना, यह चीज बनने वाली तो है ही। चाहे दो सौ वर्ष के बाद बनेगी। इसमें तो कोई प्रश्न ही नहीं है।

...यूं झुके – विनम्रता रखे – ठीक है; साधु के ऊपर के लक्षण हैं। लेकिन, 'गुणातीत' कॉन्सियसनेस अलग है, वहाँ तो प्रभु के सिवा कोई चीज ही नहीं है। तो उसे गुण का भी क्या भार रहने वाला है?

गुणातीतानंदस्वामी का एक प्रसंग है। हम क्या मानते हैं कि – साधु किसी भी दिन जिद नहीं करता। पर 'अमरेली' का जब झगड़ा हुआ; गढड़ा वाले कहते कि अमरेली हमारे नीचे – वहाँ सभी पैसे वाले होंगे। दरअसल अमरेली वालों को जूनागढ़ के स्वामी के साथ लगाव था। वे हमेशा जूनागढ़ की ओर ढले हुए रहते थे। इसलिए यह झगड़ा चलता ही रहता था कि अमरेली का जो धर्मादा हो या हरिभक्त हों उन्हें गढड़ा ही आना चाहिए। और... ऐसा झगड़ा कोई नया नहीं था। मैं ५४-५५ में सत्संग में आया, तब काकाजी बोलते – ***'गढड़ा का कुत्ता भी जूनागढ़ के साधु को भौंके।'*** ...कुत्ता भौंके, तो दूसरे तो द्वेष रखने ही वाले हैं। पर, तब गुणातीतानंदस्वामी ने बहुत स्पष्ट कह दिया – ढील नहीं छोड़ी कि – 'हाँ, बापजी हाँ, अमरेली आप – गढड़ा वाले ले लो'। स्वामी ने कह दिया कि यह नहीं बनेगा। अमरेली जूनागढ़ के नीचे ही रहेगा। फिर भी गढड़ा वालों को अमेरली चाहिए ही, तो वे यहाँ जूनागढ़ आएं, हम गढड़ा चले जाएंगे – हमें 'ना' नहीं है। पर, अमरेली जूनागढ़ के साथ ही रहेगा। जूनागढ़ जाने के लिए तो कोई तैयार ही नहीं था। वहाँ का पानी पचे नहीं-गैस हो जाती। पर, स्वामी ने ऊपर की साधुता ही रखी होती तो? और जवाब भी कैसा दिया? मैंने तो जिस दिन यह बात पढ़ी थी, सोचता था 'गुणातीतानंदस्वामी' तो कमाल कहे जाएं। वर्ना, यह जवाब सूझेगा नहीं – किसी को। उन्होंने खुद ही कहा है कि कामिल-काबिल सब हुन्नर तेरे हाथ – ऐसे ये साधु हैं। मतलब, उन्हें सब कुछ आता है। मुझे साधु बनाना था; बापा को मैंने स्पष्ट मना करी थी। काकाजी ने तो मुझे कह दिया था कि मैं तुझे कहूँगा ही नहीं। पर, कैसी गुगली बॉलिंग करी बापा ने? आप सभी जानते हो। इससे भी अधिक, देखो – कितने चालाक काकाजी! मुझे दिल्ली भेजना था ना, तो पक्का तो उन्होंने पहले से किया होगा। सारा प्लॅटफॉर्म तैयार किया-करा। फिर अक्तुबर-नवंबर का महीना पसंद करा। सभी जानते हैं कि गुरुजी को सर्दी पसंद है। तो, छः-सात साल तक तो मुझे सर्दी में ही भेजते रहे। यदि भूल से भी अप्रैल या मई में भेजते और मुझे ख्याल पड़ता कि यहाँ तो इतनी अधिक गर्मी पड़ती है – तौबा करा दे ऐसी; तो मैं कभी भी दिल्ली रहने के लिए तैयार ही नहीं होता। आना-जाना ठीक है, पर रहने का नहीं। पर, छः-सात साल अक्तुबर-नंवबर ठंड में भेजते रहे। गुजराती में कहें तो

मुझे 'भेरवी पाडयो' (चक्कर में डाल दिया)। जाडी भाषा में – यहाँ के मुक्तों के लगाव में फंसा दिया और फिर तो रहना ही पड़े। कैसी चालाकी करी ? यूं , हम नहीं करेंगे तो उन्हें सारी चालाकियाँ आती हैं। हम भले माने कि वे बहुत सरल हैं – कुछ सरल वो हैं नहीं। हमारे लिए सभी तत्त्वों को वे सरल कर देते हैं।

और तो कुछ बात करनी ही नहीं है। आज ही आपने (प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी) बात छेड़ी, मुझे खूब आनंद हुआ। उस बात को सच में हम पकड़ कर रखें। अभी यह बहुत जरुरी है - बहुत जरुरी है। **मुझे तो ऐसा होता है कि जल्दी ही सारा एकाकार, एकाकार, एकाकार, एकाकार हो जाए।** हम बोलते हैं, पर यह करना मुश्किल भी है क्योंकि सब काफी दूर चले गए हैं। फिर भी, हमारे लिए यह रास्ता बहुत सरल है। हमें - संतों को क्या ऐसा ? बनिया मूंछ नीची। इसलिए कोई भी प्रॅस्टीज इश्यू रखे बिना – मुझे तो ऐसा होता है कि एक समाज जो बात करता है उसे झुठला देना है। और... 'सत्यमेव जयते...' वह क्या ? **काकाजी** ने एक अच्छी बात करी है। **एक बार बोले थे – ब्रह्मरुप से वर्तना, इससे भी सुहृद्भाव से वर्तना अधिक है।** काकाजी का ये सूत्र है... बाकी तो हम भले कितने भी सयाने होकर वर्तेंगे, लोक में वाह - वाह भी हो कि बहुत अच्छे साधु हैं, ऐसा है - वैसा है, फलां है - ढिमका है। पर हम में बरकत नहीं आएगी। **बरकत का साधन भी बता दिया है – सुहृद्भाव।** सुहृद्भाव भी मैं सब के साथ रख सकूँ और हमारे ग्रुप में – दिल्ली में – साथ में जो जुड़े हुए हैं, उनके साथ यदि मेरा सुहृद्भाव नहीं रहता हो, तो जरुर समझना है कि मैं कुछ बनावट करता हूँ – ढोंग करता हूँ। अच्छाईपेशी के लिए ही बाहर मेरा सुहृद्भाव है। यदि सुहृद्भाव यहाँ अंदर - अंदर रख सकता हूँ और दूसरों के साथ – अपने ही दूसरे सॅन्टर्स के साथ मिल कर नहीं रख सकूँ – सुहृद्भाव से काम नहीं कर सकूँ, तो जरुर समझना है कि मेरी कोई कसर है। वह भी नहीं रखनी है। यूं हमारा दंभ भी टल जाए और कसर भी टल जाए, उसके लिए स्वामिजी आशीर्वाद दें, ज्योति बहन - संकल्प करें।

और... मुझे क्या लगता है कि यह काम आप जैसी (प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी) कोई विभूति जोरदार संकल्प करेगी, तो पार उतरेंगे। बाकी छोटे - छोटे पटाखों से कुछ होने वाला नहीं है... सहजानंदस्वामी महाराज की जय। छोटे मुँह बड़ी बात करी है...

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित आशीर्वचन एवं उद्‌बोधन)

✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	11.6.2007,	सोमवार	—	एकादशी – व्रत
(2)	दि.	12.6.2007,	मंगलवार	—	**अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति** **एवं** **ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन** ***(सायं 7:15 से 9:15 मनाएंगे।)***
(3)	दि.	25.6.2007,	सोमवार	—	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(4)	दि.	26.6.2007,	मंगलवार	—	भीम एकादशी – व्रत
(5)	दि.	30.6.2007,	शनिवार	—	वटसावित्री
(6)	दि.	11.7.2007,	बुधवार	—	एकादशी – व्रत
(7)	दि.	16.7.2007,	सोमवार	—	रथयात्रा

* 'मॅडले फिफ्टीझ' – भजन

(राग – चेहरे पे खुशी छा जाती है...)

एहसास काकाजी का अपनी रीति, नीति से देते हो; -२
मुक्तों को मूर्ति में खींच के तुम, दिल में उनके बस जाते हो
एहसास काकाजी का अपनी...
काकाजी का परिचय दें कैसे,
नहीं इसके सिवा कोई चाह तुझे ;
मुक्तों को राजी करने की,
नित नई उमंग उत्साह तुझे ;
नित नई उमंग उत्साह तुझे...
बस मौज में जीव को दे के संबंध,
श्रेय करने फिर आप बंध जाते हो।
मुक्तों को मूर्ति में खींच के तुम,
दिल में उनके बस जाते हो
एहसास काकाजी का अपनी......

(राग – प्यार हुआ, इकरार हुआ है....)

साधुता की शान गुरुजी, गुरुनिष्ठ निखालस तुम -२
स्मृतियों की दौलत हो लुटाते, शाश्वत् सुख के राशि तुम -२
साधुता की शान गुरुजी, गुरुनिष्ठ निखालस तुम
स्मृतियों की दौलत हो लुटाते, शाश्वत् सुख के राशि तुम
साधुता की शान गुरुजी, गुरुनिष्ठ निखालस तुम।।

(राग – ओ... मुझे किसी से प्यार हो गया...)

ओ... जीव को हितैषी मिल गया -२
हितैषी मिल गया, परम सुहृद् मिल गया,
मुक्तिदाता मिल गया;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...-२
हँसी खेल में जो जीवभाव टाले,
प्रभु प्रगटा कर माया तिमिर काटे,
हँसी खेल में जो जीवभाव टाले,
प्रभु प्रगटा कर माया तिमिर काटे,
बन के सच्चा गुलाम, काका का दे पैगाम,
करे श्रीजी का काम ;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...- ४

(राग – जवां है मोहब्बत हसीं है ज़माना...)

निराला कारीगर, अनिर्देश से है आया;
करुणा करके जिसने, हमें गोद बिठाया -२
चैतन्यों की पल-पल, जिसने परवरिश करी है -
जिसने परवरिश करी है -२
सुख-दुःख का साथी बन के, कुटुंबभाव जगाया
कुटुंबभाव जगाया,
निराला कारीगर, अनिर्देश से है आया;
करुणा करके जिसने, हमें गोद बिठाया।

(राग – एक परदेसी मेरा दिल...)

गुरुजी का हमें तो संबंध मिल गया,
संतरूप में प्रभु स्वयं मिल गया -२
हाँ... साकार ब्रह्म का संबंध मिल गया,
धाम, धामी, मुक्तों का परिवार मिल गया -२
तेरा जन्म, कर्म दिव्य मान के गाएं
जुड़ अभिप्राय में पूर्णता पाएं।
टालने कसर जो तू रास रचाए,
भक्तिरूपी 'डांडिया' हम उसमें लगाएं,
मूर्ति मुक्तों की लूट लें हम,
उनको राजी करके तुम्हें वश करें हम
गुरुजी का हमें तो संबंध मिल गया,
संतरूप में प्रभु स्वयं मिल गया......
साकार ब्रह्म का संबंध मिल गया,
धाम, धामी, मुक्तों का परिवार मिल गया,
धाम, धामी, मुक्तों का परिवार मिल गया - ३

रविवार, २५ मार्च २००७

उत्सव हमें राईट डायरेक्शन में
जाने का फोर्स दे गया...
- प.पू. गुरुजी -

प.पू. गुरुजी का ७०वाँ प्राकट्योत्सव..

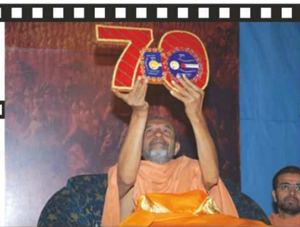

'धीस वॉझ ए मोमॅन्टस सॅलिब्रेशन !'

- पू.मल्कानी अंकल -

▲ प.पू. गुरुजी को रत्नजड़ित मुकुट पहना कर मानो – प.पू. काकाजी महाराज का यत्किंचित् ऋण चुकाने की कोशिश करते लुधियाना के हमारे पुराने जोगी परम भगवदिय कमलदेवजी और परिवार...

गुजराती में कहें तो–'मारा कुटुंबीओनो जाणे एक मेळावडो थई गयो !' – प.पू. गुरुजी ▼

प.पू. गुरुजी के अंतेवासी व लाड़ले सेवक 'पू. अभिषेक' को प्रसादी का रत्न जड़ित मुकुट पहनाते प.पू. साहेबजी व प.पू. दिनकरभाई

सही मायने में 'भुल्का'

आत्मीय स्त्रीशक्ति

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail : '**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine, Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—*Printer, Publisher, Editor :—***SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **Delux Offset Printers,** 308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

धाम, धामी और मुक्तों की सांकेतिक

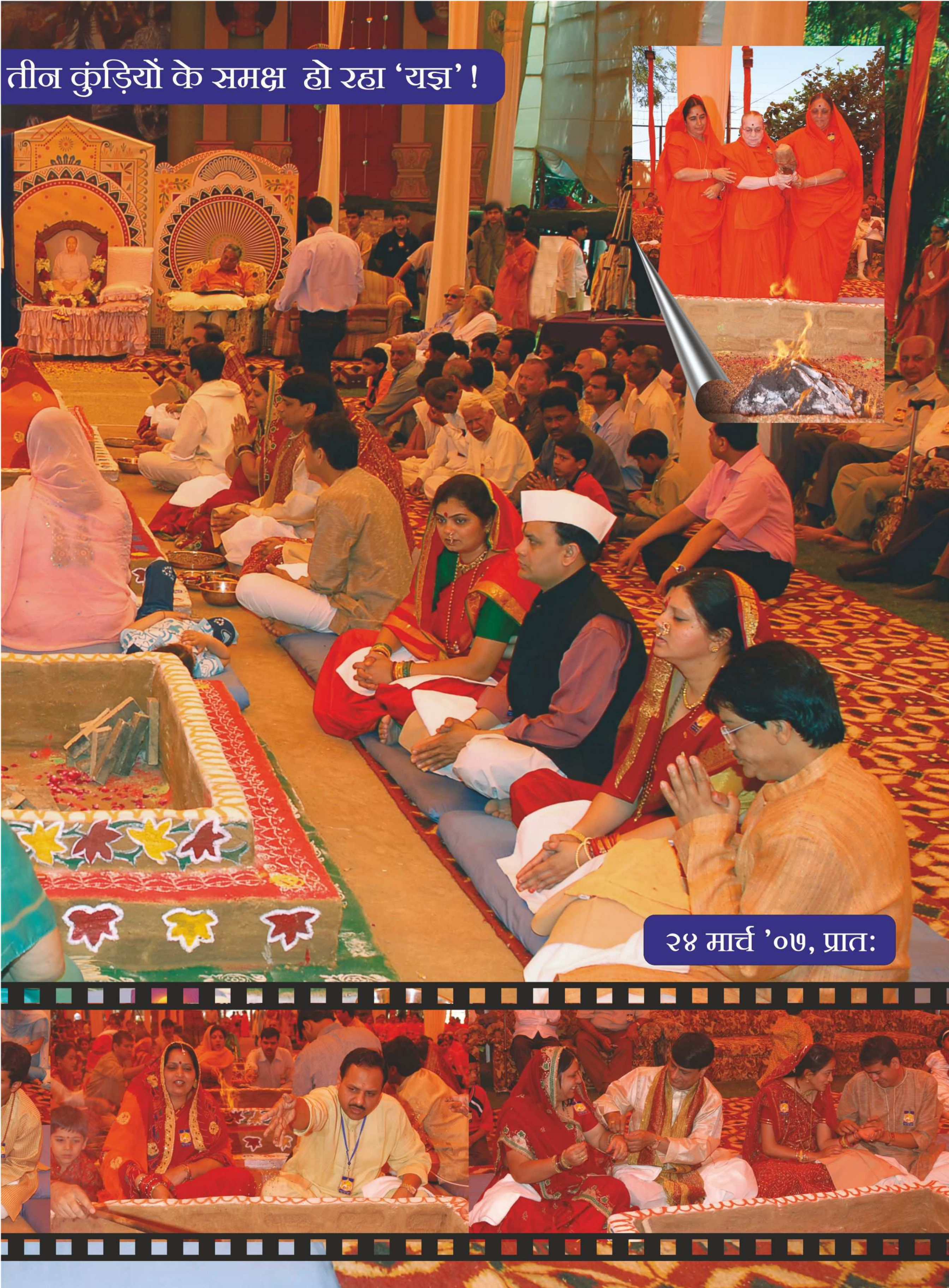
तीन कुंड़ियों के समक्ष हो रहा 'यज्ञ' !
२४ मार्च '०७, प्रात: